राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – फतहसिंह, एम ए , डी लिट्

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०२

वैताल-पचीसी

सम्पादक

पुरुषोत्तमलाल मेनारिया,

एम. ए , पी एच. डी , साहित्यरत्न

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-सस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

प्रथमावृत्ति १००० १९६८ ई०

मूल्य ३.५०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम ए, डी लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १०२

वैताल-पचीसी

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६८ ई०

वि० सं० २०२५ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९०

प्रधान-सम्पादकीय

वैताल-पचीसी से भारतीय समाज चिर-परिचित है। संस्कृत भाषा में तो यह सर्वत्र उपलब्ध है ही, परन्तु हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में भी यह ग्रन्थ प्रकाशित होता रहा है। प्रस्तुत ग्रन्थ संस्कृत वैतालपञ्चविंशतिका का राजस्थानी रूपान्तर है जो १८वी शताब्दी मे श्री देईदान नाइता ने प्रस्तुत किया था।

डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ने इस ग्रन्थ का सम्पादन सन् १९६५ में प्रारंभ किया था और इसका मुद्रण सन् १९६७ में प्रारम्भ हो गया था। ग्रंथ की भूमिका तैयार न होने के कारण इसका प्रकाशन अब तक रुका रहा। हर्ष का विषय है कि अब यह ग्रन्थ प्रकाशित होकर राजस्थानी भाषा के प्रेमियों को सुलभ हो सकेगा और इसके द्वारा राजस्थानी भाषा की अभिवृद्धि होगी।

विद्वान् सम्पादक ने जो परिश्रम किया है, उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं।

जन्माष्टमी, वि०सं० २०२५
जोधपुर

—फतहसिंह

विषयानुक्रम

प्रस्तावना

सस्कृत कथा-साहित्य :

सस्कृत-कथा साहित्य का प्रसार देश-विदेश में अधिक हुआ है। उदाहरण-स्वरूपेण पचतन्त्र का प्रथम पहलवी रूपान्तर लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व ५७० ई० पू० किया गया। यह रूपान्तर अब अप्राप्त है किन्तु इसके आधार पर रचित प्राचीन सीरियन और अरबी अनुवाद इसके प्रमाण-रूप मे उपलब्ध हैं। अब तक विश्व की समस्त प्रमुख भाषाओ में पचतन्त्र के रूपान्तर हो चुके हैं। इसी प्रकार कथासरित्सागर, हितोपदेश, शुकसप्तति, सिंहासनद्वात्रिंशिका, वेताल-पचविंशतिका आदि कथा-ग्रथो के अनुवाद भी अनेक भाषाओं में हुए हैं जिससे इनकी लोकप्रियता ज्ञात होती है। ईसप की कहानियो और 'अरबी अलिफ लैला' जैसी रचनाओ में भी उक्त भारतीय कथाओ का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

वेतालपचविंशतिका और कथासरित्सागर

वेतालपचविंशतिका का समावेश कथासरित्सागर के शशाङ्कवती-नामक बारहवें लम्बक[1] में हुआ है। वेतालपचविंशतिका की कथा कथासरित्सागर की मूल कथा से अनूठे रूप में सयुक्त की गई है। राजा मृगाकदत्त उज्जयिनी की ओर जा रहा था कि आकाश मार्ग में उसने अपने मत्री विक्रमकेशरी को एक वेताल के कन्धे पर उडते हुए देखा। विक्रमकेशरी राजा मृगाकदत्त को देखते ही अपने वाहनसहित जमीन पर उतर आया। राजा और मत्री दोनो मिल कर बहुत प्रसन्न हुए। तदुपरान्त मत्री ने वेताल को विदा करते हुए कहा "बुलाऊ तब पुन उपस्थित हो जाना।"

---

१ लम्बक का मूल सस्कृत शब्द "लाभ" प्रतीत होता है। शशाकवती लम्बक, मदिरावती लम्बक और पद्मावती लम्बक आदि से तात्पर्य है। क्रमश शशाकवती, मदिरावती और पद्मावती लाभ अर्थात् प्राप्ति विषयक कथाए। हेमचन्द्राचार्य ने 'काव्यानुशासन-टीका' मे और सुबन्धु ने 'वासवदत्ता' मे बृहत्कथा को लम्बकों में विभक्त बताया है। वादीभसिंहकृत 'गद्यचिन्तामणि' के अनुसार पत्नी प्राप्ति विषयक कथाओं को 'लम्ब' कहा गया है। सघदास-गणि तथा धर्मदास गणि ने अपने 'वसुदेवहिण्डी' नामक कथा-ग्रथ को भी १०० लम्बकों में विभक्त किया है। श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव ने अनेक वर्ष परिभ्रमण करते हुए १०० विवाह किये जिनका इस कथा ग्रथ मे निरूपण हुआ है।

फिर मन्त्री विक्रमकेशरी ने राजा को एकान्त में ले जाकर कहा "सर्प के शाप द्वारा आप लोगों से बिछुड़ कर मैं घूमता हुआ ब्रह्मस्थान-नामक ग्राम में एक बावड़ी के किनारे पहुंचा। वहां एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। उसी समय एक वृद्ध ब्राह्मण आया और बोला कि यहां एक विषैला सर्प रहता है, उसने मुझे काट खाया है। तुम यहां मत ठहरो, नहीं तो वह सांप तुम्हें भी काट खायेगा। हे राजन्! तब मैंने अपनी विद्या से उस ब्राह्मण के विष को दूर कर दिया। उस ब्राह्मण ने प्रसन्न होकर कहा "तुमने मेरे प्राण बचाये हैं। मैं तुम को वेतालसिद्धि का मन्त्र देता हूं।" मैंने कहा "मन्त्र लेकर क्या करूंगा? मैं तो अपने राजा से मिलना चाहता हूं।" तब ब्राह्मण बोला "वेतालसिद्धि होने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो सकती हैं। जैसे कि राजा विक्रमादित्य ने वेताल-सिद्धि से विद्याधरों का ऐश्वर्य प्राप्त किया था।" तब उस ब्राह्मण ने विक्रमादित्य-सम्बन्धी वेतालपंचविंशतिका कथा सुनाना प्रारम्भ किया।

वेतालपंचविंशतिका की कथाएं सुन कर विक्रमकेशरी राजा मृगांकदत्त से बोला "मैंने उस ब्राह्मण से मन्त्र सीख कर उज्जैन के श्मशान में वेताल को सिद्ध किया है और वेताल की सहायता से ही पुनः आपके दर्शन कर सका हूं।"

कथासरित्सागर भारतीय कथा-साहित्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसका आलेखन पण्डित सोमदेव ने काश्मीर के राजा अनन्तदेव की महारानी के लिए सन् १०६३ से १०८१ ई० के बीच किया था। पूरी कथा १८ लम्बकों और १२४ तरंगों में विभक्त है। कथासरित्सागर वास्तव में अनेक छोटी-बड़ी कथारूपी सरिताओं से परिपूर्ण सागर है। सागर के रूप में उपमित यह महाग्रन्थ पैशाची में गुणाढ्य रचित बृहत्कथा का सार-मात्र है, जिसकी सूचना कथासरित्सागर के प्रारम्भ में ही इस प्रकार उपलब्ध होती है :—

बृहत्कथायाः सारस्य संग्रहं रचयाम्यहम्।[1]

कथासरित्सागर के अन्त में बृहत्कथा को कथाओं-रूपी अमृत की खान सूचित करते हुए लिखा गया है—

नानाकथामृतमयस्य बृहत्कथायाः सारस्य सज्जनमनोम्बुधिपूर्णचन्द्रः।
सोमेन विप्रवरभूरिगुणाभिरामरामात्मजेन विहितः खलु संग्रहोऽयम् ॥१२
प्रविततरंगभंगि 'कथासरित्सागरो' विरचितोऽयम्।
सोमेनामलमतिना हृदयानन्दाय भवतु सताम् ॥१३॥[2]

१ कथापीठनाम प्रथमो लम्बकः, ३।
२ ग्रन्थकर्तुः प्रशस्तिः १२, १३।

वृहत्कथा की रचना गुणाढ्य ने आन्ध्र-सातवाहन राजाओं के युग में लगभग प्रथम शताब्दी में की थी। इस काल मे हमारे व्यापारी जल-थल मार्गों से दूर-दूर तक की यात्राए करते थे जिनका उल्लेख गुणाढ्य ने अपनी वृहत्कथा मे किया था। वृहत्कथा की उत्पत्ति-सम्बन्धी कथा भी कम रोचक नही है। शिवजी ने एकान्त में सात विद्याधर चक्रवर्तियों की कथा का वर्णन पार्वती को सुनाया, तब उनके अनुचर पुष्पदन्त ने सूक्ष्म रूप धारण कर उन कथाओ को सुन लिया। पुष्पदन्त ने इन कथाओ का वर्णन अपनी पत्नी जया के आगे किया। जया ने अपनी सहेलियो में इन कथाओ का प्रचार किया तो पार्वती को भी इसकी सूचना मिली। पार्वती ने कुपित होकर पुष्पदन्त को मृत्युलोक में जन्म लेने का शाप दिया। अनुचर माल्यवान ने अपने भाई पुष्पदन्त का पक्ष लिया तो उसको भी मृत्युलोक में जन्म लेने का शाप दिया गया। किन्तु पार्वती ने जया को शोकमग्न देखा तो कहा "पुष्पदन्त मृत्युलोक में विन्ध्यगिरि के काणभूति पिशाच को ये कथाए सुनायेगा और माल्यवान इनका मृत्युलोक में प्रचार करेगा तो दोनो की शाप से मुक्ति हो जायेगी तथा वे कलाश में फिर आवेंगे।" तदनुसार पुष्पदन्त कौशाम्बी में वररुचि-कात्यायन के रूप में और माल्यवान गुणाढ्य के रूप में उत्पन्न हुए। कात्यायन ने काणभूति को सातों कथाए सुना कर शाप से मुक्ति प्राप्त की। गुणाढ्य ने अपने दो शिष्य गुणदेव और नन्ददेव के साथ काणभूति नामक पिशाच से उक्त सातो कथाए पैशाची भाषा में सुनी। गुणाढ्य ने इन सातो कथाओ को चम-पत्रो पर रक्त स सात लाख श्लोकों में लिखा और राजा सातवाहन के पास भेजा। राजा ने पैशाची मे लिखित कथाओ का आदर नही किया जिससे गुणाढ्य को बहुत दुःख हुआ। गुणाढ्य ने दुःखी होकर इनमे से छः कथाओ को जला दिया। केवल सातवी कथा शिष्यो के अनुरोध से भस्म नहीं हो सकी। इस सातवी कथा की महानता राजा सातवाहन को ज्ञात हुई तो उसको छः कथाए नष्ट होने का बडा पश्चात्ताप हुआ। राजा ने इस सातवी कथा को गुणाढ्य के पास जाकर प्राप्त की और इसका प्रचार किया।

वृहत्कथा के विषय में नेपाल माहात्म्य अ० २७ २६ में एक अन्य कथा भी है। शिवजी एकान्त में पार्वती को कथाए सुनाने लगे। तब उनके एक भृंगी नामक गण ने भौंरे का रूप धारण कर कथाए सुनी और अपनी पत्नी विजया को सुनाई। विजया से इन कथाओं की सूचना पार्वती को प्राप्त हुई तो उन्होंने शिवजी से कहा। शिवजी ने ध्यान लगा कर ज्ञात किया कि यह अपराध भृंगी ने किया है। तब शिवजी ने भृंगी को मृत्युलोक में जन्म लेने का शाप दिया।

भृगी ने क्षमा याचना की तो शिव ने कहा "इन कथाओं को नौ लाख श्लोकों में लिखोगे तो शाप से मुक्ति मिलेगी।

भृगी ने गुणाढ्य के रूप में जन्म लिया। वह बाल्यकाल में ही अनाथ होकर उज्जैन पहुचा। उज्जैन का राजा मदन, रानी लीलावती और राजपण्डित शर्ववर्मन् था। एक समय जल विहार के समय राजा ने मोदक शब्द का अशुद्ध उच्चारण किया तो गुणाढ्य ने १२ वर्ष में तथा शर्ववर्मन् ने केवल २ वर्ष में राजा को व्याकरण-ज्ञान देना स्वीकार किया। दोनों मे स्पर्द्धा हुई तो शर्ववर्मन् ने 'कलाप व्याकरण' की रचना कर केवल दो वर्षों में राजा को सस्कृत व्याकरण का ज्ञान करा दिया। तब राजा ने गुणाढ्य को आदेश दिया कि वह कभी सस्कृत का व्यवहार न करे।

गुणाढ्य राज-दरबार छोड कर वन में चला गया, वहा पुलस्त्य ऋषि ने सभी कथाए पैशाची मे लिखने का सुझाव दिया। तदनुसार पेड के पत्तो पर वह बृहत्कथा को लिख कर उनका वाचन करने लगा। राजा ने इन कथाओं का माहात्म्य सुना तो स्वय जा कर गुणाढ्य से दो बार पढने का आग्रह किया। तब गुणाढ्य ने कहा 'मैं तो नेपाल जा कर शिवलिग की प्रतिष्ठा एव पूजा करूगा और आप इन नौ लाख पैशाची छदो का रूपान्तर सस्कृत में करावें।' तदनुसार बृहत्कथा का सस्कृत रूपान्तर प्रसिद्ध हुआ।

बृहत्कथा को ऐसा विशाल सरोवर कहा गया है जिसकी एक-एक बूद से अनेक कथाए बनी—

सत्य बृहत्कथाम्भोधेर्बिन्दुमादाय सस्कृता ।
तेनेतरकथा कन्था प्रतिभान्ति तदग्रत ॥
—धनपालकृत तिलकमञ्जरी (११ वीं० श०)

बृहत्कथा-ग्रन्थ कालान्तर मे लुप्त हो गया किन्तु इसके चार रूपान्तर प्राप्त हैं—

१ बुधस्वामीकृत बृहत्कथा-श्लोक सग्रह, नेपाली रूपान्तर, ५ वी० श०,

२ क सघदासगणि एव धर्मदासगणिकृत वसुदेवहिण्डी[1], जैन रूपान्तर

---

१ हिण्डी का अर्थ परिभ्रमण है। राजस्थानी भाषा मे यह इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है—

ढोलो हल्लाणो करे, धण हिण्डवा न देय।
टग टग झूमे पागड, डबडब नयण भरेह॥ (ढोला मारू रा दूहा)

३ क्षेमेन्द्रकृत बृहत्कथा-मजरी, काश्मीरी रूपान्तर,

४. सोमदेवरचित कथा सरित्सागर, काश्मीरी रूपान्तर।

वेतालपचविंशतिका का समावेश कथासरित्सागर (१२वें शशाकवती लम्बक, तरग ७५-९९) मे और क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामजरी में (९-२-१९-१२२१) है किन्तु गुणाढच की बृहत्कथा मे था अथवा नही यह विषय अब तक विचारणीय बना हुआ है। हर्टेल, लुकात और एजर्टन की सम्भावना है कि वेतालपचविंशतिका की कथाए बृहत्कथा में नही थी क्योकि वेतालपचविंशतिका की कथाए बृहत्कथा के प्राचीन रूपान्तर बुधस्वामीकृत बृहत्कथा श्लोक सग्रह मे नही हैं। प० बलदेव उपाध्याय के मतानुसार भी वेतालपचविंशतिका को बृहत्कथा का अश नही माना जा सकता और इसकी कथा स्वतत्र है।[1]

इस प्रकार वेतालपचविंशतिका का प्राचीनतम रूप वतमान में केवल क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामजरी (१०२९-६४ ई०) और सोमदेव के कथासरित्सागर (१०६३-८१ ई०) मे ही सुरक्षित है।

वेतालपचविंशतिका के सस्करण

डॉ० ए० बी० कीथ के मतानुसार वेतालपचविंशतिका के विभिन्न सस्करण इस प्रकार हैं—शिवदास का सस्करण गद्य-पद्य मिश्रित है। एक अज्ञातकर्तृक सस्करण केवल गद्य मे है और क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामजरी पर आधारित है। कालान्तर मे शिवदास के सस्करणो मे क्षेमेन्द्र के पद्य मिलते गये। इसका एक सस्करण जम्भलदत्तकृत है जिसमे पद्यात्मक नीति वचनो का अभाव है। एक सक्षिप्त सस्करण वल्लभदासकृत है और अनेक भारतीय भाषाओ तथा मगोल भाषा मे इसके रूपान्तर मिलते हैं।[2]

वेतालपचविंशतिका के एक अन्य सस्करण की सूचना थीओडोर आफ्रिट (Theodor Aufrecht) ने दी है और यह व्यकटभट्टकृत है।[3]

वेतालपचविंशतिका के प्रकाशित उल्लेखनीय सस्करण इस प्रकार हैं—

१ वेतालपचविंशतिका—जम्भलदत्त, सम्पा० एन० ए० गोरे।

---

१ सस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ० ४३९।

२ सस्कृत साहित्य का इतिहास, हिन्दी अनुवाद, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ० ३४१।

३ कैटलागस कटलोगोरम (Catalogus Catalogorum) भाग १, पृ० ६०४।

२ वेतालपचविंशतिका—सोमदेव, सम्पा० सी० एच० टाने (C H Tawney)

३ वेतालपचविंशतिका—हिन्दी टीका-१ सूरतकविकृत, २. शम्भुनाथ त्रिपाठी कृत।

४. वेतालपचविंशतिका—अंग्रेजी, केप्टीन डबल्यू० होल्लींग्ज (Captain W Hollings)[1]

५ वेतालपचविंशतिका, शिवदास, (Heinrich Uhle)[2]

साथ ही निम्नलिखित सस्करण भी उल्लेखनीय हैं—

१ विक्रम एण्ड दी वेम्पीरे (Vikrama and the Vampire) अंग्रेजी अनुवाद, के० सर० रिचार्ड, एफ० बुरटन, (Captain Sir Richard, F Burton), सम्पा० इसाबेल बुरटन (Isabel Burton), १८६३।

वेतालपचविंशतिका के रूपान्तर

सर्व श्री ए० बी० कीथ,[3] आफ्रेट,[4] वाचस्पति गैरोला[5] आदि के ग्रंथो से वेतालपचविंशतिका के अन्य किसी सस्करण अथवा रूपान्तर की जानकारी उपलब्ध नही होती। वास्तव में देश विदेश में इस रचना का व्यापक प्रचार रहा है और इसके अनेक रूपान्तर हुए हैं। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के ग्रन्थ भण्डार में उपलब्ध उल्लेखनीय रूपान्तर इस प्रकार हैं—

१ सस्कृत रूपान्तर, तपागच्छीय साधु-क्षेमकरकृत, ले० का० स० १६१६, ग्रन्थाक १६६८५।

२ व्रजभाषा रूपान्तर, ग्रन्थाङ्क ५३६८, १०६४६।

३ गुजराती रूपान्तर, ग्र० ६३४।

---

१ Encyclopaedia of Indological Publications Mehar Chand Lachhman Das, Delhi, p 155

२ वही, पृ० ३४४।

३ सस्कृत साहित्य का इतिहास, हिन्दी अनुवाद, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, १९६० ई०।

४ Catalogus Catalogorum, Franz Steiner Verlag Gmbh Wiesbaden, 1962

५ सस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, १९६०।

४ उर्दू रूपान्तर, लिपि देवनागरी, जयपुर के सवाई जयसिंह की आज्ञा से सूरतकवीश्वरकृत।

५ चौपाईबद्ध रूपान्तर, हरिवल्लभशिष्य हेमानन्द कृत,लि० का० १६००, वि० ग्रन्थाङ्क १६७०५।

६ कवित्तवद्ध रूपान्तर, ग्रन्थाङ्क ७७२२।

७ राजस्थानी रूपान्तर देईदान कृत, ले० का० स० १८५४, ग्रन्थाङ्क ३२४३।

इस रचना के कतिपय ग्रन्य रूपान्तर इस प्रकार हैं—

१ राजस्थानी रूपान्तर, श्रीग्रचलसिंहकृत।

२ गुरु गोविन्दसिंह के दरबारी कवि प्रह्लाद का लाहोर मे किया पद्यानुवाद, रचनाकाल स० १७६१ वि०, पत्र स० १२७, लिपि गुरुमुखी।[1]

३ गद्यानुवाद, अज्ञात लेखक का, पत्र स० ८१, सेण्ट्रल पब्लिक लाइब्रेरी, पटियाला, ह० लि० ग्रन्थाङ्क १६१६।

४ पद्यानुवाद मण्डी दरबार के किसी कवि का हिमाचल पुरातत्त्व-मन्दिर, मण्डी।

उक्त २, ३, ४ सख्यक रूपान्तरो की सूचना श्री देवेन्द्रसिंह विद्यार्थी, २५१०, सेक्टर १६ सी० चण्डीगढ के सोजन्य से दिनाक १ मई, १६६६ ई० के पत्र द्वारा प्राप्त हुई है तदर्थ सम्पादक ग्राभारी है।

राजस्थानी साहित्य मे रूपान्तर-परम्परा

हमारे देश मे प्राचीन काल से ही साहित्यिक रचनाओ के भाष्य, सूत्र, टीका, टिप्पणी, सार, अवचूर्णिका, टब्बा, रूपान्तर, बालावबोध, वार्तिक आदि लेखन की परम्परा रही है। इस परम्परा के मूल मे हमारी जिज्ञासावृत्ति ही प्रधान है। मानव द्वारा अपनी ज्ञान सीमा के विस्तार हेतु प्रकट की गई यह जिज्ञासा-वृत्ति वास्तव मे हमारी सस्कृति का एक प्रेरणा स्रोत रही है और मानव इसी जिज्ञासा-वृत्ति के कारण चौपाये की पशु-कोटि से उठ कर मानव-कोटि को प्राप्त कर सका है। इस सुविस्तृत ससार मे विभिन्न मानव-समूहो द्वारा समय-समय पर अनेक सभ्यताए, सस्कृतिया, और भाषाए विकसित होती रही हैं। मानव समूहों मे सामाजिकता के साथ ही परस्पर सम्पर्क-वृत्ति प्रवर्द्धित होती

---

१ सेण्ट्रल पब्लिक लायब्रेरी, पटियाला, ह० लि० ग्रन्थाङ्क २२१४।

गई और इसी सम्पर्क-वृत्ति ने मानव-समाज में जिज्ञासा वृत्ति को जन्म दिया। मानव अपने सीमित ज्ञान से कभी सन्तुष्ट नही हुआ और इसने पास-पडोस ही नही सुदूर द्वीप द्वीपान्तरो मे अवस्थित मानव समूहो के विषय में भी अधिकाधिक ज्ञान उनके भाषा साहित्य द्वारा प्राप्त करने का प्रयत्न किया। अनेक विद्वज्जनो ने देश विदेश मे प्रचलित विभिन्न प्रकार की भाषाओ मे रचित साहित्य का अध्ययन किया और अपने समाज का ज्ञान सवर्द्धन करने की दृष्टि से मातृभाषा में अन्य भाषाओ का साहित्य अनूदित करने की परम्परा चलाई।

राजस्थानी भाषा में रूपान्तर-परम्परा विक्रमीय १४वी शताब्दी में प्रारम्भ हो जाती है। राजस्थानी मे निम्नलिखित प्राचीन अनुवाद विशेष उल्लेखनीय हैं —

१ नवकार व्याख्यान, वि० स० १३५८।

२ सर्वतीर्थ नमस्कार, स० १३५९ और ३ अतिचार, स० १३६९।[1]

स० १४१३ मे लिखित टब्बा की प्रति अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर मे है। बालावबोध की प्राचीनतम प्रति स० १४११ मे लिखित तरुणप्रभसूरि रचित 'षडावश्यक बालावबोध' है। इस बालावबोध मे प्रासगिक कथाए भी दी गई हैं। जैनागम भगवतीसूत्र बालावबोध एक लाख श्लोक परिमाण में उपलब्ध होता है। १६वी श० से तो सैकडो रचनाए राजस्थानी मे अनूदित रूप मे उपलब्ध होने लगती हैं। राजस्थानी मे अनुवाद सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श, व्रज, बगला, गुजराती, फारसी, अरबी और अग्रेजी आदि कई भाषाओ सम्बन्धी रचनाओ के हुए हैं।

राजस्थानी अनुवाद-परम्परा के विकास मे अनेक विद्याप्रेमी वर्गो का विशेष योग रहा है। राजस्थान के अनेक भक्तो, सन्त सम्प्रदायों और पण्डितों ने तो स्वान्त सुखाय अथवा सम्बन्धित रचनाओं को जनता मे प्रचारित करने की दृष्टि से राजस्थानी में रूपान्तर किये ही किन्तु शासक वर्ग ने भी अपने और जनता के मनोरजन एव ज्ञानवर्द्धन हेतु विभिन्न रचनाओ के राजस्थानी रूपान्तर करने-कराने मे सक्रिय भाग लिया है। यही कारण है कि राजस्थानी मे मौलिक साहित्य के साथ ही अनूदित साहित्य भी पर्याप्त परिमाण मे उपलब्ध होता है।[2]

---

१ (क) प्राचीन गुजराती गद्य स दर्भ, स० मुनि जिनविजयजी।
(ख) श्री अगरच द नाहटा का लेख, परम्परा, जोधपुर का अक, नीति प्रकाश।

२ विशेष परिचय हेतु द्रष्टव्य—राजस्थानी भाषा मे अनुवाद की परम्परा, श्री अगरच द नाहटा, परम्परा, भाग ९-१०, नीति प्रकाश।

इसी परम्परा मे वेतालपचविंशतिका का प्रस्तुत रूपान्तर भी एक महत्वपूर्ण रचना है।

वेतालपचविंशतिका का प्रस्तुत रूपान्तर '

वेतालपचविंशतिका का प्रस्तुत रूपान्तर देईदानकृत और बीकानेर के महाराजकुमार अनूपसिंहकारित है। महाराजा अनूपसिंह बीकानेर के परम विद्यानुरागी शासक हो गये हैं। इनका जन्म चैत्र शुक्ला ६, वि० स० १६६५ (ता० ११ मार्च, १६३८), राज्याभिषेक वि० स० १७२६ (१६६६ ई०) और देहान्त चैत्र शुक्ला ७ वि० स० १७२८ (ता० ७ मार्च, १६७१ ई०) को हुआ था।[1] इनके विद्यानुरागी के विषय मे स्व० डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा का मत इस प्रकार है—

'वह जैसा वीर था, वैसा ही सस्कृत भाषा का विद्वान्, विद्वानो का सम्मान-कर्त्ता एव उनका आश्रयदाता था। उसने स्वय भिन्न-भिन्न विषयो पर सस्कृत मे कई ग्रथ निर्माण किए थे, जिनमे अनूपविवेक (तन्त्रशास्त्र), कामप्रबोध (कामशास्त्र), श्राद्धप्रयोग, चिन्तामणि और गीतगोविन्द की अनूपोदय नाम की टीका का निश्चय रूप से पता चलता है। उस अनूपसिंह को राजस्थानी भाषा से भी बडी प्रीति थी, जिससे उसने अपने पिता के राजत्वकाल मे ही शुकसारिका (सुआ बहोतरी) की बहत्तर कथाओ का भाषानुवाद किसी विद्वान् से कराया। खेद का विषय है कि उक्त विद्वान् ने उस पुस्तक मे कही अपना नाम नही दिया[2]। उसके कुवरपने में ही उसकी प्रशसा के कारण गाडण वीरभाण ठाकुरसीहोत ने 'वेलियो' गीतो में 'राजकुमार अनोपसिंहजी री वेल' की रचना की। फिर उसके राज्य समय में वेतालपच्चीसी की कथाओ का कविता मिश्रित मारवाडी गद्य में अनुवाद हुआ तथा जोशीराम ने शुकसारिका की कथाओ का सस्कृत तथा मारवाडी कविता-मिश्रित मारवाडी गद्य में दम्पति-विनोद नाम से अनुवाद किया।[3]

डॉ० ओझा ने अनूपसिंहकृत और कारित विभिन्न विषयो के ग्रन्थो की सूची दी है जिससे इनके विद्या-प्रेम का प्रमाण मिलता है।[4]

---

१ डॉ० गौरीशकर हीराचद ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग १, पृष्ठ २५३ २८०।

२ शुकसारिका के अनुवादक देईदान हैं (अगरचद नाहटा, नीतिप्रकाश, राजस्थानी-शोध सस्थान, चौपासनी, पृष्ठ १७६)।

३ बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग १, पृष्ठ २८०-२८३।

४ वही।

बीकानेरस्थित हस्तलिखित ग्रंथों का प्रसिद्ध भण्डार 'अनूप संस्कृत पुस्तकालय अनूपसिंह द्वारा ही स्थापित किया गया था। औरंगजेब के भय से हिन्दू अपने हस्तलिखित ग्रन्थ नदियों में बहा देते थे। क्योंकि मुसलमान सैनिक हिन्दू मन्दिरों को तोड़ते, उनकी मूर्तियों को नष्ट करते थे। साथ ही प्राचीन ग्रन्थों को भी नष्ट-भ्रष्ट करते और जला देते थे। ऐसी परिस्थिति में महाराजा अनूपसिंह औरंगजेब की सैनिक चढ़ाईयों में रहते हुए भी प्रचुर धन व्यय करते हुए प्राचीन ग्रन्थों को खरीद कर और मूर्तियों की रक्षा कर उन्हें बीकानेर के दुर्ग में पहुचाते थे। अनूप संस्कृत पुस्तकालय में महाराजा ने संस्कृत के साथ ही सैकड़ों राजस्थानी ग्रन्थों को भी सुरक्षित करवाया।

डॉ० ओझा ने वेतालपंचविंशतिका भाषा के विषय में लिखा है—"उसके राज्य समय में वेतालपच्चीसी की कथाओं का कविता-मिश्रित मारवाड़ी गद्य में अनुवाद हुआ।"[1] वास्तव में वेताल पच्चीसी की भाषा टीका का कार्य अनूपसिंह के पिता महाराजा कर्णसिंह के राज्यकाल में हुआ। अनूपसिंहजी तब युवराज थे और उन्होंने देईदान को सम्मुख बुलाकर इस कार्य के लिये आदेश दिया। जैसा कि भाषा टीका के प्रारम्भ म ही लिखा गया है —

राज करइ राठोड़, करनै सुरसुत करन सों।
महि पत्रीयां सिरमोड़, चत्रवटि घूमाणा धरो ॥४॥
तस सुत कवर अनूपसिंघ पराक्रम सिंघ सो।
सेवक भल गुण भूप, आगई तडि आदेस दीयो ॥५॥
संस्कृत थी सवभाइ, कथा विक्रम वेताल री।
भाषा कहि समझाइ, तू देईदान नाइता ॥६॥[2]

देईदान ने अनूपसिंह की आज्ञा से सिंहासन-द्वात्रिंशिका का अनुवाद भी किया था, जैसा कि इस पद्य से प्रतीत होता है।

वताल री पचवीस, समलाये सरसी कथा।
सिंहासण बत्तीस, लगती लोभइ नाम रइ ॥७॥[3]

रूपान्तर मे शब्द-प्रयोग '

प्रस्तुत रूपान्तर की राजस्थानी भाषा मे संस्कृत तत्सम-तद्भव और देश्य शब्दों के साथ ही चालू अरबी-फारसी के शब्दों का सर्वथा स्वाभाविक प्रयोग

---

१ बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग १

२ वेताल पचीसी पृ० १, प्रतिष्ठान की प्रति में 'नाइता के स्थान पर 'दाइता' पाठ है।

३ वेताल पचीसी, पृ० २

हुआ है। रूपान्तरकर्ता देईदान भाषा का कुशल अधिकारी लेखक तथा पारखी ज्ञात होता है। उसने शब्द रूप, विभक्ति तथा क्रियादि मे भाषा के स्वरूप, की रक्षा करते हुए उसको सरल, सरस, आदर्श एव आकर्षक रूप देने का प्रयत्न किया है। इस विषय मे कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं—

क सस्कृत तत्सम शब्द—

प्रस्थानपुर (पृ २). प्रतापमुकुट (पृ ६), समस्या (पृ ११) प्रीति (पृ ११), सर्वमगला (पृ ३१), आयुबल (पृ ३२), सयोग (पृ ४६), सिद्ध-गुटिका (पृ ६५), और प्रभात (पृ १०७) आदि।

ख सस्कृत तद्भव शब्द—

जोगी (स योगी, पृ ३), पापणी (स पापिनी, पृ ६), विक्रमादित (स विक्रमादित्य, पृ १५), तठे (स तत्र, पृ २३), एता (स एतद्, पृ २५) परधान (स प्रधान, पृ २६), उजेणी (स उज्जयनी, पृ ३५), मारग (स मार्ग, पृ ३७), आदि।

ग देश्य शब्द—

वले (पुन, पृ १), सभलाइ (सुनाओ, पृ १), वासइ (पीछे से, पृ ७), उभो (खडो, पृ ६), तेडइ (बुलाते, पृ १३), दीकरो (पुत्र, पृ १७), हिवइ (अब, पृ २०), वीदणी (दुल्हिन पृ २०), दिहनगी (दानगी, दैनिक मजदूरी वेतन, पृ ३१), छानोई ज (चुपचाप हो, पृ ३३), मुकलावो (गौना, पृ ३६), पडो (चलाओ, पृ ४५), और पोसू (छौनू, पृ ४६), आदि।

घ अरबी-फारसी आदि शब्द—

निजर (नजर, पृ ६), पवर (खबर, पृ ८), दिलगीर (पृ १०), तकीयै (पृ १४), तसलीम (पृ २४, २६), असवाब (पृ २४), बकसीयो (बख्शीश किया, पृ २७), तमासो (तमाशा, पृ २७), गुनह (पृ २७), तोफान (पृ २८), मुजरो (पृ २६), और पिजमत (खिदमत, पृ २६), आदि। रूपान्तर मे प्रयुक्त 'रहिसी' रहीस, आवसी' (पृ ११), नीसरीस (पृ १५), भोगवीसि (पृ २६), जैसे क्रिया रूपो से स्पष्ट होता है कि भाषा पर राजस्थानी की उत्तरी बोली का प्रभाव पडा है। रूपान्तरकर्ता बीकानेरवासी था अतएव यह स्वाभाविक ही है। दोठउ, दीयइ, थारइ, किसउ, छइ (पृ ३), और रइ, तीरइ, वइठो, पछइ (पृ ४) में 'उ' और 'इ' के प्रयोग भाषा पर प्राचीन शैली का प्रभाव बताते है। 'छै' (पृ ३०, ७३, ६६) प्रयोग भी 'छइ' के स्थान पर मिलते हैं।

कही कही खड़ी बोली हिन्दी का प्रभाव भी लक्षित होता है। यथा—"मेरा गुरु जाणे।" (पृ १३)

प्रतिलिपिकार अपनी ओर से भी क्षेपक जोड़ते रहते हैं। उदाहरणस्वरूप ख प्रति में प्रतिलिपिकर्ता ने "शाहजादा कुतुबदीन री कथा की ओर प्रसङ्गानुसार सङ्केत किया है—

"तिण दुख करि शाहजादा कुतुबदीन री अवस्था हुई। कुतुबदीन रे तो ढाढीणी री साहस करि सावधान हुई। ईया रे इसो कोई नही जिण करी बचाव होवै।" (कथा–२०वीं, पृ ६७)।

प्रस्तुत सम्पादन प्रकाशन

इस रचना की एक प्रति ग्यारह वर्ष पूर्व जयपुर मे मुझे थोड़े समय के लिये उपलब्ध हुई तो इसका महत्त्व और उपयोग समझते हुए इसकी प्रतिलिपि करवा ली (प्रति ग)। तदुपरान्त जोधपुर मे इस रचना की अन्य प्रति वि स १८२२ ज्येष्ठ शुक्ला १० की अमरकोट मे लिखित प्रतिष्ठान के सग्रह मे प्राप्त की गई। प्रति (ख)। इसकी तीसरी प्रति वि स १७७३ मे कार्तिक कृष्णा ६ शुक्रवार की लिखित मेरे सम्मान्य मित्र डॉ नारायणसिंहजी भाटी, निदेशक, राजस्थानी शोध-सस्थान, चोपासनी, जोधपुर के सौजन्य से प्राप्त हुई (प्रति क) तो इसका पाठ सम्पादन कार्य प्रारभ किया गया। यह काय पूरा होने पर प्रतिष्ठान के तत्कालीन स० सचालक श्रद्धेय मुनि जिनविजयजी और उपनिदेशक श्री गोपालनारायणजी बहुरा ने सहर्ष इसके प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान की और राज्याज्ञा से इस विषय में मनोनीत विद्वत्समिति द्वारा भी सपुष्टि हो गई तो इसका मुद्रण कार्य दस माह पूर्व प्रारभ हुआ। अब यह कार्य पूर्ण हो कर सुधी पाठकों के हाथो में पहुँच रहा है। जिन महानुभावो से इस महत्त्वपूर्ण कार्य में कृपापूर्ण प्रोत्साहन और सहयोग प्राप्त हुआ है तथा जिन का नामोल्लेख यथा प्रसङ्ग कर दिया गया है, उनके प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करता हू। इति।

—पुरुषोत्तमलाल मेनारिया

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर,
पौष कृष्णा ११, स २०२४ वि

॥ श्री ॥

देईदान कृत

वैताल - पचीसी

[1]॥ द० ॥ श्री गणेशाय नम ॥[1]

[सोरठिया दूहा]

प्रणमु सरसती[2] पाय, वले विनाइक वीनवु।
वुद्धि दे सिद्धि दिवाय[3], सनमुषि थाइ सरस्वती ॥१

[4]आरभी[भि]यो परमाण, चाढे चक्रि चामुड रा।
क्षेत्राधीस पलाण, भैरव भाजे विघन भय ॥२[4]

देश मरुस्थल देषि, नव कोटी मइ[5] कोट नव।
(पिण) वीकानेर विशेष, मन निश्चय कर जाणी[णि]यइ[6] ॥३

(तहा) राज करइ राठोड, करन सुरसुत करन सौं[7]।
महि पत्री[त्रि]या सिरमौड, पत्रवटि पूमाणा परो[8] ॥४

तस सुत कवर[9] अनूप[10], सिघ पराक्रम सिघ[11] सौ।
भेदक भल गुण भूप, आगई[12] तेडि आदेस दीयो[दिय] ॥५[13]

सस्कृत थी सदभाइ[14], कथा विक्रम[15] वैताल री।
भाषा कहि सभलाइ, तू[16] देईदान[17] नाइता ॥६[18]

पाठान्तर—

१ ख ॥ अथ वैतालपचीसी लिप्यते ॥ दूहा ॥ सोरठा ॥ ग श्री गणेशाय नम ॥ ॥ श्री गुरुभ्यो नम ॥ अथ वैतालपचीसी कथा लिख्यते ॥ दूहा ॥ सोरठा ॥ २ ख सरस्वति। ३ ख देवाइ, ग दिवराय। ४ ग मे अप्राप्त। ५ ख मे, ग मैं। ६ ख जांणियो, ग जांणज्यो। ७ ग रो। ८ ख परो, ग खरो। ९ ख कुवर, ग कुअर। १० ख अनुप। ११ ग सीह। १२ ख आगे, ग आगैं। १३ ग दीय। १४ ग दरसाय। १५ ग विक्रम कथा। १६ ग तु। १७ ग दान दइद्र। १८ ख दाइता, ग. नायता।

[1]बंताल री पचवीस[1], सभलाये[2] सरसी कथा ।
सिंहासण[3] बत्तीस, [4]लगती लोभइ नांम[4] रइ[5] ॥७

[6]अथ कथा प्रबन्ध[6] [वार्त्ता]

दक्षण देस रइ[7] विषइ प्रस्थानपुर नगर । तेथ[8] विक्रमादीत[9] उजेणी रो[10] राजा[11] मुष्य प्रधान मुहता[12] तीया सहित सभा माहि बइठउ[13] । तिको[14] राजा किसडो छइ ।

दूहा

रूप सरस कंदर्प्प सौं, उवधि जिसौ गभीर ।
जन नू वल्लभ मेह सो, ससि[15] सो अमल सरीर ॥१

विधि २ री सूधो पहिर, रतनाभूषित देह ।
सुभटां सिर तप सूर सो, परजा [16]सिरि सुनेह ॥२[16]

वात[17]

तिण राजा नु[18] सभा माहि बइठा[19] एक जोगी [20]आंबा रो[20] फल[21] भेट दे मुजरो करि उभो रहीयो ।[21] ईण भांति नित्य आंब फल देई । मुजरो करइ । [22]मुख सेती[22] किउ न कहइ । आंबा राजा रा हुकम विना कोई छेड सकै नही । कोठारी नु सुपीजै । कोठारी कोठारि धरइ ।

पाठान्तर—

१ ख. बईताल पचीसी, ग बैताल पचीस । २ ख सभलाए, ग साभलीये । ३ ख सघासण, ग सिंघासण । ४ ग बैताल पचीसी इम । ५ ख रे, ग कहु । ६ ख कथा प्रबंध प्रथम कथ्यते । ७ ख ग रै । ८ ख तठै, ग तठ । ९ ख ग विक्रमादित्य । १० ख नो । ११ ग धणी राज्य करै छै । एक दिन । १२ ख सब प्रधान, ग प्रधान मत्री । १३ ख बेठा ग बैठो छै । १४ ख सु, ग सो । १५ ग शशि । १६ ख सिर ससनेह, ग सु सनेह । १७ ख में अप्राप्त ग वार्ता । १८ ख नां ग रै । १९ ख बैठा, ग बठा आगे भी ऐसा ही पाठ है । २० ख आंबे रो, ग आंबो । २१ लेइ नें राजा री भेट कीधो । २२ मुहडा सु ।

एक दिन जोगी आइ भेट धरि उभो[1] छइ[2] इतरइ वानरो[3] आवा नू ले नइ पाण लागउ। तिण माहै एक रत्न नीसरीयो[4]। सो राजा दीठउ[5]। 'सिगले लोके दीठउ[6]। ति वारइ जोगी नू पूछीयो। अहो जोगी तू इसडो रत्न[7] फल माहि घाति[8] [9]भेट दीयइ[9] सु थारइ[10] किसउ[11] कार्य छइ।

तरइ जोगी[12] कह्यौ—

दूहो

रीतै[13] हाथै न भेटीयइ[14], गुरु देवता राजांन[15]।
अर फुनि जासू[16] काम हुवै[17], शो विशेष वखाणि॥

वार्त्ता

तरइ[18] जोगी कह्यौ। मइ महाराज नु इसा ही अबा भेट दीया छै।

तरै राजा कोठारी नू तेडि[19] कह्यौ। आवा[20] सगला ही ले आव। तरै आवा आण भाजीया। महा थी[21] रत्न[22] नीसरीया। तब राजा पुस्याल हुइ जोगी नु आगै तेडि पूछीयो। थारै किसी चाहि छइ।

तरै जोगी कहै।

दूहा [दूहो]

सिद्ध मत्र उपध[23] धरम, गेह-छिद्र विभचार।
कुआचार भोजन कुकृत, न कहै पडित सार॥

पाठान्तर—

१ ख उभो, ग ऊबो। २ ख ग छै, आगे भी ऐसा पाठ है। ३ ग वांनर। ४ ख नीसरयो ग नीकल्यो। ५ ख दीठो, ग दीठो, आगे भी ऐसा ही पाठ है। ६ ख बीजाई सिगला दीठो, ग अनै बीजा पिण समस्त सभा रै लोका दिठो। ७ ग अमूलिक रतन। ८ ख घाते, ग घाल न। ९ ख भेट दीयो, ग भेटणा किनो। १० ख थांहरो ग थारै। ११ ख किसो, ग काई। १२ ग जोगीशर। १३ ख ठाले, ग रीते। १४ ख भेटीयै, ग भटीये। १५ ग राजानै। १६ ख जासो, ग जासु। १७ ग हूय। १८ ख तिवरिक, ग वले। १९ ख तेडी, ग तेडनै। २० ख जोगी री भेट रा आवा, ग जोगी रा आंबा। २१ ख मांहि सु, ग तिण मांहि। २२ ख ग रतन। २३ ग औपद।

वार्त्ता

[1]तरइ कहै । महाराज म्हारै एक काम छै[1] । [2]सु एकात कहिस्यु[2] ।

दूहा[3] [दूहो]

फुटइ[4] छह[5] कानै[6] तुरत, चिहु कानै थिर[7] होइ ।
तीयइ* कारण मत्र महि, कीजइ कानै दोय ॥१

वार्त्ता

एतो[8] सुणि राजा एकात हुवो । तरै जोगी कहइ छइ । महाराज गोदावरी नदी रै तीरै वडो स्मसाण[9] छै । तैथ कालो १४ म्हारै[10] साधना[11] छै । [12]तीयइ म्हारइ अनै थाहरै[12] [13]अप्ट महासिद्ध[13] होसी । तीयइ कारण थे म्हारइ उत्तर साधक हुवो । थै ३२ लप्यणा छउ । तिण वास्तइ कहु छु ।

[14]तरइ राजा बोलीयो[14] । तू जा । बीजी सामग्री तयार कर । हू आवू छु । म्हारो बोल छै ।

इसडो राजा रो वचन सुणि[15] पूजारी सर्व सामग्री ले गयो । गोदावरी नदी रइ तीरइ महा स्मसान[16] माहि जाइ बइठो । पछइ हाथ पड[ग][17] लेई एकलो राजा जाइ प्राप्ति हूवो ।

पाठान्तर—

१ ख तो पिण म्हाराज म्हारे काज्य छै । ग महाराज इतरी वात चोडे न कहणी । २ ख एकात समय कहिस्यु इण कारणें । ग तिणसु एकत बात कहिसु । ३ ख दू०, ग दोहा । ४ ख फुटै, ग फूटै । ५ ग बहु । ६ ख काना, ग कानें । ७ ख ग थिर । ८ ख एतरो, ग इतरी । ९ ख, ग मसाण । १० ख ग माहर मत्र । ११ ख साधणो, ग सोभणो । १२ ख तिण मत्र करि म्हारै अरु थाहरे, ग तिण थी थाहर माहरै । १३ ख अष्ट सिद्ध, ग अष्ट सिद्ध नव निध । १४ ख तब राजा बोलीयो, ग इसो वचन सुण विक्रमादित्य बोलीयो । १५ ख सामग्री, ग सामल नै । १६ ख समसान, ग समसांण । १७ ख पड्ग ग छुरी ।

---

* पत्र स० १ का ख भाग पूर्ण, क भाग रिक्त है ।

ताहरा[1] राजा नू[2] देपि जोगी पुष्याल[3] हुइ कह्यो। अहो[4] राजा अठा थी कोस दोइ वडो मसाण छइ। तठै सीसम वृक्ष उपरि एक मडो छै [5]सु अठै आणि दे[5]।

इसडा[6] वचन सुणि[7] राजा मसाण माहि जाइ सीसम रा वृक्ष तलै ऊभै रहि दीठो। [8]भूत प्रेत यष्य राक्षस बोलिता पणि[8] निर्भय होई[9] छुरो हाथ ले ऊपरि चढीयो। तेथ[10] मृतक[11] रा बधन काटि नीचउ नापीयउ[12]। पछइ आप ऊतरीयो। [13]देषइ तो[13]।

दूहा[14]

मडो त कालो भूत सो, नील वरण[15] विकराल।
[16]उद्ध केस[16] डरावणो, विलब्यो सीसम[17] डाल ॥[१]

वार्त्ता

तरइ राजा [18]अचरिज जाणि[18] वले[19] वृक्ष चढि मडो [20]काधइ ले[20] ऊतरि नदी रो मारग लीयउ। [21]तठइ वइताल मडै माहि प्रवेश करि बोलीयो[21]। साभलि हो राजा।

दूहा[22]

पडित काव्य विनोद करि[23], काल गमावइ[24] जाण।
विसन नींद झगडा कलह, करि २ गमइ[25] अजाण ॥१

पाठांतर—

१ ग तरे, आगे भी ऐसा ही पाठ ह। २ ग नै। ३ ग खुसी। ४ ख अहो, ग हे। ५ ख तिको अठै आण दे ग सो आणी आपो। ६ ख इसो, ग इसा। ७ ख सूणी ग साभल। ८ ख यक्ष रापस भत प्रेत बोलता पिण। ९ ख थको। १० ख तठै, ग पछै। ११ ग मडा। १२ ख नांष्यो, ग नाखीयो, आगे भी ऐसा पाठ है। १३ ग उतर नै देख तो मडो पाछो शीशम रे डाल जा विलगो। १ ख दू०, ग राजा वाक्य। दूहा। १५ ख चरण। १६ ग उरध मुखं। १७ ग शीशम। १८ ख अचिरज सो जाण्यो, ग अचरिज पामजो हूवो। १९ ख वउड, ग पछै। २० ख काधे लै, ग काधै कर। २१ ख तब मडो राजा सु वात करै, ग तरै मारग मे आगीयो वेताल मडा मैं परवेस कर नै बोल्यो। २२ ख दू०। २३ ग कर। २४ ख गमावे ग गुमावै। २५ ख गमे, ग गमै।

वार्त्ता

तिण कारण राजा तू सांभले। हू कथा कहु छु। वणारसी[1] नाम नगर छइ। तठइ प्रतापमुकुट नाम राजा। तिणरइ मुकुटसेषर[2] नाम पुत्र। तिको प्रधान रा बेटा नू[3] साथ ले न [4]महावन रइ[4] विषइ आहेडइ गयो। तठइ त्रिवेणी-सगम तीर्थ छइ। तेथि महादेव श्रीविश्वनाथरी महिमा देपि [5]दर्शन री ताइ भाव हूवो[5]। तरै घोडा थी ऊतरि हाथ पग धोइ स्नान करि देहरा माहि जाइ दरसण कीयउ। [6]पछइ आगइ बइस नइ[6] स्तुति करइ छै।

दूहा

धवल छत्र घोडा सरस, हस्ती मयमत्त देहि।
विभव रग रत्ती[7] त्रिया, सकर प्रसन्न थयेह ॥१
स्त्री-हत्या चोरी कनक, मित्र-द्रोह गो-मार।
बालविनासी [8]अर चुगल[8], सुरापान परदार ॥२
एते पातक [9]होइ तो[9], कीया अरु करुणाह।
प्रणव एक विश्वनाथ कइ, कीयै छूटै को नाह ॥३

वार्त्ता

तोयै विश्वनाथ रो दर्शन कर बेठो। इतरइ[10] एक नाइका[11] वहिल हू ऊतरि स्नान करि पूजा करि वाली। [12]तितरइ एक वरे दीठी। कवर नु कवरीयइ दीठो।[12] माहो माहि निजर मिली। काम रा बाण लागा। उन्मादन, सोषण, सदीपन, [13]मोहन, तापन[13] ए पाच

पाठांतर—

१ ख वाणारसी, ग वाराणसी। २ ख मुकुटसिषर, ग मुकटसेपर। ३ ख नु, ग नै। ४ महा अटवी वन रै। ५ ग दरसन री मनछा हुई, ग इणारी पिण दरशण करवारी इछा हुई। ६ ख अरु, ग अनै ऊभा। ७ ख राती, ग रति। ८ ख अरु चूगल, ग चुगलता। ९ ख होइ जो, ग होयजो। १० ख तिण समै, ग इतरै सो। ११ ख नायिका, ग नायका। १२ ख मुगटसिषर नाइका दीठी। नाईका मुकटसिषर नु दीठो। ग तेहै नै कुमरै दीठी अनै तिणे पिण कुमर नु दीठो। १३ ग आकर्षण ४ वशीकरण ५।

वाण काम रा [1]नाइका रा हीया माहि चुभीया[1]। तरै कुल री मर्यादा छोडि लाज दूर करि शील कनारइ धरि समस्या करि संकेत*-स्थान कह्या।

एक कमल हाथ माहे लीयो हतो [2]सो माथइ लगाइ[2] पछै काने लगायो। काना थी दाते लगायो। दाता थी पगे लगायो। पगा थी [3]हीयइ धरि[3] चालती हुई।

वासइ राजपुत्र विरह करि पीडित हुईउ। तरइ प्रधान[पुत्र] राजपुत्र नु कह्यो। [4]तै कुवरी दीठी[4]। कुवरै कह्यो दीठी। [5]पिण थासू[5] किसी समस्या कर गई। तरइ राज-पुत्र कहइ छइ। कमल १ हाथ माहे हुतो सु माथइ लगायो। पछइ काने पछइ दाते पगे लगायो। तरइ प्रधानपुत्र कह्यो। [6]हु समधउ[6]।

दूहा

कहीयो तो पशु पिण लपइ[7], [8]हाथी घोड तथेव[8]।
श्रणकहीयै पंडित घटइ[8] बुद्धि तणउ फल हेव ॥१
चेष्टा गति श्रकार[9] तै, बोलत होठ फुकार।
भौंह नैन री सैन तइ, जांणइ चतुर विचार ॥२

वार्त्ता

इसो कहि नइ प्रधानपुत्र बोलीयो। पहिलो कमल माथै लगायो सु[10] तोनु[11] प्रणाम कीयो[12]। पछइ काने लगायो सु कर्णकुज नगर

पाठांतर—

१ ख नाईका रा रिदा कमल माहि चूम्या, ग तै कुमर नै लागा। २ ख. माथै लगाइ, ग प्रथम माथे लगायो। ३ ख हाथै धरि, ग पछै हीयै लगाय नै। ४ ख ते दीठी, ग त उण नै दीठी। ५ ख पणि थांना, ग उण थानु। ६ ख मे जाण्यो, ग मै जाणी। ७ ख लपॅ, ग लखं। ८ ख हस्ती अस्व तथैव, ग घोड़ा तथैव पिण। ९ ख कहै, ग लख। ६ ख ग आकार। १० ग सो। ११ ख तोंनु, ग तुम नै। १२ ख कीयो, ग कर्‌यो।

---

* पत्र सं० २ का क भाग पूर्ण।

कहीयो । पछइ दातै लगायो सु दतसेन[1] राजा री कन्या छु । पछइ पंगे लगायो मु पद्मावती नाम छइ[2] । पछइ हीयइ मांहि थापीयो[3] सु तोनु वर गई छइ ।

इतरी वात सुणी[4] ताहरा मुकटशेषर बोलीयो । मन्त्रीपुत्र[5] । हु परणीस नही तउ जीवू नही । इम कहि नइ तुरत[6] बेउ घोडे चढि[6] [7]वहिल रो वासो कीयो[7] । तरइ वहिल नगर मइ आई । कुमर मुहतउ एकइ मालणि रइ घरे ऊतरीया । मालण नु पूछीयो । अठइ पद्मावती नाम राजकन्या छै ।

तरइ मालण कह्यौ । [8]हु पद्मावती री मालण[8] छु । फुलहार चपो ले जाउ छु । राते कन्हइ रहु छु ।

तरइ मुहतइ विचारीयउ । इणइ काम लाइक आ छइ ।

दूहा

मालणि विणजारी नटी, नाइण दासी धाइ ।
धोबणि और पारोसनो, [9]सू जनि मोसी काइ[9] ॥१
ए दूती इहि कांम कु, लाइक राजकुमार ।
काज तुहारो सरहिगो, जो करि है करतार ॥२

प्रधानपुत्र कह्यौ । हे मालणि आज तू पद्मावती पासि जाइ[10] तरइ मालूम करे । [11]राजि श्री महादेव विश्वनाथ रे देहरइ दीठ. हूतो[11] कुमर[12] सो अठे आयो छै । इतरो कहि महुर १ मालणि नू दीनी ।

पाठांतर—

१ ख ग दतवक्र । २. ख जांणिजै, ग जांणीजै छै । ३ १० ख लगायो, ग लागायो । ४ ख सुणि, ग सांभल । ५ ग हो मित्र । ६ ख दोनु असवारि हुई, ग दोनु ही असवार हुय नै । ७ ख वठै गया, ग मारग मैं चल्या जा[य]छै कितरैक दिने उण नगर गया । ८ ख हू पदमावती रे नित्य जाउ, ग तिण पासै हु जावु छु । ९ ख सू जन मासी काइ, ग सुणज्यो इसी न काय । १० ख जाए, ग जायै । ११ ख जिठ श्री माहादेवजी विश्वनाथ र देहरै दीठो हुतो, ग श्री विश्वनाथ महादेव रे दीठो हुतो । १२ ख कुंवर मुक्टसिघर, पुरुष ।

'मालणि पुस्याल हुई'[1]। पद्मावती पासि जाइ तरइ मालूम करे। राजि श्री महादेव विश्वनाथ रै देहरइ दीठौ हुतो कुमर सो अठे आयो छै। पद्मावती पासि जाइ कहीयो।

ताहरा पद्मावती 'चदनइ नू हाथे लगाइ'[2] मालण रा गाला ऊपर चपेटा मारीया अर कहीयो रीसाइ गाली दे। पापणी[3] थारै घरि जा।

ताहरै वुरो मुहडो करि मालण आई। राजपुत्र आगइ उभी रही कहीयो। थारै वासतै मोनु रीसाणी अर गाला ऊपरि चपेटा मारीया।

'मुकटशेषर देष दिलगीर हुवो'[4]। ताहरा[5] प्रधानपुत्र विचार कियो। महाराज कुवार चदन हाथे लगाई चपेटा मारीया छे। तिणरो विचार* छै। 'जनु दश दिन चादणपष छै'[6]। तितरइ कहीयो छै थै सुसता हुइज्यो।[7]

इतरो[8] साभलि कुमर धीरज हूवो। पछै जरै कृष्णपक्ष[9] आयइ महुर १ मालणि नू दे कह्यो। आज तू पद्मावती नू माहरी वात कहि '[10]पवर ले आव।'[10]

तरै मालणि कुवरी आगै जाइ कहीयो। राजि हु उवानू किसु कहू। तरै पद्मावती रीस करनै हाथ अलतो लगाइ आगुली करि पेट ऊपरि मारी। पछै[11] गालि दे कह्यो। पापणी राड घरि जाह[12]।

मालणि बिलषी होइ घर आइ। राजपुत्र आगइ उभी रही।

पाठान्तर—

१ ख मालण पुसी राजी हुई, ग इसो सुण मालण मोहर ले नै खुसी थकी। २ ख ग दोनु हाथे चदण लगाय। ३ पापण रांड। ४ ख मुकटसिपर दिलगीर हूवो, ग माळण री वात सामळ नै मुक्टशेखर कुमर दलगीर हूग्रो। ५ ख तब, ग तो। ६ ख जो दश दिन चांदणे पक्ष रा छै, ग जे दस दिन चांदणे पख रा रह्या छै। ७ ख हुवो, ग रहो। ८ ख इतरी, ग इसडो। ९ ग ग्रधारो पख। १० ख पबर दे बात कहि, ग माहरी खबर दीज्यै। ११ ग वले। १२ ख जाहि, ग जा।

---

* पत्र स० २ का ख भाग पूण।

तरइ कुमर पूछीयो। तरइ मालण कह्यो थाहरइ वासतइ दुइ वार मार षाघू। अरु धणियाणी[1] रो बुरो[2] मनायो। [3]पिण थानू तो क्युही कह्यो नही[3]।

इम सुणि राजपुत्र[4] दिलगीर हुवो। तरइ [5]मुहतइ री बेटो[5] बोलियो[6]। महाराज अठै कोहेक[7] कारण छै। लाप[8] रैं रग सु हाथ रग तीन आगुलीया सु मारो छै। सु जाणीजे छइ रितुवती हुइ छइ। तीयै कारण कह्यो छै दिन ३ सुसता हुवो।

दूहा

प्रथम दिवस चडालिनी, [9]वूजइ ब्रह्मघ्नीह[9]।
तीजइ दिन रजकी गिणइ, सुध्यति चउथै वीह॥१

वार्त्ता

दिन ४ देषउ। दिन ४ पछइ[10] महुर १ मालणि नू दे कह्यो। आज पद्मावती आगैं[11] म्हारी वात कहि मोनु पाछो जबाब दे।

तरइ [12]महुर रा[12] लोभ सेती मालणि पद्मावती [13]आगइ जाइ उभी रही।[13] तिवारइ मालणि नू आदर सहित जीमाडि तबोल दे घडी ४ रात्रि गया जेवडी वाधि [14]पछिम द्वारि[14] निकालि दीनी।

तरइ मालणि राजकुमार पासइ आइ सर्व वृतांत कह्यो। अरु थानु क्यु ही न कह्यो।

प्रधान रै बेटइ विचारीयो। कुमर दिलगीर हूवो। तरइ प्रधान रइ बेटइ कह्यो। आजि राति थानु तेडीया[15] छै। घडी ४ रात्रि[16] गया

पाठांतर—

१ ख धणीया रो, ग धणीयाणी नै। २ ग भुरो। ३ ख पण थानु तो क्यो ही न कह्यो, ग नै थानु पिण कइ कह्यो नहीं। ४ ग कुमर। ५ ख मत्री रो बेटो, ग मत्रीपुत्र। ६ ख बोलीयो। ७ ख क्योहीक, ग कोईक। ८ ग अलता। ९ ग दूजैं दीवस बेकार। १० ख पछैं, आगे भी ऐसा पाठ है। ११ ख आगे, ग पाछैं। १२ ग मोहर रै। १३ ख पासि जाइ ऊभी, ग नै समाचार कह्यो। १४ ग पछोकडा कानी। १५ ग बुलाया। १६ ख राति, ग रात।

पाछली कानी द्वार सेती जेवडी बाधि रापी छै। तेथि हू थानु ले जाइसि।

पछइ घडी ८ राति गई तरइ कुवर मुहतइ जाइ नइ जेवडी[1] हलाई[2]। [3]तठइ पद्मावती अरु सपी[3] पाच नइ मुकटशेपर नू उचउ[4] लीयउ। तरइ मुहतइ रइ वेटइ कह्यो। हु घडी ४ रात्रि पाछली रहिसी तरइ हु अठइ आइ उभउ रहीस। इतरउ कहि डेरइ[5] आयो।

पछइ मुकटशेपर महल माहि जाइ विनय करि भला भोजन कपूर कसतूरी लवग वीडा पाया। सूधा चोवा चवेल लगाया। सभोग करि मनोरथ पूर्ण कीया। [6]माहोमाहि प्रीति अधिक थई[6]।

पद्मावती पूछीयो। थे वडा चतुर छउ[7] [8]जउ इसडा भाव समझीया[8]। तरइ राजकुमर कह्यो। म्हारइ मुहतौ छै सु सही मित्र छै। महाचतुर[9] छइ। तीयइ थाहरी समस्या रो अरथ सर्व मोनु कह्यो[10]।

तरइ कुवरी कह्यौ। हु उणरी भगति आज महिमानी[11] करीसि। इसै प्रात हुवण लागो। तरइ मुहतो आयो। नीचो उतारीयो। [12]बेउ डेरइ[12] आया।

मुहतौ पूछै लागो। थासु किसी हकीकित कही। तरै कुमर* कह्यो। आज थानु महिमानी[13] आवसी। तरै मुहतै विचारी कह्यो। विस भरीयो भोजन आवसी।

पाठान्तर—

१ ख जेंवडो, ग छीको। २ ग हलायो। ३ ख तब पदमावती अरु पदमावती री सपीयां, ग तरै सहेल्या। ४ ख ऊपरि, ग ऊचो। ५ ख ग डेरै। ६ ख माहोमहि प्रीति अधिक हुई, ग माहोमाहे अधकी प्रीत वधी। ७ ख छो, ग मनुष्य छो। ८ ख इसा भाव समझ्या, ग वुधवत बिना इसडी समस्या कुण समझै। ९ ग महावुधीवत। १० ग समझायो। ११ ग मझवांनी। १२ ख मिल दोनु डेरै, ग दोनु साथे मिल नै डरे। १३ ख महिमानी, ग मिजमानी।

---

* पत्र स० ३ का ब भाग पूर्ण।

इतरइ[1] [2]मालणि लाडू भांत-भात रा ले आवी[2]। केसरीया लाडू कुमरजी नु छइ। गुलालीया मुहताजी[3] नु छइ। अनै कहीयो छै आप आपणा आरोगज्यो।

तरइ मुहतइ कह्यो। गुलालीया माहे विस[4] छइ। तरै लाडू १ [5]कुतरा नु पवाडीयो[5]। कुतरो तुरत मूवो। पछै केसरीयो लाडू १ मालण नु पवाडीयो। पछे आप पाया। गुलालीया नाष दीया।

पछै कुमर[6] कह्यो- म्हारइ मुहतइ नु बुरो चीतवइ तिणसु म्हारै काम नही। तरै[7] मुहतइ[8] कह्यो स्नेह रो कारण छइ[9]। स्नेह एके ही सु होइ। *अरु ईंयरो अभिप्राय नै जो गुणाधिक पणा थी जाणइ छे।* मन मन चलतो होइ तीयइ[10] कारण बीजी वात नही। हिवइ हू कहू छु त्यु करो ज्यु इयै नु ले जावा। घणा दिन रहीया वात [11]प्रगट हुसी[11]।

तउ थे आज राति दारू री [12]बतक दोइ[12] ले जावौ। एकै मइ दारू बीजी मइ पाणी। कुवरी नु दारू पाइज्यो। थे पाणी रा प्याला पीज्यो। जरइ पद्मावती छाकी[13] होइ तरै डावी जाघ पाछणा[14] रा तीन प्रहार कर अनै सोना री जेहड काढनै पग हूती ले आए।

मुहतै कह्यौ त्यु हीज[15] करि आयौ[16]। तरइ मुहतै जोगी रो वेस करि[17] मुद्रा पहिर[18] घणी [19]राष लगाइ मरहठी चाबि तीयै ही रो अजन करि रातो आंष करि मुहडइ अग्न री झाल काढतो

पाठान्तर—

१ ख इतरै, आगे भी ऐसा पाठ है, ग इतरी वात करता। २ ख मालण लाडू भांति भाति रा ले आवी, ग लाडू दासी साथ मेलीया। ३ ख मुहतेजी, ग. मुहता। ४ ख ग विष। ५ ख कुतरे पाधो, ग कुत्ता ने घाल्यो। ६ ख कुंवर, ग राजपुत्र। ७ ख तब, ग तद। ८ ख मन्त्रीपुत्र, ग मुहतो। ९ ख छै, ग थोईज छे। १० ख ग तिण, आगे भी ऐसा पाठ है। ११ ख छानी रहसी नहीं, ग छानी रहै नहीं। १२ ग दुपडी बतक। १३ ख छक छके, ग अचेत। १४ कटारी। १५ ख त्यु, ग तिम। १६ ग सब कीयो। १७ ग कर नै। १८ ख घाल। १९ ग पोल्या लाल कर नै बाघबर बिछाय मसाण मे बैठो छे।

मसाणा माहि पालडी विछाइ मसाण री राष भेली करि घूई वणाई। ऊपर डीवी मेल्हि महात हुइ वैठो[६]। [१]अनइ कुमर नू कह्यो[१]। तूही जोगी वेस कर राष लगाइ चोहटइ जाइ जेहड वेच नै रूपईया ले आव। ठगावै मती। अरु तोनु[२] पूछै। [३]जैहडि थारइ कठा तउ तू कहे म्हारै गुरु वेचणी दीनी छइ। वीजो हु क्युही न जाणू[३]।

इतरौ सुणि मुकटशेषर ज्यु मुहतै कह्यो त्यु करि चोहटइ ले गयो। तेथि[४] सुनार सराप नु दिपाली तरइ उलषी[५]। आ राजा रे घर री जेहड छै। तरइ जाइ [७]राजा नु कह्यौ[७]।

तरइ राजा जोगी नु तेडि पूछीयो। [७]तै जेहड कठै लाधी[७]। तरै जोगी वोलीयो। मोनु[८] तौ म्हारै [९]गुरु वेचणी दीन्ही छइ[९]। तरइ राजा कह्यौ ईयइनु तो काठो करो अनै इणरै गुरु नु तेडो। [१०]पकड मगावौ[१०]।

तरइ राजा रा आदमी गया। आगै मसाण माहे वैठो दीठौ। जोगी री क्रात[११] दीठी। त्यु पगे लागि हाथ जोडि नै कह्यौ। सामीजी[१२] थानू राजा तेडइ छइ।

तरै जोगी ऊठ नै विकराल रूप मुख माहे अग्निज्वाला काढतो थको राती आष करनै आयो। राजा देष नै [१३]भयभ्रात हूवौ[१३]। पिण राजा पूछीयौ। थारै जैहड कठा आई।

तरइ जोगी कह्यो। अधारी चवदिस री राति हूती। हु म्हारै

पाठांतर—

१ ख राजकुमार ना कह्यो, ग कुवर नै चेलो कीयो नै कह्यो। २ ख अरु तोनु, ग कोई। ३ ग मेरी ताइ खबर नाहि। मेरा गुरु जाणै। ४ ख तठे, ग तठै, आगे भी ऐसा पाठ है। ५ ख ओलषी। ७ ख राजा ना कह्यो, ग राजा जी सु मालम कीधी। ७ ख थै घड कठा हुती पाई। तिवारे कहै म्हारे घर री छै। तो बीजी केथ। ग थारै कठा सु आई। कना थारा घर री छै। तो वले बीजी जेहड कठे। ८ ख मुना, ग मोनै। ९ ख गुरु वेचवा दीधी छै, ग मेरा गुरु जाणे। १० ख ल आवौ, ग बुलाय ल्यावो। ११ ख तेज कांति। १२ ख स्वामी। १३ ख भयभ्रांत हूयो, ग चमक्यो।

तकीयै वैठो हूतो । अनै एक साकणी मसाण माहि* मडा षाण नु आइ हूती[1] । तिणनु देपि नइ मइ त्रिसूल हाथ माहे ले गयो । तरइ मोनु अनइ म्हारै चेलै नु षावण नु दोडी । चेलो नासि गयो । अनै मैं त्रिशूल वाह्यौ[2] । डावी जाघ माहि प्रहार दीयो । तरै शाकनी भागी । तरइ मे [3]बेउ हाथ घालीया[3] हूता पिण माई मुडो नीकलि गई । उवै री [4]जैहड १ हाथ माहि रही[4] ।

तरइ राजा मन मैं विचारीयो । जेहडि तउ पद्मावती री अनै अउ कहइ छइ डावी जाघ माहे [5]त्रिशूल रो घाव कीयो छइ[5] । तो जो त्रिशूल रो घाव डावी जाघ माहि होइ तउ पद्मावती भली नही ।

राजा भीतरि[6] गयो । देपइ तौ पद्मावती जाघ रै पाटो [7]बधावइ छइ[7] । राजा पूछीयो कासू हुवउ जोवा । राजा जोवइ तउ त्रिशूल रो घाव छै ।

राजा विलषो होइ वाहिर आइ[8] जोगी नु कह्यो[9] । इसडी हूवै तउ तोयै नु कासू[10] कीजइ । जोगी कहइ छइ ।

दूहा [दूहो]

ब्राह्मण[11] गाइ[12] स्वगोत्रीयो[13], कामिण[14] बाल अवध्य ।
होइ अधिक अपराध तो, घरा निकालण मध्य ॥१

वार्त्ता

राजा प्रछन्न[15] कह्यो । म्हारी दीकरौ[16] छै । किसू कीजइ । तरै

पाठान्तर—

१. आगे ग प्रति मे यह पाठ है—तब हमारे चैले उवाकु देप हाक कवी । तद शाकनी चैळे कु मारण दोडी । २. ग चलायो । ३. ख दोनु हाथ घाल्या, ग पग पकडे । ४ ख एक धड हस्त मध्ये रही, ग मेरे हाथ जेहड माई । ५ ख घाव त्रिशूल रो छै, ग त्रिशूल रो घाव छै । ६ ख भीतर, ग राजलोक मे । ७ ख बांध्यो छै, ग पाटो खुलाय नै देख्यो । ८ ख आवे, ग आय नै । ९ ख. कह्यो, ग पूछ्यो । १० ख क सू, ग कांइ । ११ ख. ब्राह्मण, ग बामण । १२ ख ग गाय । १३. ग सगोत्रीयो । १४ ख कामणि, ग काम । १५ ख गुप्ते, ग छानो । १६ ख ग बेटो ।

---

* पत्र सं० १ का ख. भाग पूर्ण ।

जोगी कहीयो । बीजो किही नु सुणावो मती । म्हारो चेलो डरे पिण हु 'पाछली कांनी ले नीसरीस' ।

तरै रात्रि समय पद्मावती काढि जोगी नु दीनी । तरै वेउ[2] जणा घोडइ चाढि ले आया । वासै राजा राणी नू कहीयउ ।

राणी राजा नू रीसाणी । तइ[3] मोनू[4] विगर पूछीया कुवरी घर माहि थी [5]काढि दीनी[5] । हु अन्न[6] नवे दाते पाईस[7] । राणी [8]कुवरी रउ दुप करि[8] मुई[9] ।

तरइ वइताल कहोयो[10] । अउ पाप कुणइनु लागसी । जउ तू जाणतो न कहिसि तउ हीयो फूट मरीस[11] ।

तरइ राजा विक्रमादित वोलीयो[12] । अउ पाप राजा दतवक्र नू जिण अविचार[13] कर्म कीयओ ।

गाहा

''अविचारित न कुणये पछ्छितावो होइ बहुतर ।
हियए विचारित कुणिजइ निईसए पामीये तछ्छ''[14] ॥१

राजा बोलीयउ सु साभलि मडो ऊठि[15] सीसम री डाल जाइ लागो । तरै राजा फिरि जाइ सीस्यो री डाल सेती मडै नु ऊतारि [16]काघइ कर ले हालीयो ।[16]

॥ इति श्री वइताल पचीसी री पहिली कथा सपूण[17] ॥

पाठांतर—

१ ग घोडा जोड नै बैसाए नै माहरै तकीयै पुहचायजो । पीछै मे इएने ले जाउगो । २ ख दोनु, ग दो । ३ ख आप, ग थे । ४ ख मोना, ग माहर । ५ ख ग कोम काढी । ६ ख अन, ग धान । ७ ख पावा, ग खांसु । ८ ख कष्ट करती, ग पुत्री रो दुख कर । ९ ख काल प्राप्त हुई ग मूई । १० ख कह्यो, ग बोलीयो । ११ ग मरसी । १२ ख ग बोल्यो । १३ ख असोच्यो, ग अए विमास्यो । १४ ग प्रति मे अप्राप्त । १५ ख उठी, ग बध माहि थी नीशर । १६ ख कांधै करि ले हालीयो, ग कांधे कर नै चालियो । १७ ख समाप्त, ग सपूएम् ।

वैताल-पचीसी री दूजी कथा

[1]ताहरा वैताल बोलीयो[1] । राजा सभलि । धर्मस्थल नाम नगर । तेथ[2] गुणाधिप[3] नाम राजा । तिणरइ [के]सव नामा ब्राह्मण । तीयइरी[4] बेटी मदारवत्ती[5] नाम । अति रूपपात्र । सर्व लोक जाणइ[6] । तिका वर प्राप्त हूई । ताहरा माता पिता अरु वडो भाई तीनै[7] बेसि विचार कीयो । जउ ईयइ महीनै मइ व्याह करणो । नही तउ वरस ४ सूझइ नही ।

तरै आतुर होइ एक वर बाप बुलायो । एक वर माता, एक वर भाई, [8]तीन वीद बुलाया[8] । तरै कलेश हूवउ । एक कहै हू परणीजिसि । बीजो कहे हू परणू । तीजो कहइ मारू मरू पिण हु परणू । अनइ[9] माता, पिता, भाइ आप-आपणो[10] बोल* राष्यौ चाहे । घणो कलेश हुइवा लागो ।

[11]इसइ माहि[11] कालइ सर्प आइ बीदणी नु पाधी । तरइ मत्रवादी बुलाया । तीया[12] झाडो दे कह्यौ । ए असाध्य छइ । कह्यौ छै—

दूहा

[13]छठि नवमि पचमि[13] तथा, [14]आठमि चवदिस[14] आम ।
वार शनीसर भोम हुवइ[15], तौ मरइ काल डसि जाम ॥१

पाठान्तर—

१ ख वेईताल बोलीयो, ग तद मडो बोल्यो । २ ख तठे, ग तठे । ३ ख गुणाधिपति । ४ ख तिणरे, ग तिणरी । ५ ख मदनारवती, ग मदिनावती । ६ ग प्रति मे आगे यह पाठ है—इसडो रूप कठ ही नही जाण्यो छै । ७ ग मामो इण न्यार्ह जणा । ८ ग च्यारे वींद परणीज[ण] नै पीण एकण साथे आया । ९ ख तिवारे, ग भोर । १० ख आप-आपणो, ग आप आपणों । ११ ख एतलै, ग इतरै सामाजोग माहे इसौ वृत्त हुवो । १२ ख तिको ग तिणा । १३ ग पांचम छठ ज आठ में । १४ ग नवमी चवदस । १५ ख हुवै, ग हूवै ।

* पत्र ४० ४ का क भाग पूण ।

मृगसिर आद्रा रोहिण, असलेसा[1] रु विसाप।
कृतका मूल नक्षत्र मइ, डस्यो न [2]जीवइ भाप[2] ॥२

वार्त्ता

सा मदारवती वात करता गारडू वइठा मर गई। तरइ केशव नदी तीरइ ले जाइ दाग दीयो। [3]तरइ तीनेई वीद आया[3]। एकै तो उवइरी राप लगाइ नीकल गयो। बीजो मसाण उपरि मढी कर वइठो। तीजइ दिन तीजो आइ हाड लै नै गंगा माहे घालण गयउ[4]।

पछइ जिको राप लगाइ नइ जोगी हुवो हुतो सो भमतो-भमतो विद्यावत ब्राह्मण (ब्राह्मण) रइ घरे गयो। तठइ ब्राह्मण [5]वंसदेवी करि[5] वैठो हुतो। इतरै जोगी जाइ देवदत्त रो नाम लीयो। तरै जोगी नु वैसाणि भोजन दीयो।

[6]तिसडै ब्राह्मणी सासू सेती लडाई करी रीसाइ बेठी। दीकरो रोइवा लागो। तरै दीकरै उपरा रीस करि दीकरै नु मारीयो।[6]

तरै जोगी देप हत्यारा जाणि विण जीमीयइ ऊठीयो। तरइ विद्यावत[7] वोलीयो। क्यु न जीमै। [8]थारै घरै वालहत्या हुई तिण पाणी न पीवू।[8]

दूहा[9]

वालक गाइ त्रिया तणो, हत्या सब तइ[10] जोर।
आपघात[11] वेसास घन[11], पाप न इसडौ ओर ॥१

पाठान्तर—

१ ख ग अश्लेपा। २ ग मरघो। ३ आगे ख ग मे यह पाठ है—इद्री होठ सघाणीया, मस्तक सापल बाहु। नाभ मरम की ठोड मै, मरघो (इसीयो ख) न जीवै काहु ॥३ दाह स्वेद हिडकी वमन, स्वास नाप न (दे ख) नाड (नाडि ख)। बकै पुकारै पीड सै, सो असाध्य दे राड (राडि ख) ॥४। ४ ग. प्रति मै आगे यह पाठ है—चौथो जीमै तरै उण नै कवो मेल नै जीमै। ५ ख अग्निहोत्र रो मत्र साध। ६ ग इतरै बालक रोयो। तरै बालक नै मरोड नै चुलै मे घाल्यो। ७ ग ब्राह्मण। ८ ख हत्यारा रे घरि अतीत अन पाइ तो दोप रो विभागी होय, ग तै बालक नै चुलै मे घाल्यो सो न जीमू। थे तो हित्यारा छो। थारा घर रो जीमता दोसण लागै। ९ ख ग दूहो। १० ख ग ते। ११ ग वैशाद्य मत।

वार्ता

तरइ[1] [2]ब्राह्मण बोलीयो।[2] ईयइ बालक नू जीवाडां तो हत्या मिटइ अनै तू जीमै। तरइ सन्यासी कह्यो। तो हू जीमू।

तरै ब्राह्मण मन मैं जांणीयो। [3]जोगी विण जीमियो जाइ।[3] मोटो प्रायछित्त[4] लागै। तीयइ[5] कारण बालक जीवाडि जोगी नू जीमाडणो। इसो विचार सजीवनी विद्या करि उपध-मंत्र करि बालक जीवाडीयो अर सन्यासी नू कह्यौ तू जीम।

ताहरा[6] सन्यासी[7] कह्यो। हू [8]जीयै रइ दुष[8] जोगी हूवौ [9]तीये नू[9] जीवाडण री ताई [10]आ विद्या सीषू[10] तो जीमू। नही तो [11]एथि हु मरीस। तोनु हत्या देईस। जीमू नही।[11]

तरै [12]कह्यो। तू जीमि। तोनू विद्या सीषाडिसि।[12] पिण आ विद्या एक वेला फुरै छै।

जोगी कहीयो—म्हारै एक वेला काम छै। [13]तरै विद्यावत जोगी नु जीमाडि विद्या सीषावि सीष दीधी।[13]

तरै जोगी विद्या सीष [14]मदारवती रै मसाण[14] आयो। उठै[15] बीजो मढो[16] मांड बैठो छै। मसाण उपरि ईयइ [17]विद्या करि[17] मदारवती जीवाडी।

ताहरा बिन्है लडे लागा। इतरै तीजो[18] ही गगा हूती आयौ तिको ही लडिवा[19] लागो।

पाठान्तर—

१ ख तिवारै, ग तद। २. ग बांमणी बोली। ३ ख सन्यासी न जीमे। ४ ख प्रायश्चित। ५ ख तिण। ६ ख तिवारे, ग तरै। ७ ग सन्यासी। ८ जिण रे दूख, ग जीण कारण। ९ ख तिण नु। १० ग म्हा रसकुपी दै। ११ ख एथ हीज उपवास करि मरू। १२ ख विद्यावत कह्यो। उठि जीम। तोनु सीषाडीस। ग बांमणी बोली सु उठ जीम। तनै देईस। १३ ग तद बांमणी रसकुपी दीवी। १४ ग उण नगर मे आप री स्त्री मुइ थी तठै। १५ ख तठे, ग उठै। १६ ख कुटी। १७ ग छांटो नाख्यो। १८ ख त्रीजो। १९ ख लडण, ग लडन।

तरइ मडो[1] बोलीयो। राजा तू वीर विक्रमादीत[2] वडो राजा। तै घणा न्याव कीया छे। इयारो न्याव करो। [3]कुणै नू आवइ।[3]

तरै राजा बो*लीयो।[4] [5]रे मृतक तू न जाणइ तउ[5] साभलि। [6]जिणै जोवाडी सु तो उवै रो[6] पिता हुवै। अनइ हाड[7] ले गयो सु बेटो[8] हुवो। [9]जिणै स्मसाण री सेवा कीधी[9] सु भर्त्तार। सेवै सु पावइ।[10]

[11]इसडो वचन साभलि[11] मडो [12]सीसम री डाल[12] जाइ विलगो। तरइ राजा फिर पाछो जाइ मडै नू उतारि ले आवतो हुवो।

॥ इति श्री वइताल पचीसी री बीजी[13] कथा कही[14] ॥

पाठांतर—

१ ख वेताल नामे मडो, ग मडो। २ ख विक्रमादित्य, ग राजा। ३ आ स्त्री कुणै री हुसी ग उवा स्त्री किण नै आवै। ४ ख बोलीयो, ग कह्यो। ५ ख वेताल ग तु जाणै नहीं। ६ ख जिण जीवाडीयो उण रो, ग जे जीवती कीवी सो तो। ७ ख अस्त, ग फूल। ८ ख बेटो, ग पुत्र। ९ ख जिण मसाण सेव्यो, ग कवो दियो। १० ख पावै। ११ ख इतरो सुण, ग इतरो सुणत समान १२ ग शीशम र। १३ ग दुजी। १४ ग सम्पूण।

---

* पत्र सं० ४ का ख भाग पूण।

वैताल-पचीसी री तीजी कथा

हिवइ तीजो वार मडो ले आवता बोलीयउ । वात[1] विना पथ किउ[2] कटै अनै[3] तू म्हारो वाहण छै । तीयइ[4] कारण हू कहू छु । साभलि[5] । भोगावती[6] नाम नगरी । तठइ रूपसेन राजा । तीयइ रै वि[द]ग्धचूडामणि नाम सूवो । पजरा[7] माहि रहै छइ । महापडित छइ । उवइ[8] नू[9] राजा पूछीयो । मो लायक[10] वीदणी[11] तू कठइ जाणइ छइ ।

सूवइ[12] कह्यो । हू जाणू छु । मगध देस रइ[13] राजा रइ बेटो सुरसुदरी[14] नाम[15] सु थारै स्त्री[16] हूसी । अनइ[17] सुरसुदरी आपणै आवास थकी[18] मदनमजरी नाम सारिका [19]तीयै नू[19] पूछीयो । तू जाणइ मो लाइक [20]वीद कुण हुसी[20] ।

सारिका बोली । भोगावती नगरी रौ राजा रूपसेन नाम [21]अति सरूप कामावतार[21] थारो भर्त्तार हूसी ।

[22]तिका साभल ने मदनातुर[22] हूई । [23]सषी कन्हा मा नू कहायो[23] । इतरइ राजा रूपसेन परधान सगाई करण नू राजा पासि आया । राणी सांभलि राजा नू कह्यो ।

तरै राजा परधान तेडाइ [24]*सलगनी बेटी दीनी*[24] । राजा रूपसेन

पाठान्तर—

१ ख वार्त्ता । २ ख क्यो । ३ ख मए । ४ ख तिण । ५ ख ग साभल , ६ ख भोगवती । ७ ख पजर, ग पिंजरा । ८ ख ग उण । ९ ख नू, ग नु । १० ख लायिक । ११ ख ग वीदणी । १२ ख सुवै, ग सुवो । १३ ख ग रो । १४ ख सुरसूदरी, ग सुदरी । १५ ग नामै छै । १६ ख अस्त्री । १७ ख मरु, ग पनै । १८ ख थकी । १९ ख तण नु, ग तिण नै । २० ग कुण वर होसी । २१ ग सकल कला रो जाणणहार छै । महा रूपवत छै । २२ ग इसो सुणतो इ कामपीडत । २३ ग सखी नै राजा कनै मैली । २४ ग पुत्री परणाय नै सीप दीधी ।

सुरसुदरी नू परणि सारिका सहित ले आपणै[1] नगर आयो। उथि[2] [3]विदग्ध चूडामणि नाम सूवा रा पजरा माहि सारिका रापी।[3] तीयइ सारका रो रूप देपि सूवो कामातुर होइ बोलीयो। हे सारिका सभोग कीजइ।

तू[4] योवन रूप भरी छै।[5] ससार माहे 'पाया पीया' रो फल सभोग हीज छइ। बीजो सर्व निरर्थक छै। तीयइ कारण तोनु कहू छु। जन्म सफलो करें।

तरइ सारका बोली। आ बात तो इम हीज छइ। हू पिण जाणु छु सु साभलि।[7]

दूहा

दीपक होइ निसा समय, अरु उचो आवास।
सक न आवै दपति हि, करता वचन विलास[8] ॥१
अैसइ जउ आनद सो, विलसै इह परकार।
सोई तो सभोगसुष, और लोक व्यवहार ॥२

वार्त्ता

इतरै राणी पूछीयो। थे किसी बात करो छउ[9]। तरै सारिका बोली। विदग्धचूडामण कहै छइ। तू मोसु वीवाह करि।

तरै[10] राणी कह्यौ। भला कहइ छइ[11]। तू कुमारी छइ।

पाठातर—

१ ख आपरे, ग आपरा। २ ख उथ, ग तरै। ३ ग सुवा नै सारका दोनू एकण पिजरे में रहे। ४ ग तिका सारिका। ५ प्रति मे आगे यह पाठ है—तिण सुवै नै बतलायो। जे तु मनै परणै तो ससार माहै सारवस्तु इतरो ई छ। संसार मे जीव सहू बराबर छै। ६ ख ग पाणो पहिरणो। ७ आगे ख ग में यह पाठ है–ख विविध वस्त्र (ग वस्त्र विवध) गाहणा सुगध, पान पान बहु भात (ग भांतु)। सवे नि[र]थक दपतेहु (ग जाणज्यो), दपति विना दूहांत (ग त्रिया विना सहू छाण) १॥ त्रीया न जाण्यो पुरुष गुण, त्रीय गुण पुरुष अजांण। निफल त्यारो (ग तिणा रो) जीवीयो गतिरांडा रो पाण (ग धाण)॥१ ८ आगे ख और ग प्रतियों में यह 'दूहा' है—स्वेद हुता पिहिनि द्रवै, मणणत (ग माणन) थक न काइ। वासिकसिज्या हुइ प्रिया, पुरुष प्रमादी थाइ ॥२ ९ ख ग छो। १० ख ताहिरां, ग तिवारै। ११ ख. ग छे।

इसडै[1] पडित नु तू कयु न परणीजै। इतरइ[2] राजा आइ उभो रह्यउ। तरइ सुक-सारिका आसीस दे विनय करि कह्यौ। महाराज सिंहासण विराजै।

राणी बोली। [3]हे सारिका! सूवा नू किसै वासतै न परणीजइ। सारिका कह्यो।[3] मोनु पुरष रो[4] वेसास न पडै। पुरुष आप स्वारथी होइ। अनै स्त्री रो योवन थोडा दिन रहै*। पछै[5] योवन गया बीजी[6] स्त्रो सू प्रीति करइ। पुत्र न होइ तो बीजी परणीजइ[7]। पुन[8] देखइ तउ[9] मारै। विगर गुनह[10] पिण मारै। तउ कुण राषइ। अनै एक[11] पुरुष री वात कहु छु। थे वात साभलौ।

कचनपुर नगर छै। तेथ[12] महाधन[13] नाम वाणीयौ वसइ। तीयइ रो पुत्र धनक्षय वर्द्धमान सेठ री[14] पुत्री परणी[15]। पिता रइ घरे रहो। कितरे दिनै धनष्यय रो पिता मूवउ[16] अरु द्रव्य षाइ गमाइ दरिद्री हुवौ।

तरै[17] स्त्री[18] नू लेवण सासरइ[19] आयो। पछे सुसरै महिमानी[20] करि घणा गहणागाठा कपडा दे मुकलावो करि [21]विदा कीयो[21]।

पाछै पइडा[22] मइ जाता स्त्री नू कह्यो। अठै[23] घणे[णो]डर छइ। थारो गहणो मोनु दै। तरै सर्व गहणौ उतारि दीयौ। पछे पाणी रइ मिसि कूवा उपरि जाई नै स्त्री नू धको दे कूवा माहि नाषि दीधी अनइ[24] आप गाडो ले घरि आयौ।

पाठान्तर—

१ ख इसै, ग इसा। २ ख इण समय, ग इतरै तो। ३ ख सारिका कहै छै। ४ ख ग री। ५ ग अनै। ६ ग और। ७ ख ग परणीजै। ८ ख गुन्हौ, ग गुन। ९ ख ग तो। १० ख गुन्है, ग गुनै। ११ ग. फेर। १२ ख ग तठ। १३ ग महाधनवत। १४ ख तिणरी। १५ ग हुती। १६ ख मूव, ग मरण पाम्यो। १७ ख ताहरा, ग कीतरै दिन। १८ ख इस्त्री, ग लुगाई। १९ ख ग सासर। २० ग मिजमांनी। २१ ग सीख दीधी। २२ ख पइ ग मारग। २३ ख एथ। २४ ख अरु, ग अन, म यत्र भी ऐसा पाठ है।

* पत्र सं० ४ का क भाग पूर्ण।

पाछै बीजइ दिन वटाउ[1] आइ पाणी भरिवा डोरी [2]बाधि चरवी घाली[2]। तरइ [3]अस्त्री झालि नइ[3] बोली। [4]हु मानविण छु[4]। दया कर परही काढ नै घरै आण नै जीमाड[4]। कपडा देइ नइ बाप रइ घरे पहुचाई[5]।

तरै[6] माता-पिता-भाई-वध पूछण लागा। तरइ कहण लागी। मारग माहे चोर मिल्या। म्हारो गहणो सर्व पोस ले गया। अनइ थाहरइ जमाई नु बाध ले गया। पछै न जाणू [7]किउ ही कीयो। मारीयो कि छोडीयो[7]। हू सचेत हूई तरै उठि आई।

इसी वात सुणि[8] उवा सोक कीयो। पछै धनष्यय कितराएक दिना सर्व [9]माल गमाइ जूयइ हारि वैठो[9]। तिसडइ सुसरा री दिलासा आई।

तरै फैरि सासरइ[10] आयो। तठै गाव माहे पइसता आपरी स्त्री दीठी तरै मन माहि डरण लागो। तरै स्त्री[11] हाथ पकडि कह्यो। तू डरै मती। मैं थारी [12]कूवा री[12] वात कही न छइ।[13] आप ज्यु पीहर वात[क] ही त्यु हीज सुणाइ।

घरे ले आई तरै [14]सासु सुसरो साला मिलीया।[14] दिलासा दीधी। भली भात भोजन कीया। मालीयै [15]विछावणा कीया[15] तठे जाइ सूतो।

पाछा थी स्त्री सोलै सिंगार करि पारका गहणा मागि पहिर [16]सोवण नु[16] आई। ताहरा बातचीत करि विचारीयो। जो आज पहिलै दिन गहणा पराया पहिर आई छइ। बीजै दिन गहणा पहिरण

पाठान्तर—

१ ख वाट उपरि कोइ मानवी। २ ख प्रवेपी। ३ ख कन्या निसरी। ४ ग मोनु बारै काढो। ५, ख पोहचाई, ग पोछाई। ६ ख उवै ना, ग उणनै। ७ ख मारीयो हुसे, ग मारीयो कनै छोडीयो। ८ ख साभलि, ग सांभल। ९ ख माया सगली हार गमाय, ग धन हार गयो। १० ख सासरे, ग सासरै। ११ ग प्रति मे आगे 'पावद री' पाठ है। १२ ख कुये री, ग कुवा री। १३ ग प्रति मे आगे यह पाठ है—'मो हूणहार थी सु हुई। औ थारो दोस नांहि।" १४ ग सुसरै शाला मिल नैं तिणनै माहे ले गया। १५ ख उपरि पाट वीछाय दीधो। १६ ख सूवण नू ग धणी कनै।

नु कोई देसी नही । अनै 'इण कना' हूं मागू तो मोनु[1] न द्यइ । अनै षोसु ती पुकारइ ।

इसो विचार आधी राति[3] छुरी सेती स्त्री रो गलो काटि गहणा ले नीसरि गयो । तिणइ कारणि कहु छु । पुरुष दुष्ट महा अपराधी होइ सो प्रत्यक्ष[4] देष्यो । ताहरा सारीका री कथा सुणि राजा सूवा कानी दीठो । तव सूवइ[5] तसलीम करि दूहो कह्यो ।

दूहो

घोडा हाथी सारस हु, कपडो काष्ट पाषांण ।
माहाराजा* नारी पुरुष, इनि[6] बहु अतर जांण ॥१

वार्त्ता

राजा बोलीयो । तैं पिण इसडी वात सुणी दीठी होइ तो कहि सुणाइ । सुक कहइ छइ ।

कचनपुर[7] नगर हतो । तठइ सागरदत्त[8] नाम सेठ रो बेटो[9] श्रीदत्त । तीयइ श्रीपुर[10]वासी सोमदत्त री बेटी जयश्री नाम परणी । पछै कितराएक दिन सासरै रहि पीहर गई ।

वांसइ[11] श्रीदत्त [12]बहुत असबाब[12] लै[13] विणज री ताई परदेस गयो । घणा दिन रह्यो । इतरै जयश्री योवनवती हूई ।

दोहा

जो पिण त्रिया विरूपणी, योवन समय सलूणि[14] ।
मस्तो[15] आया नोबरो, [16]पणि फल[16] मिष्ट तरूनि[17] ॥१

पाठान्तर—

१ ख इयं कह्या । २ ख मुने । ३ ख रात्रि, रात रै समै । ४ ख परितष्य, ग परतक्ष । ५ ख सूहटै, ग सूवै । ६ ख इए, ग इसरो । ७ ग कनकपुर । ८ सारगदत्त । ९ ख पुत्र, ग पुत्र । १० ग श्रीदत्तपुर । ११ ख ग वांसे । १२ ग बोहत द्रव्य । १३ ख लें, ग लइ नें । १४ ख सलूण, ग सलून । १५ ख मसतां, ग मसती । १६ पिण फल, ग फल पिण । १७ ख तरूण, ग तरून ।

---

* पत्र सं० ५ का ख भाग पूर्ण ।

वार्ता

तरइ जोवन रा जोर सेती रह्यो न गयो। तव एक युवान पुरुष सेती प्रीत करी। नित्य उवरइ[1] घरि जाइ सभोग करइ। पीहर रौं कोई पूछइ नही। कहीयो छइ।

दूहा

पीहर वास विदेस प्रीय, [2]रिति घसत[2] मनि लोभ।
कुस्त्री सग प्रसग नर, ए त्रीय विनशन[3] थोभ ॥१
भाई पुत्र पिता पुरुष, रूपवत पति देषि।
कांचा भांडा री परइ, त्रीया वहै[4] जल रेष ॥२
नारी ज्यु घी रो घडो, पुरुष अग्नि सम जांणि।
अग्नि कनारइ [5]घृत चलै, त्यु नर ढिग त्रीया वपाणि[6] ॥३

वार्ता[7]

[8]उवाइ नु सुष भोगवता जयश्री रो भर्त्तार[8] आयो। ताहरा जयश्री दुचिती हुई जु अउ पापी लैंण नु आयो। किसु करू। केथ जाउ। भूष तृस सर्व गई[9]। अति[10] गोष्टी, निरकुसता, पुरुष-सवध, अउरि घरि जाणो, दूती रो सग, भर्त्तार री ईर्ष्या, एता स्त्री रा विनाश-कारण कह्या।

तीयइ समइ श्रीदत्तरी महिमानी करि रात्रि सोवण[11] नू मालीयै पलिग विछाइ दीन्हउ। अनइ जयश्री नु पिण परचाइ सोवण नु मोकली। सा भर्त्तार पासि जाइ उपराठी होइ सूती। कहीयो छइ।

दूहा

ऊतर वेग न दीय कछु, देवत सनमुख नाहि।
वइठत[12] उपराठी[13] हुई, भृकुटि चहोरति[14] माहि ॥१

पाठान्तर—

१ ख उवेरे, ग उणरै। २ ग रक्त वशन। ३ ख विणसिण, ग विना न। ४ ख वले, ग वहे। ५ ख कनारै, ग कनारे। ६ ख वपाण। ७ ग प्रति मे आगे यह पाठ है—उण सु भोग करै। जीणसु कह्यो है। स्त्री नै घणी पीहर न राखीय। ८ ग कितरै दिन जाता श्रीदत्त पिण कमाय नै। ९ आगे यह पाठ है—ख सीत उष्ण वयोही रुचे नही, ग अन पिण भावै नहीं। १० ग. घणी। ११ ख सूवण, ग सूमण। १२ ख ग वेठत। १३ ग उपरांठी। १४ ख चहोडत।

गुन[1] विसरइ [2]अउगन गनइ[2], परतिय[3] धारी देहि ।
दीन[4] वस्तु न लेइ कछु, विरती लछन एहि ॥२

वार्त्ता

तिका जयश्री भर्त्तार पासि विरती थकी सूती[5]। भर्त्तार स्नेह की[6] वात करै सु [7]उवै नु[7] विष[8] लागइ। मुहि न बोलइ। नीद न आवइ। कहीयो छइ।

[दूहा]

विरती नींद न आवही, पट तूली[9] परितोइ।
राती सुष मांनइ[10] सुवइ, ककर उपरि जोइ ॥१

[वार्त्ता]

जयश्री नू नीद [न] आवइ। अनइ[11] श्रीदत्त नीद भरि सूतो। तरइ आधी राति उठि जार पासि गई। तैथि[12] उवै नू[13] चोकीदार तीर करि मारीयो। सो सकेत री ठोडि मालती सषी रा घरि माहि गयो।

इतरइ जयश्री पिण सषी रै घरि[14] आई। इतरै जार बोलीयो। म्हारै[15] तोर लागो छइ[16]। पिण तोनू भोगवीसि[17]। तरइ भोगवतां जयश्री रो होठ मुष माहि लीयो हूतो। अरु उवै* घाइल नु धनुष-वाव[18] हुइ दांति लाग गया। अरु जयश्री रो होठ दाता सु कटि नै घाइल[19] रा मुह माहि रह्यौ। जयश्री सुरडी हुइ। पछतावण लागी।

पाठान्तर—

१. ग गुण। २ ख उगुन गुनै, ग औगुण गिणे। ३ ख ग परसत। ४ ख दीठो, ग दीनी। ५ ग प्रति मे आगे ॥छै॥। ६ ग. री। ७ ख उण ने, ग उणनै। ८ ग खारो। ६ ग सूती। १० ख माने, ग मानै। ११ ख ग अरु। १२ ख तिवारे, ग उठ। १३ आगे ख प्रति मे 'जार आवते ना'। १४ ख घर माह, ग घरे। १५ ख मोनु तो, ग माहरे। १६ ग छै। १७ ख भोगवीस, ग भोगवसु। १८ ख धनपय, ग धणुखीयो। १६ ग जार।

---

* पत्र स० ६ का क भाग पूर्ण।

जार मुवो । चोर पिण घर माहे पइठो हूतो । 'तिणै उभै तमासो दीठो'[1] अर रात थोडी रही ।

ताहरा चोर पाली ही घर गयो । पछइ जयश्री भर्त्तार पासि जाइ नइ तोफान उठाइ पुकारी । [2]इयइ धणी पापीयइ[2] म्हारो होठ [3]काटि पायो[3] । इसडा काम बीजो कोइ करै नही । [4]होठ रै दात सहु कोई घइ छइ[4] । पिण इण दावा कोइ पाइ नही ।

तरै श्रीदत्त [5]जागि देख नइ हैरान होइ रहीयो[5] । जयश्री बाप भाय [माय] भाई नु जाइ मुहडो दिपायो । अरु जयश्री री मा कह्यो । आ तो सुवण नु जाय ही न हुतो । पिण मइ सगति[6] मोकली[7] । तीयरइ रउ फल पायो । पिण [8]ईयइ नु[8] मारि काठो अरु रावलइ[9] ले जावो[10] ।

ताहरा चोर विचारीयो । भाई इयइ नु वेगुनाह मारे छइ । तउ हू जाइ नइ कहू । तरइ चोर राजा पासि जाई कह्यो । जीव बकसो[11] तो कहू ।

राजा कह्यो । [12]जीव बकसीयो[12] । कहि तू कुण छइ ।

तरइ कह्यो । हु चोर छु । राति[13] मइ तमासो दीठउ । [14]इयइ मइ[14] गुनह कोई न छइ । [15]मती मरावो[15] । राति मालती[16] रइ

पाठान्तर—

१ ख चोर इसो तमासो देपि घर आयो, ग इसो तमासो चोरां पिण नीजरे दीठो । २ ख ग इण पापी । ३ ग तोड पाधो । ४ ख अधरा रै दात सहि कोई दे छै, ग होठ रै दांत सब को दे । ५ ख जाग हैरान हुयो, ग जागीयो सो देखें तो स्त्री रोवे छै । ६ ख सकत, ग मांडाई । ७ ग मेली । ८, ख इणनु, ग इणनें । ९ ख रावले, ग रावलै । १० आगे यह पाठ है—ख 'तिवारे श्रीदत्त नु मार कूट रावले ले गया । राजा उवारो कह्यो परि गरदन मारण रो हुकम कीयो ।' ग 'बांध नै रावलै लाया । ते सब बात राजा उणारी सांभली नै मारण को हुकम कीयो ।' ११ ख बकसो, ग बगसो । १२ ग गुनो तुनै माफ छै । १३ ख रातें, ग, रात । १४ ख इणमें, ग इण ठ मैं । १५ ख ग इणनु गरदन मति मारो । १६ ख मे आगे 'सपी रै' पाठ है ।

घरि जारि जातो हूतो। तरै चोकीदारा[1] चोर जाण नइ तीर वाह्यो। तीर लागउ। तरइ दौडि मालती रा घरि माहि नासि पइठउ[2]।

पछइ[3] आगइ[4] अस्त्री मालती रइ घरि आई। तरै जार पुरुष मिल्यो। मिल नइ कह्यो। म्हारइ घाव लागउ[5]। पिण तोनु आलिंगन देईस[6]।

ताहरा स्त्री रो होठ मुष माहि लीयो अरु सभोग करतां वीर्य अऊ जीव बराबरि[7] छुटो[8]। पुरुष रा दात चिहट गया। स्त्री-मुख धधूणि[9] जोर सु काढीयो। होठ घाइल रा मुहडै माहि छै। षबरि कराडो।

ताहरा राजा मांणस[10] मेल नइ पवर कराडी[11]। होठ घाइल रा मुह माहि लाधड[12]। श्रीदत्त नु छोडि दीयो[13] उवांरै सिर डड कीयो[14]।

पछइ मडो बोलीयो[15]। महाराज। तू राजा "विक्रमादीत छइ"[16] तउ कहि। दूनु माहि महा अपराधी कुण। न कहिसि[17] तउ हीयो फूट मरिसि[18]। अरु झूठ मत कहै।

ताहरा राजा कहीयो[19]। पुरुष महा अपराधी। स्त्री सदा [20]"छिनाला करै"[20] ही छइ। अरु होठ रइ वासतै तोफान दीयो।

इतरइ[21] कहता मडो नीसर सीसम री डाल विलगो। तरइ[22] राजा फिरि जाइ मडो उतारि ले आवतां मडो बोलीयो।

इति श्री वैताल पचीसी री ३ तीजी[23] कथा कही[24]।

पाठांतर—

१ ख चोकीदारं। २ ख गयो, ग पैठो। ३ ख ग पछै। ४ ग उठै। ५ ख ग लागो। ६ ख करिस्यू, ग करसु। ७ ख बराबर, ग साथ। ८ ख छूटा, ग छुटा। ९ ख धुधण काढीयो, ग धूण। १० ग आदमी। ११ ग कराई। १२ ख पायो, ग निकल्यो। १३ ग दीनो। १४ ख कीयो, ग कीधो। १५ ख बोलीयो, ग बोल्यो। १६ ख ग विक्रमादित्य छै। १७ ख कहिस, ग कहीस। १८ ख ग मरीस। १९ ख कह्यो, ग बोल्यो। २० ख छनाल कर, ग छिनाल छै। २१ ख इतरे ग इतरो। २२ ख ग तिवारै। २३ ख त्रीजी। २४ ग संपूर्ण।

वैताल-पचीसी री चौथी कथा

वहुडि[1] मारग माहि वैताल वोलीयो। राजा साभलि[2] वर्द्धमान-पुर[3] नगर। सुरुद्रसेन[4] राजा राज करै।

एक समै राजा सभा माहि वठो हूतो[5] मत्री सुभटा* सहित। अरु किणही देस थी एक वीरवल नाम रजपुत 'आइ पोल'[6] उभो रह्यो। पोलीया सु कह्यो। माहि जई राजा सु मुजरो करावो। तरइ पोलीयें[7] जाइ राजा सु कह्यो।

महाराज एक रजपूत किणही देस थी पोल आइ उभो छइ। महाराज रइ पाव देख्या चाहइ[8] छै।

तरइ[9] राजा परधान साम्हो दीठउ[10]। परधान पोलीये नू कह्यो। भीतर वुलावो[11]। तरइ वीरवल भीतर आइ मुजरो कीयो। तसलीम कीधी। [12]राजि मोनु चाकर रापउ[12]। हु भली भात राज री पिज-मत करीस।

तरइ कह्यो। थारी किसी दिहनगी कीजै। तरइ वीरवल कह्यो। पाच सइ टका रोज [13]जीमण नु म्हारइ लागइ छइ[13]। तरइ कह्यो राजा। थारइ[14] कितराएक रजपूत घोडा छइ।

तरइ वीरवल कह्यो। [15]दोइ हाथ, दोइ पग, एक पाडो,

पाठान्तर—

१ ख वहै। २ ख साम्लो, ग सुण। ३ ख वरधमान, ग मपयठांण। ४ ख रूद्रसैन, ग प्रजापाल। ५ ख हुतो, ग छै। ६ ख आइ पोल, ग पोल आय। ७. ग पोलिये। ८ ख चाहे। ९ ग ते सुण। १० ख देष्यो ग देख्यो। ११ ग वुलाय ल्याव। १२ ख मो सारीपे रजपूत री (ग मे आगे 'चाकरी री') चाह हुवे (ग हूवै) तो दीहाडी कीजै (ग दिहाडा री रोजगार कर राखीजै)। १३ ख ग पाऊ तो रहू। १४ ख थारे, ग थारं। १५ ख हाथ दोई पाडो १ छे।

---

* पत्र स० ६ का ख भाग पूर्ण।

इतरा छै[२]। तरइ राजा कह्यो। म्हा वतइ[१] रासीयो न जाइ। तरइ वीरवल सीप[३] करि हालीयो[३]।

तरइ परधान फेरि वुलाइ रापीयो। दिहनगी[४] दस भर दीन्ही छइ। जाणीयो इतरो[५] मागै छइ। सु क्यु हेक गुण छइ[६]।

तिको[७] वीरवल[८] ग्राधो देव ब्राह्मण नु घइ। तिण सु ग्राधो फकीरा[९] नु घइ[१०]। वाकी रहै तिको स्त्री वेटा नु घरे घइ। पछइ चाकर थको ''[११]पोल ऊभउ[११]'' रहै। घडी च्यार जीमण री ताई घरि जाइ। वीजू राजा जरै पूछइ कोइ ग्रठइ छइ। तरइ वीरवल कहइ। हु हाजर छु। पछइ जिकोई कार्य राजा कहै सो ग्राप करइ। इसी भाति सु चाकरी करइ।

एक दिन ग्रधारी ''[१२]चवदिस की[१२]'' राति ग्राधी गई छइ। तिस इकाएक रोवती स्त्री सुणी। तरइ राजा वोलै। कोई छै एथि[१३]।

तरइ[१४] वीरवल वोलीयो। हु छु। कीसु हुकम करो छउ। तरइ राजा कहीयो। देपि[१५] ग्राव। कुण स्त्री रोवै छै।

तरइ[१६] वीरवल तसलीम करि नीसरीयो। राजा विचारीयो। इसडो[१७] ग्रधारी रात्रि रजपूत नु एकलो ''[१८]मेल्हीजइ नही[१८]''। मोटो रजपूत छइ। तरइ राजा षडग ले ''[१९]वासै हुवो[१९]''।

ग्रागइ वीरवल छै। वासे राजा छानो जाइ छै। तरै नगर सु नीसर मसाण माहै गयो। देपइ तो एक स्त्री वस्त्र ग्राभरण पहिरीया ''[२०]दयावणी बैठी[२०]'' रोवै छै।

पाठान्तर—

१ ख वते। २ ख मुजरो। ३ ग चालियो। ४ ख दिहाडो, ग दैनगी। ५ ख ग इतरो। ६ ख छै, ग होछी। ७ ख तिको, ग होवै तै। ८ ग प्रति में ग्रागे 'धरम नीमत'। ९ ख ग फकीरा। १० ग वैच दैवे। ११ ख ग पोल उभो। १२ चोदसरी। १३ ख ग्रठे। १४ ख तिवारै। १५ ख जोइ, ग देख। १६ ग तरै। १७ ख ग इसी। १८ ग कठ मेलियो। १९ ख वासे २ हालीयो। २० ख दया ग्रावे तिण भाति, ग बीजा राम मैं दया ग्रावै इसो त

तरै वीरवल पूछीयो। तू कुण छै। 'किसैं दुपै'[1] रोवै छइ। तरइ बोली। हू राजा सुद्रसेन[2] री वेटो[3] सरीपी लिखमी छु। मइ[4] राजा री भुजा बहुत दिन विश्राम लीयो[5]। हमइ[6] ईयरो राज भग हुसी[7]। हु अठा थी परही जाईस। इणरै वियोग[8] थी रोऊ छु।

तरइ वीरवल कह्यौ। किण ही प्रकार राज[9] भग न होइ अनै थारो रहणो होइ।

तरै लिक्ष्मी[10] बोली। एक छै। जो राजा रै वीरवल रजपूत छै। ति*को जउ आपरउ[11] वेटउ सर्वमगला देवी नइ[12] बलि द्यै तउ राज भग न हवै [हुवै]। हु पिण बहुत दिन रहू। एतो[13] कहि अलोप हुई अनइ राजा पिण प्रछन्न[14] थकै लक्ष्मी रा वचन साभलीया।

वीरवल घरि आइ स्त्री पुत्र जगाइ लक्ष्मी रा वचन कह्या[15]। ताहरा स्त्री बोली। एतउ कार्य राजा रौ नही करो तो एती दिहनगी[16] षाता क्यु छुटोला।

पछै पुत्र नु[17] पूछीयो। तत्र पुत्र कह्यौ। धन्य[18] हु। जउ म्हारौ शरीर[19] इसडइ काम आवै। तो पिताजी बिलव[20] क्यु करौ[21]।

तरै तीनू एक मना हुइ नै देहुरइ[22] गया।

पाठातर—

१ ग किम। २ ग प्रजापाम। ३ ग स्त्री। ४ ख ग मै। ५ ख लीयो, ग कियो। ६ ख हुवै, ग अवै। ७ ख होसी, ग होसी। ८ ग बिजोग। ९. ख राजा री, ग राजा। १० ख ग लक्ष्मी। ११ ख वीरवल नाम ग रजपुत वीरबल नामै छै तिण रो। १२ ख नु ग नै। १३ ख इसो, ग इसो बचा। १४ ख प्रछन ग छानै। १५ ग सुणाया। १६ ख दिहाडो, ग रूजगार। १७ ख नु, ग नै। १८ ख धन, ग धॅन। १९ ख सरीर ग जमारो। २० ख विलब, ग ढील। २१ ग प्रति मे आगे यह पाठ है—'राजा पिण छानो थको सव बात सुणे छै।' २२ ख ग सवमंगला देवी रै।

---

* पत्र स० ७ का क भाग पूर्ण।

दूहा

सुस्थित थको न थाइ कछु, सुइ न सकै निद्राल ।
वंछित सब मन मइ रहै, चाकर नु दुष जाल ॥१
आरभीयो रहइ आपरउ[1], पर कारिज सावधान ।
जिण तन वेच्यो आपणो, सुष न तीयै नु जाण ॥२
मून[2] कीयइ गूगो कहइ, बहु बोलतै लवाल ।
क्षमा कीयां डरणो कहइ, न सहै तउ जजाल ॥३
धीठ कह्यै नइडै[3] रह्या, अलगइ कह्याइ अमत्त[4] ।
जलो विडांणी चाकरी, जियै न सुष सुरत्त ॥४

बात[5]

किसू करइ वीरबल । पराया चाकर । देवी आगइ ऊभो रहि कह्यो । देवी राजा सूद्रासन[6] बहुत[7] वरस राज करो । चिरजीव हुवउ । एतउ कहि [8]पुत्र नु माता आगै चढायो[8] ।

पछइ पुत्र रइ वियोग वीरवल आप कमल-पूजा कीधी । पछै पुत्र (स्त्री) रइ वियोगै भर्त्तारइ वियोगइ स्त्री पणि सिर-छेद कीयो ।

इसो ष्याल[9] देषि राजा विचारीयो । हू ईयानू मूवा देषि जीविवो[10] बूझइ नही । मोनु पिण मरिवो । इम जाणि राजा षड[ग] लेई "कमल-पूजा करिवा" लागो ।

तब देवी प्रगट होइ राजा रो हाथ पकडि कह्यो । "तू मरि मा"[12] । तरै राजा बोलीयो । माता म्हारी जो दया[13] करो छो तो म्हारी आयुर्बल[14] रा दिन ईया तीना "[15]नइ वाटि द्यो[15] तब देवी सतुष्ट[16] होइ कह्यो । जा थारा सेवक तू वहुत वरस जीवो ।

पाठान्तर—

१ ख ग आपरो । २ ख मुन, ग मन । ३ ख नेडा, ग नैडो । ४ ग प्रमत्त । ५ ख वारता, ग वार्ता । ६ ख सूद्रसेन, ग प्रजापाल । ७ ग घणां । ८ ख पुत्र को मस्तकि काट्यो, ग देवी ने चाढयो । ९ ख ग अचरिज । १० ख राज करू ग राज्य करू । ११ ख मस्तक काटए, ग माथो काटए । १२ ग पुत्र तु अमर हुवो । १३ ग दयो । १४ ख आवरेषा, ग आयु । १५ ग नै सरीसी वेष देवो। १६ ग राजी ।

तरै वीरवल स्त्री-पुत्र सहित [1]ऊठि ऊभो हूवो[1]। तरै राजा [2]छानोई ज[2] घरि[3] आयौ। वीरवल नु जणायो नही। पछै वीरवल स्त्री-पुत्र घरि पहुचाइ पउल[4] आइ ऊभो रहीयौ।

राजा पूछीयो [5]वीरवल आयो। कासू हुतो। कुण रोवै हुती[5]। वीरवल कहीयौ। एक स्त्री [6]रोवइ हुती[6]। मोनु देपि छिप[7] गई। वीजी[8] वात काई नही।

दूहा

ग्यानी[9] [10]जो न करै गरव[10], करि नय मावै सूर।
दाता दे मीठो चवै, ए तीन भलाई पूर ॥१

वार्त्ता

प्रात[11] समै राजा सभा माहे बइसि वीरवल[12] री अस्तुति करी[12]। वीरवल बुलाइ वात कहाई। [13]अधराजीयो कीयो[13]। सामधर्मा पणो पद दीधउ। अइसी कथा[14] कहि राजा नू* वइताल[15] पूछीयो। महाराज ईया[16] माहे सर्वाधिक[17] कुण। [18]सर्वाधिक राजा सूद्रसेन[18] जोयै स्त्री पुत्र आत्मा सहित तृण बराबरि गिणीयो। अरु [19]साम काम भला सेवक सदा[19] आवै।

एतो[20] राजा रौ वचन सुणि वेताल[21] बहुडि सीसम री डाल विलगीयौ[22]। ताहरा राजा पाछौ जाइ सीसम री डाल थी उतारि मडो ले २ आवतो हूवौ[23]।

॥ इति श्री वइताल पचीसी री[24] चौथी कथा कही[25] ॥

पाठान्तर—

१ ग घरै आयो। २ ख विना लपीया। ३ ख महले। ४ ख पोलि, ग पोल। ५ ग तो रात रा समाचार कहो। ६ ग रोवती थी। ७ ग पाछि। ८ ख और, ग और। ९ ख ग्यान, ग ग्यानी। १० ख गरब (ग गव) करै नही। ११ ग प्रभात। १२ ग नै बखाण्यौ। १३ ख अद्ध राज दीयो, ग आधो राज दीधो। १४ ग बात। १५ ख वेताल, ग बेताल। १६ ख इया, ग इणा। १७ ख ग सत्वाधिक। १८ ग राजा रो सत्य अधिक। १९ ग सेवक तो कांम आवै ही। २० ख इसो, ग इतरो। २१ ग मडो। २२ ख विलगो, ग विलगो। २३ ख हालीयो। २४ ख नी। २५ ग सपूरणम।

---

* पत्र स० ७ ख पूण।

वैताल - पचीसी री पांचमी कथा

हिव[1] वले मारगि चालता वेताल राजा नू बतलायो[2]। राजा न बोलै[3] तरइ कहइ छइ।

उजीणी[4] नगरी। तेथि महावाहु[5] नाम राजा। तीयरइ हरदत्त[6] नामा ब्राह्मण। तीयरइ पुत्री अति रूपवत मदनावती नाम वर-प्राप्ति[7] हुई।

तरइ[8] [9]ब्राह्मण हरदत्त[9] विचारीयो। [10]कुणइ नु[10] दीजै। तब बेटी कह्यो[11]। जीयइ माहै गुण कला चतुर हुवै तीयइ नू देज्यो।

[12]तीयइ समइ[12] वाहु[13] नाम राजा हरदत्त[14] नू दक्षणाधपति पार्श्वे[15] मेलीयो। हरदत्त[16] जाइ राजा सू मिलीयो।

राजा आदर करि पूछीयो। किसडी[17] वेला वहइ छइ। हरदत्त कहै।

दोहा

महाराजा नर पूछीयो, साच कहइ[18] नही कोइ।
क्रूर निजर हाकिम तणी, तइ[19] वसुधा[20] उजड होइ ॥१

चोर मुसै घर[21] पारको, सुजन[22] क्षीण दीसति।
पूतहि पिता न वेससइ, कष्टइ दिन घासति ॥२

दाता भजइ दरिद्र कौ, कृपण सवा[23] धन होइ।
पापी जीवइ बहुत दिन, धर्मी चलत ही जोइ ॥३

पाठांतर—

१ ग फेर। २ ख बोलीयो ग बतलावतो हुग्रो। ३ ख बोलीयो। ४ ख उजैणी, ग. उज्जेणी। ५ ग बाहू। ६ ग हरदास। ७ ख ग प्राप्त। ८ ख तब, ग तरै। ९ ख ब्राह्मण मन में ग बांमण। १० ख किण नु। ११ ग बोली। १२ ख तिण समय। १३ ख महाबाहु। १४ ख हरदास। १५ ख पास। १६ ख हरदास। १७ ख ग किसी। १८ ख ग कहै। १९ ख ग तिण। २० ख, धरि, ग धर। २१ ग धन। २२ ख सोजण, ग सज्जन। २३ ख बहुत, ग सदिन।

सजन सीदावै मनहि, विलसै विभव असत।
पूत मरै जीवइ पिता, ए कलिजुग रो मत ॥४

वार्त्ता

तेथि[1] हरदत्त[2] ब्राह्मण रइ बेटी कुवारी सुणि एकै ब्राह्मण आइ मागी। तरै हरदत्त[3] कहीयो। जीयरइ ज्ञान गुण[4] भलो हूसीय[5] तीये नू देईस।

तरइ ब्राह्मण बोलीयो। मो माहि भलो गुण छइ। इतरो कहि आपरइ हाथ रो सवारीयो रथ आणि दिपायो। अर कहीयो ईयइ[6] रथ रो इसडो प्रभाव छइ "[7]जठइ मन कीजै" तठइ जाइ।

तरइ हरदत्त[8] कहीयो। तोनू कन्या दीनी। [9]प्रभात समइ[9] रथ लेई आवै ज्यु बैऊ रथ बैस नइ उजेणी जावा।

तरइ रथ बैसि उजेणी आया। तरइ पछइ वासइ एकै ब्राह्मण हरदत्त[10] रै वडइ बेटइ नु कहीयो। थारी बहिन मोनु दै। तरै उवइ कहीयो। तो माहि किसु गुण छै।

तरइ ब्राह्मण कह्यो। "[11]तीन काल री वात जाणु[11]" छु। वासै हूवो[12] सु कहु। होसी[13] सु कहु। हुवइ छइ सु कहु।

ताहरा हरदत्त[14] रे बेटइ कह्यो। इसो गुण छै तोमै तउ म्हारी बहिन तोनु दीन्ही।

पाठान्तर—

१ ख ग तठै। २ ख ग हरदास। ३ ख ग हरदास। ४ ग हुनर। ५ ख हूसी, ग हुवै। ६ ख ग इण। ७ ख जठे मन करै, ग जिको मन में चितवै। ८ ख हरदास। ९ ग प्रभातै। १० ख ग हरदास। ११ ख ग त्रिकालदर्शी। १२ ख ग वात हुई। १३ ख हूसी, ग हुवी। १४ ख ग हरदास, आगे भी ख ग प्रतियो मे 'हरदत्त' के स्थान पर 'हरदास' पाठ है।

तरै किणही एक ब्राह्मण माता पासि मांगी। माता* कहीयो तो माहि किसु गुण छइ। तरै कह्यौ। धनुप विद्या जाणु छु। वाल बाधी कवडी[1] मारू। सबद वेधु श्रापि बाधि करि। तरइ माता कह्यो तोनु कन्या दीनी[2]।

तरइ वीवाह रो समय हुवो। तिवारै तीनेई वर[3] श्राया। माहो माहि कोलाहल कीयो। तठइ कोलाहलि एक यक्ष श्रायो। तरइ मदनावती रो रूप देप बध्याचल पर्वत ऊपरि[4] ले गयो।

दूहा

श्रति सरूप नांहिर भलउ[5], ना श्रति भलउ[6] गुमान।
श्रति दईणो भी ना भलो, [7]ए त्रय[7] वचन प्रमाण ॥१

वार्त्ता

जाहरा[8] प्रात हूवो। ताहरा तीन[9] वर श्राया। उवा[10] माहि ज्ञानी हुतो तीयइ नु पूछीयो। मदनावती रात री न लाभइ छइ। तिका कठै छै। तरइ ज्ञान सु करि देषइ तो बध्याचल छइ। जक्ष ले गयो छै।

बीजै वर बाणवेधी छै। तीयइ कह्यो नजरे देपू तउ तीर कर मारू। ति वारइ तीजो वर बोलीयो। म्हारै रथि चढि[11] चालौ।

ताहरा[12] उवै रथ तीनै बैस बध्याचल जाइ नै [13]राक्षस नु[13] मारीयो बाणवेधइ। पछइ रथ ऊपरा बैस मदनावतो[14] नु ले नइ श्राया। पछइ तीनेई माहो माहि [15]वाद पडीयो[15]। पिता पिण सोच

पाठान्तर—

१ ख कोडी। २ ख ग दीधी। ३ ख वींद। ४ ख ऊपर। ५-६ ख ग भलो। ७ ख एतै, ग ये त्रिय। ८ ख जब, ग जितरै। ९ ख. ग तीनै। १० ग उणां। ११ ग बैठ नै। १२ ख तिवारे, ग हिवै। १३ ग रापस नै। १४ ख मदनारवती। १५ ग सडवा लागा।

* पत्र ६० ८ का क भाग पूर्ण।

करिवा लागो। कुणै नु दीजै। कुणै नु न दीजइ। [१]तीना ही माहे[१] गुण बरावरि। [२]तीनेई पर ऊपगारी[२]।

वइताल बोलीयउ। [३]महाराज कहो[३]। आ अस्त्री[४] कुणइनु आवइ। अरु कह्यां हो वणइ।

राजा कहइ छइ। रथी अरु ज्ञानी वेद ऊपगारी हूवा। अरु जीयइ बाण करि राक्षस मारीयो [५]तीयै नु[५] आवइ।

इतरै कहता ही मडो[६] जाइ सीसम री डाल विलगीयो। तिवारइ राजा फिरि जाइ मडो ले आवता मारग माहि चालता वैताल बोलीयो[७]।

इति श्री वैताल पचीसी री पाचमी कथा [८]कही छइ[८] ॥५

पाठांतर—

१ ख सव माहि, ग इणा मं। २ ग निर्वहो ब्राह्मण नै आवं नही। ३ ग अहो राजेंद्र। ४ ग कन्या। ५ ख तिणना मदनारवती, ग तिणनु मदनावती। ६ ख वेताल। ७ ख कथा कहे छे। ८ ग सम्पूर्णम्।

वैताल पचीसी री छठी कथा

हिवइ वइले वेताल कह्यो छै। महाराज[1] साभलौ[2]। [3]धर्मपुरी नगरी[3]। धर्मपाल राजा। तीयै गाव रइ गोरिमइ चडिका रो देहरो करायो। चोकोर कोट वाग करायो। राजा सदाई पूजा करि दरसण करि नै जीमइ।

एक दिन राजा रो मित्र वोलीयो। महाराज ईश्वरी[4] स्तुति करो ज्यु इहलोक परलोक सुप हुवइ।

दूहो

पुत्र विना सूनो सदन, यद्यपि जन बहु साथि।
आप मूये[5] पीयै[छै] सपुत विरण, कुण राषै आथि ॥१
गति न लहे अपुत्तीयो, पिंड न पितर लहति।
तीयइ[6] कारण पुत्रमुष, दीठा सुष चाहति ॥२
[7]मात भगति तइ पाईय, पुत्र भलो महाराज।
सुष देणो चिर जीवणो, रावण री कुल लाज[7] ॥३

वार्त्ता

इसा वचन मित्र बोलीयो। राजा साभलि वहुत* भाव सेती विध पूजा करि स्तुति करतौ हूवौ।

दूहो[8]

भाव थकी भव तारणी, सुर तेतीसा राइ।
महा लिक्ष्मी छत्र धारणी, भगतां आवै भाइ ॥१

पाठांतर—

१ ख विक्रमादित्य, ग राजा। २ ग बात विना पप कट नही सो हु कहु छु। ३ ख धमपुर नाम नगर, ग धर्मपुर नगर। ४ ख ईश्वर री, ग माताजी री। ५ ख मुवै, ग मुवां। ६ ख तीयें, ग जिण। ७ ग सुख देणो चिर जीवणों, राखे कुळ री लाज। पाई पुत्र आयो इसो रार्वे घर को राज ॥२ ८ ख प्रति मे तीनों 'दूहा' नहीं है।

---

* पत्र सं० ८ का ख भाग पूर्ण।

'पूजा करि'[1] कर जोड दुइ, एक पाइ थिर होइ।
सुत दे जस दे विजय दे, प्रभु म्हारी दिसि[2] जोइ ॥२

[3]पुत्रादिक तीनू दीया, चोथो विभव अधिक।
देवी तूठी सवि दीगउ, श्रष वीयो मन ठिक्क[3] ॥३

वार्त्ता

[4]इयु करता[4] जिको ध्यावे सो पावइ।

[5]हमइ राजा नै मित्र देहुरै आया हुता[5]। तठइ एक धोबी री बेटी राजा दीठी। रूपइ रभा जिसी। महा दिव्य रूप लावन्य देषि राजा[6] देवी आगै कह्यो। माता इयै सु म्हारो वीवाह हुवइ तो थारइ आगइ आइ कवल[7]-पूजा करू।

इसो कहि आपणइ[8] घरि जाइ वात कर सगाई कीवी। पछइ परण राजा पुस्याल होइ रहीया।

पछइ कितरेके दिवसै मित्र सहित मुकलावो ले आवता देवी रइ[9] देहरइ नइडा[9] आया। तरइ यादि करि [10]मित्र स्त्री नु कहि[10] गाडी उभी राषी।

पछइ आप एकलो देहरइ जाइ कमल-पूजा करी[11]। पछइ वेला घणी लागी[12] तरइ मित्र [13]अस्त्री नु[13] कह्यो। थे ऊभा रहो। हू देहरइ[14] जाइ पबर ले आवु।

मित्र माहि जाइ देषइ तो सिर धड जूदा २ हुवा पडीया छै। तरइ मित्र[15] विचारीयो। जउ हू जाइ कहीस तउ वहू[16] जाणसी

पाठान्तर —

१ ग कर पूजा। २ ग ठा। ३ ग प्रति मे यह दूहा नही है। ४ ग इसो विध। ५ ख एक दिन (ग मे आगे 'एक') धोबी मित्र सहित देवी रे (ग देवी रो) देहर दरसण (ग दरशन) करण आयो। ६ ग धोबी। ७ ख कमल, ग कमल। ८ ग आपरै। ९ ख देहुरै नेडा, ग देहरै नैडा। १० ग मित्रा ने कही। ११ ग कीधी। १२ ख हुई, ग लागणी माडी। १३ ख उणरे, ग उणनै। १४ ख भीतर, ग माहे। १५ ख ग धोबी रे मित्र। १६ ग सगला ही।

इणरा हीज 'काम छइ'[1]। तरइ मित्र पिण कमल-पूजा कीधो।

इतरै घणी वेला हुई। वेउ[2] पाछा नाया। तरइ स्त्री वहिल पडि देहुरइ आवी। पछइ देहुरा माहि जाइ देखइ तउ वेउ रा धड पडीया दीठा।

तरइ अस्त्री विचारीयो। इया विहु रो कलक [3]मोनू आवड[3] जउ हू न मरु तउ।

इसो जाणि स्त्री पिण [4]कमल-पूजा करिण[4] लागी। तरइ माताजी हाथ झालीयउ। वेटी[5] हू 'थारइ साहस करि तूठी'[6]। वर मागि[7]। ताहरा स्त्री वर मागीयो। [8]अइ वेउ जीवाडो[8]। तरइ माताजी कहीयो। तीन ताला हु द्यु जितरइ आपो आपरो मस्तक धड उपरा जोडि।

तरइ स्त्री उतावली चूकि। भर्त्तार रो मस्तक मित्र रइ धड जोडीयो। मित्र रो मस्तक भर्त्तार रा धड ऊपरि जोडीयो। तरइ वेउ बइठा सजीव हुवा। माहो माहि वाद लागो। देवी अदृष्ट हुई। झगडो करइ। एक कहै स्त्री हु लेईस[9]। बीजो कहै हू लेईस।

तरै वैताल बोलीयो। महाराजा[10]। तू वडो विक्रमादित्य न्याव कीजइ। स्त्री कुणै नू आवै। तरइ राजा दूहो कह्यो।

[दूहो]

उपधोया अमृत अधिक, सब पानै पांनीय।
सुपे नीद्र भोगें[11] श्रीया, गात्रे मस्तक कीय* ॥२

पाटा तर—

१ ग मार्यो छ। २ ख दोनु, ग दोनु। ३ ग माहर माथै आवसी। ४ ख गलो काटण, ग माथो काटबा। ५ ग वेटा। ६ ख मागि तुठी। तुं मर मती। ७ ख ग मांग। ८ ख ए दोनु जीव, ग दोनु नैं जीवाडो। ९ ख लैस, ग लेस्यु। १० ग राजा। ११ ख भोगो।

---

* पत्र सं० ९ वा क भाग पूर्ण हुआ।

वार्ता

अर्थात्[1] जीयेरइ[2] सिर तिणरी ओया[3]। इतरौ राजा रा मुख थी सुणि मडो सीसम री डाल जाइ लागो। तरै राजा फिर जाइ मडो ऊतार ले आयौ।

इति श्री वैताल पचीसो री छठी कथा जांणवी[4] ।६

पाठान्तर—

१ ख इणरो अथ उ (ग ओ) छै। २ ख ग जिणरो। ख ग आगे यह पाठ है— मस्तक समीप (ग लारै) च्यार इंद्री। आंख १, नाक २, कान ३, रसना ४ (ग मुख ४)। तिण वास्ते मस्तक उत्तमांग नाम (ग तिणसु माथा नें आवै) सरीर इकेंद्री छै (ग डील लारै एक इंद्री छ) माथै साटै ऽस्त्री आवै। ४ ग सपूरणम।

वैताल-पचीसी री सातमी कथा

वले मारग चालता वैताल बोलीयउ[1]। राजा साभलि। चपावती नाम नगरी। तेथ चपकेश्वरि[2] राजा भुवनसुदरी बेटी[3] वर प्राप्ति हुई।

तरइ राजा कहीयो। स्वयवरा मडप रचीजइ। बेटी योग्य वर आणीजइ[4]। बेटी ६४ कला री जाण [कार] छइ। चतुर छइ।

[दूहा][5]

कह्यौ करइ गुरजन तणो, लजा सहित विवेक।
धीरज अरु गभीरता, उत्तम पुत्री एक॥१
तेरइ वर कारण चितवि, पूछो जाणी जाम।
पृथवी रा राजा सकल, कहि सभलाया ताम॥२

वार्त्ता

साभलि भुवनसुदरी[6]। पिताजी हू क्यु ही न जाणू। जीयइ मइ तीन गुण होइ तिको वर देप आणउ[7]।

ताहरा राणी राजा वैसि प्रतीत रा माणस[8] मेल्हि गुण पूछाया। स्वयबरा मडप माहै राजवी सर्व छइ। कुवरा रा गुण छइ सु दिपावौ।

तरै राजपुत्र एकण कहीयौ। मो मइ वडौ[9] गुण छइ। मइ[10] सीपीयो छइ। एकइ दिहाडइ[11] पछेवडो ५ वणू नीपजावू। एक देवता

पाठान्तर—

१ ख बोलीयो, ग कहतो हुवो। २ ख चपकेस्वर, ग चपकेसर। ३ ख ग पुत्री। ४ ख ग आणीजै। ५ ख ग मे आगे यह दूहा है—

रूप चतुरता माधुरी साभाविक (ग सुभाविक) गुण एह।
मृदु भाषण स्थिर (ग थिर) मापणो, विना चपलता देह॥

६ ग त्रिभुवनसुदरी। ७ ख भाणो, ग आणओ। ८ ग आदमी। ९ ग मोटो। १० ख मैं, ग मैं। ११ ख दिन, ग दिहाडा मे।

नू चढावू । बीजी ब्राह्मण नू द्यू । तीजी वैर[1] नू द्यू । चौथी आपणै काम लगाऊ । पाचमी वेचि पान पाऊ ।

एकणि[2] कहीयौ मैं बहुत शास्त्र पढीया छइ । तीजै कहीयौ । पसु पषो देस देश की भाषा समझू । चौथइ[3] कहीयो । मो सरीषउ बल किण ही मइ नही । महाबलवत छु । इम कह्यौ ।

हमइ राजा कह्यौ । बेटी[4] तौनु रुचे सु कहि[5] । पुत्री लाजतो न बोली । तरइ[6] वैताल बोलीयो । महाराज [7]गुणी तौ सगलाई छइ[7] । पिण भुवनसुदरी[8] कुणै नू दीजइ ।

तरइ विक्रम बोलीयो । बलवत पुरुष नै दीजै । वैताल बोलीयौ । बीजा क्यु निषेधीया[9] । राजा कह्यौ । पट[10] वर्ण सु सूद्र री आचार । सास्त्र पढीयो सु ब्राह्मण री आचार । भाषा समझै सु वैश्य कहीजै[11] । बलवत क्षत्री कहीजै । तीयइ कारण क्षत्री परणी । वीवाह कर परणाई ।

एतौ राजा रो कह्यौ साभलि[12] वैताल[13] सीसम री डाल जाइ विलगौ । तरइ राजा फिरि जाइ ऊतारि ले [14]आवतो हुवौ[14] ।

इति श्री वैताल पचीसी री कथा सातमी कही[15] ।७

पाठांतर—

१ ग स्त्री । २ ख बीजो राजपूत्र, ग एकण राजाकुवर । ३ ख चोथो, ग चोथो । ४ ग पुत्री । ५ ग वर वरो । ६ ग हिवै । ७ ख गुणवत सगला छै, ग गुण तो बराबर छै । ८ ग त्रिभुवनसुदरी । ६ ख निषेध कीया । १० ग कपडो । ११ ख रो आचार । १२ ख साभल, ग सुण । १३ ग मडो । १४ ख हालीयो, ग चाल्यो । १५ ग सपूर्णम् ।

वैताल पचीसी री आठमी कथा

मारगइ चालता वैताल बोलीयो[1]। कुसमावती नगरी गुणाधिप[2] राजा। तीयं री चाकरी करण नु एक राजपुत्र दश माणस साथ ले आयो। नित्य मुजरो करण जाइ पिण मुजरो न पावै।

इयु करता वरस वितीत हूवो। 'षरच निषूट गयो[3]'। तरै ऊवइ रा चाकर छोडि ग*या। रजपूत एकाएकी[4] रहीयो।

तरइ एक दिन राजा आहेडै[5] चढियो हूतउ। ताहरा वासै घोडै रे लागो[6] आयो। "बीजा सर्व तूटि रह्या[7]"। राज[ा] मार्ग भूलि गयो। त्रिपा लागी। चिंतातुर हुवउ। तव देषइ तउ एक रजपूत आवइ[8] छै।

राजा पूछीयो[9] तु कुण छइ। रजपूत तीन तसलीम[10] कीधी। पछै कहण लागो। महाराज हू चाकर रहण आयो हुतो। वरस दिन ताई रह्यो पिण मुजरो न पायो। "षरच हुतो सु षायो[11]"। चाकर नफर छोडि गया।

राजा बोलीयो। तइ[12] बहुत दुष पायो। राजपूत बोलीयो।

दूहा

वांछित जो [13]नाहि न लभ्यहइ[13], प्रभ कु दोस न देइ[14]।
जउ घूघू देखइ नही, सूरिज कहा करेइ[15] ॥१

पाठा तर—

१ ख कहै राजा सुणो, ग कहै छै राजा सामल। २ ख गुणाधिपति। ३ ग परचो पूटी। ४ ख एकाएक, ग एकाकी। ५ ख सिकार। ६ ख समीप। ७ ख बीजो साथ सगलो रहि गयो। ८ ख ग आवे। ९ ख पूछीयो, ग पूछीयो। १० ख सिलाम, ग सलाम। ११ ख परचो हुतो सो षाधो ग सब पुटो। १२ ख तो से ग थे। १३ ख लाभे नही। १४ ख ग देह। १५ ख ग करेह।

* पत्र स ६ का ख भाग पूर्ण

राजा-वाक्य

आयु विभव विद्या मरण, उदर भूति[1] ए पच।
सिरजे सिरजनहार सब, गर्भ मांहि जिम सच[2] ॥२
सेवा की सापुरिस की, निफल कदे न जाइ।
कालतर वीता वले, जब तब सहु भरिपाइ ॥३

वार्त्ता

राजा कह्यउ–तिस लागी, भुप लागी छइ। गाम कठै छइ।

तरइ रजपूत दउड नै जोवण लागउ। जोवता [3]पाणी निजर आयो[3]। अरु जावू रउ रुप फलीयउ छइ।

ताहरा पाणी पीयो। फल पाधा। पुसी हूवा। तरै रजपूत कहइ। म्हारइ पूठइ[4] घोडो पडो। इम[5] साहस वध नइ आवता '[6]जिके वासइ[6]' रहीया हुता तिके आइ मिलीया।

सर्व साथ भेलो हुदो। तरइ राजा रजपूत री प्रससा कीधी। राजा घरे आयउ। रजपूत नू सिरपाव दीयो। रोजगार करि नइ राखीयउ। उपगार मानीयो[7]।

पछइ[8] एक दिन रजपूत नदी री दिस जगल गयो। तठइ देवी री देहरउ[9] देपि माहि जाइ दर्शन कीयो। तितरइ[10] एक नाइका[11] देवी री पूजा करि चली। रजपूत दीठो[12]। मन मइ घणी चाहि राखी। पिण उवइ मानीयो नही।

पाठान्तर—

१ ख वृति ग वृत। २ ख प्रति मे आगे यह पाठ है— 'रजपूत वाक्य' ३ ख एकै ठोड पाणीं छै, ग एक ठिकाणैं पांणी मिल्यो। ४ ख पूठे, ग पाछै। ५ ख इये भांति, ग इण भांत। ६ ख पवास पासेवान पुठे। ७ आगे ख ग मे यह सोरठीया दोहा है—

जिको करै उपगार, उह फिर तासो उपगरै।
दोउ उतारण भार, उ रहै धारण भार को ॥ १

८ ख एके समे ग हिवे। ९ ख देहुरो, ग देहरो। १० ख उण समय (ग समै) ११ ख नायिका, ग नायका। १२ आगे यह पाठ है— ख देपी मुरछावत हुयो, ग मोहीत थयो।

रजपूत राजा नू आइ नाइका रा रूप री वात कही। ताहरा राजा कह्यो। 'प्रात समै'[1] मोनू ले जाइ दिपावउ'[2]

तरइ वेऊ स्नान करि माताजी रउ दर्शन करि बेठा। एतइ नाइका देवगना सी आइ पूजा कर चाली। तव राजा सेवक[3] सहित नजरि पड्यो। राजा रो रूप देपि वोली। राज 'आग्या द्यो सु करू'[4]।

राजा कह्यो। म्हारो चाकर छइ। तिण नू वरि। नाइका वोली। म्हारी प्रीत तोसु छै। राजा कह्यो। म्हारी आज्ञा छइ। इयइ नू वरि।

तव राजा सेवक[5] नू परणाय आपणी[6] राजधानी आया। इतरी वात कहि वेताल वोलीयो। महाराज ईया विहु माहि सचाधिक[7] कुण।

राजा कह्यो सेवक सचाधिक[8]। वेताल कह्यो। राजा देवागना सी* पाइ चाकर नू दीन्ही। सु सचाधिक क्यु न कह्यो।

विक्रम कहै छइ। सेवक पहिली उपगार कीयो[9]। अरु नाइका सुद्री[10] हती।

[दूहा]

कीयइ[11]ऊपर सव करै, उपगारे उपगार।
अण कीयइ[12] उवर करइ, सो सचाधिक सार॥१

[वार्त्ता]

इतरी वात सुणाइ राजा रा मुप थी ऊतरि वइताल सीसम री डाल जाइ लागो[13]। राजा फिरि[14] काघइ कर ले चल्यो।

इति[15] श्री वइताल पचीसी री आठमी[?] कथा [16]पूरी हुई[16] ८॥

पाठांतर—

१ ग प्रभाते। २ ख दिपाय, ग दिपालें। ३ ग राजपुत्र। ४ ग हाजर छु। ५ ग सेवग। ६ ख ग आपरी। ७ ख सत्याधिक, ग सत्यवादि। ८ ख सत्वाधिक, ग सत्यवादि। ९ ख कीयो, ग कीनो। १० ग सूद्र। ११ ख कीये, ग कीय। १२ ख कीयें। १३ ख ग विलगो। १४ ख प्रति मे आगे यह पाठ है—"जाइ उतारि वैताल नु"। १५ ख बेताल पचीसी नी अष्टमी, ग वैताल पचीसी री आठमी कथा। १६ ग संपूरणम्।

*पत्र सं० १० का क भाग पूर्ण।

वैताल पचीसी री नवमी कथा

फिर वैताल नू 'ले आवता'[1] राजा आगै वैताल कथा कहै छइ। सुणि[2] हो राजा।

मदनपुर नगर। मदनराइ राजा राज करइ। तीयरइ हिरण्यदत्त[3] वाणीयउ। तीयइरी बेटी कामसेना सपीया साथै सावण री तीज पेलण[4] नु वाहिर गई।

तेथ धर्मदास रो बेटउ सोमदत्त मित्र सहित प्याल देषण नुं आयो। तीयइ कामसेना नू देषि कह्यो। इसडी स्त्री जे होइ तउ जीवित[5] सफल।

इसो[6] चितवि रात्रि सूतो। नीद न पडै। [7]कष्टइ करि प्रात लीयो[7]। तरइ उठि ऊदास थको जगल नू गयो। तेथि[8] दैवसयोगइ कामसेना मिली[9]। ताहरा सोमदत्त कह्यो। मोसू सभोग करइ[10] तउ हू जीवू। नहीतरि तउ तो ऊपरि मरीसि। तौनू हत्या[11] देईस। म्हारै काम रो तीर कालिजइ माहि लागउ छइ मरम ठोड। तीयै रो उपचार पाटो तू छइ। तरै कामसेना दूहो कहो।

[दूहो]

अद्भुत विद्या काम री, छोडइ तीर अनेक।
घाव न दीसै तन किहू, करइ कालिजइ छेक॥१

वार्त्ता

इतरो सुणि कामसेना कहण लागी। हू कवारी[12] छु। कवारी

पाठान्तर—

१ ख ल्यावतां। २ ख सामलो ग सामल। ३ ग हिरणदत्त। ४ ख रमण। ५ ख जीव, ग जिवतव्य। ६ ख इसो, ग इम। ७ ग घणां कष्ट सु रात्र बोलाई। ८ ग तठै। ९ ग साह्मी थाई। १० ख ग करिस। ११ ग हित्या। १२ ख कुमारी, ग कुवारी।

रो पाप लागसी । हमारु काई वात नह वइ । तू धीरज पकडे । म्हारो बोल छै । हु परणीजिसि[1] तरइ पहिली तो आगइ आइसि । पछै धणी सु रमिसि । पछइ[2] सोमदत्त कह्यो । थारो व्याह कदि[3] हूसी । तरै कह्यो दिन पाच मैं हूसी[4] । तउ तू सुस करि । ताहरा कामसेना सुस करि घरि आई ।

सोमदत्त घरि गयो । पछै पाचमइ दिन वीवाह हूवउ । तरै परणीज नई मालीयइ गई । ताहरा भर्त्तार आलिंगन[5] री ताई पकडी ।

तरै भर्त्तार नू कह्यो । मोनू सुस[6] छइ । अनइ सोमदत्त री वात सर्व भर्त्तार आगै कही ।

तरइ भर्त्तार कह्यो । थे अबार[7] ही तुरत आभरण[8] पहिरीया ही जाइ आवउ । ढील न करउ ।

तरइ कामसेना मालीयै थी ऊतरी नइ सोमदत्त रइ घर नु हाली[9] । विचै आवता चौरै पकडी । कह्यो तू कुण छै ? तरै कह्यो हिरण्यदत्त री बेटी छु । कामसेना नाम । सोमदत्त पासि बोल री बाधी[10] जाऊ छु ।

तरै चौर बोलीयो । इसडो[11] बोल थारो छै तो मोसु[12] बोल करि जा नही तउ आभरण ऊतारि लेईस । ताहरा* चोर सू पिण बोल दे आगै गइ ।

पाठातर—

१ ख परणीजीस, ग परण सु । २ ग तरै । ३ ग कद । ४ ख हुसी, ग होसी । ५ ख भादि व्योहार, ग मालिगन व्यवहारादिक । ६ ख सोस ग पण । ७ ख अबारू ग हमारोज । ८ ग गैहणा श्रृगार । ९ ख गई, ग चाली । १० ग प्रति मे भागे यह पाठ हैं —"भर्तार कनै सीख मांग नै । ११ ख इसो, ग इसो । १२ ख मोसो ।

---

*पत्र स० १० का ख भाग सपूर्ण ।

सोमदत्त वैठो हुतो । जाइ उभी रही । तरै सोमदत्त कह्यौ । [1]इयइ वेला[1] कुण छइ । तरै कह्यौ । हु कामसेना छु । मे तोनु[2] वोल दीयो हुतौ । तिका ग्राज परणी छु । पहिलो[3] तो कन्हे ग्राई छु । म्हारौ वचन हुतौ ।

तरइ कह्यौ । सावासि तोनु । तइ थारउ भलो वोल पालियो । वले सावासि थारइ भर्त्तार नु । इसडो साहस कीयो । तोनु ग्रठै मेल्ही छइ । हु पिण हमारु म्हारी ग्रस्त्री सु भोग सयोग करि नै वैठो छु । ग्रस्त्री पिण वईठो छइ ।

तरइ कामसेना नु मालीयै माहे वुलाइ नै कह्यौ । तू म्हारै घर्म वहिन छइ । तरइ वेस ग्रहणौ माला पहिराइ नइ सीप दीन्ही ।

तरइ उठा थी [4]नीसर नइ[4] चोर पासि ग्राई उभी रही । चोर पूछीयो । तोसु कासु कीयो । तरै [5]साच बोली[5] । धर्मदत्त मोनु [6]वहिन कर[6] वैस ग्रहणौ दे नइ सीप दीनी ।

तरइ चोर देप नइ विचारीयो । इण रउ धणी[7] तउ इसडो साहस कीयउ । ग्रापरी ग्रस्त्री [8]पर पुरुप कन्हइ[8] मेली । नइ ऊवइ रो धीरज[9] सराहीजइ । इसडो रूपवत माणस । तिण तु वस्त्र दे ग्रहणा दे वहिन करि मेली । तउ ईयइ नू पोसू तउ मोनु धिक्कार[10] ।

इसउ[11] विचार करि कह्यउ । वाई तोनू मइ[12] छोडी । तू बीहइ मती । हु साथै हुइ नइ पहूचावु । तरइ चोर साथै हुइ नइ मालीयइ[13] ताई पहुचाइ[14] ग्रापरइ घरि[15] गयौ ।

पाठा तर—

१ ख इस वेला, ग इस समै । २ ग थानै । ३ ग प्रति मे ग्रागे यह पाठ है— भर्त्तार कनै सीप माग । ४ ख नीसरि, ग शीप कर चाली । ५ ग उण साची बात सव कही । ६ ख घम वहिन कहि, ग वैहन कर बोलाई । ७ ख भरतार, ग भर्तार । ८ ख परण बीजै पास, ग बीजा पाश । ९ ग धीय । १० ख ग धिकार । ११ ख ग इसो । १२ ख मे ग मेह । १३ ख मालीयैं, ग घर । १४ ख ग पोहचाय । १५ ख घरे, ग ठिकाणे ।

तरइ वइताल बोलीयो। (चोर क्यु सच्चाधिक) महाराज इयां तीना माहे कुण सच्चाधिक।

विक्रम कहै छइ चोर सच्चाधिक। तरइ वैताल बोलीयो। चोर क्यु सच्चाधिक कहइ छै। भर्ता तो कामध। अर ऊवै नु सोस। बिजही[1] दिन सोमदत्त पासि विना गया आविसी[2] नही। तीयइ कारण तुरत मोकली। अरु सोमदत्त वीर्य विना हूवउ[3]। अनइ राजा रो डर पर[4] स्त्री सू रमीया। तीयइ कारण छोडी। पिण चोर निकारण छोडी। तिण वास्तइ चोर सच्चाधिक[5]।

इसी[6] वात सुणि वइताल[7] नीसरि सीसम री डाल जाइ विलगउ। राजा फिरि जाइ वैताल नु ऊतारि काधइ ले आवतउ हूयउ।

इति श्रीवइताल[8] पचीसी री नवमी कथा कही ॥

पाठांतर—

१ ख बीजेइ, ग बीजै। २ ख आवसी, ग रंहसी। ३ ख हुवो, ग हूयो। ४ ग पारकी। ५ ग. सत्यवान हूवो। ६ ग इसरी। ७ ग भडो। ८ ख वेताल ग वेताल।

वैताल पचीसी री दसमी कथा

फिर मार्ग[गं] [1]ले आवता[1] वइताल वोलीयो[2]। राजा साभलि। गौड देस रै विपइ पुन्यवर्द्धन नगर छइ। तेथ गुणसेपर राजा। तीयरइ अभयचद [3]वाणियो परधान[3]। तीयइ राजा नू शिवधर्म हुता जैनधर्म आणीयो[4]। ताहरा प्रजा पिण जैनधर्म हूई।

दूहा

जिसडो होवइ राजवी, तिसी[5] प्रजा पिण होइ।
जिण मारग राजा चलइ, तीयउ[6] चलइ सहु कोइ ॥१॥

ताहु राजा सू चोर न डरइ। चोरी करइ। वाट[7] पाडिवा लागा। राज मा*हि उपद्रव होवण लागा। प्रजा पराव हुई। यु करता कालातरेण राजा मृत [हुओ]।

तीयरइ[8] पुत्र धर्म्मध्वजकुमार राजिपाट वैठो। तीयइ[9] रीस करि अभयचद परधान नु पकडि लूटि पोसि देस वाहिर[10] काढीयउ अरु देश माहि आपणी आण[11] वरताई। चोर मारीया। दुष्टा नु पकडि सजा दीनी। तरइ सर्व धर्म चलइ लागा। निकटक राज करइ लागा। पूजा भागी हती सु सर्व [12]करिवा लागा[12]।

[13]एक समय[13] धर्मध्वज राजा जनानो करि सर्व राणी साथि

पाठान्तर—

१ ख माहि आवता, ग मैं चालता। २ ग बोलायो। ३ ख नामे साह परधान, ग प्रधान। ४ ख आणीयो, ग आण्यो। ५ ख तिसी, ग तिसडो। ६ ख तीये, ग तिणं। ७ ग मारग। ८ ग तिण रै। ९ ख ग तिण। १० ग वारै। ११ ख आण दाण, ग आण दान। १२ ख चालण लागी, ग हूवण लागी। १३ ख एके समे, ग हिवै एक दिन।

---

*पत्र स० ११ का क भाग पूण।

ले नइ वागि गयो। तेथि जलक्रीडा करता एक कमल सखी आणि[1] राणी चद्रावली रइ हाथ दीधउ। देता छिटक पगा ऊपरि पडीयउ[2]। [3]तीयइ सू[3] राणी रा पग जपमीया मुरड पडी। बीजी राणी रइ चद्रमा रा किरण लागा तेथ[4] छाला हुवा। तीजी राणी वागे माहे हुती। अर गाव माहे मूसल सू धान पाडतो[5] साभलि हाथ दूषण[6] लागा।

इतरी वात साभलि नइ वैताल राजा नू पूछीयउ[7]। इया तिहूं राण्या माहे अति सुकमाल कुण।

राजा बोलीयो। जीयइ रा एथ[8] वैठो रा हाथ दूषीया तिका अति सुकमाल।

इसडी वात सुणि वैताल[9] उडि सीसम री डाल जाइ विलगो। राज फिर उथ जाइ उतारि काधइ[10] करि ले आवतउ हूवउ[11]।

इति श्री वइताल पचीसी री दसमी कथा कही[12]। १०

पाठान्तर—

१ ग आणीयो। २ ख ग पडीयो। ३ ख तिणसो, ग तिण सु। ४ ख तिण सु, ग जिण सु। ५ ख पाडीजतो, ग खाडतो। ६ ग दुखवा। ७ ख पूछीयो, ग पूछ यो। ८ ख इठे, ग ठिकाणे। ६ ग मडो। १० ख काधे। ११ ख हूयो। १२ ग सपूरणम्।

वैताल पचीसी री ग्यारमी कथा

फेरि[1] राजा ले आवता बोलीयउ[2]। राजा साभलउ। रत्नाकर[3] नाम नगर। तेथ भल्लभ[4] नाम राजा अरु केसव नाम प्रधान। भार्या लिपमी[5]। राजा मन मइ चितव्यउ। प्रियागना सेती सभोग[6] सुप कीजइ। सोई जन्म रो फल।

दूहा

जीवीजे त्रीय कारणइ, और प्रयोजन नाहि।
त्रीया नहि अरु तेज[7] नहि, तो काहे भार मराहि॥१॥

वार्त्ता

तउ जव ताई त्रीया अरु तेज छइ तव ताई सग कर लीजइ। न करसी तउ पछतावसी। इसौ[9] विचार [कर] राजा परधान नु राज सौपि आप अतेउर[10] माहि पइठउ। राज री चिता रहित हुवौ।

एक समइ[11] परधान आपणइ घरि वइठो हतो अरु[12] स्त्री पूछीयो। आज काल्हि तो थाहरो [13]डील दुर्बल दीसइ[13]।

तरइ परधान कह्यो। राज्य री चिता रहइ तीयै कारण दुर्बल छु। तरइ स्त्री कह्यो। राजा सू वीनति करउ। तीर्थ-जात्रा चालो तो मास ४ चिता थी छुटउ।

तरै राजा नू कह्यो। तव राजा राज [14]बीजा नु भलायो[14]। परधान नु सौप दीनी।

पाठातर—

१ ख फिर, ग फेर। २ ख बोलीयो, ग बोल्यो। ३ ख रतनागर। ४ ख ग वलभ। ५ ख ग लक्ष्मी। ६ ग सगम। ७ ख तेज, ग नेह। ८ ग जठा। ९ ख इसो, ग इम। १० ख मोहल, ग अतेवर। ११ ख समे, ग दिन। १२ ख तिवारे, ग तिवारै। १३ ख डील दूरवल हुयो, ग डीले दूवला हुया। १४ ख बिजे ना सोपा, ग और नु सुप्यो।

तरइ आपरो साथ ले 'सेतवध रामेसर'[1] हालीयो[2] । उठै जाइ श्रीराम लषमण सीता हनुमानजी रो दर्शन करि बइठउ[3] । तठै समुद्र माहे एक कल्पवृक्ष[4] ऊपरि रतनजडित सापा मोतीया रा गोछा प्रवाली [5]पल्लव[5] तीयै ऊपरि'सोनारइ पलिग ऊपरा[5] एक देवगना दीठी । वीणा वजावती '[6]दूहा पढती दीठी[6] ।

दूहा

पृथी मइ[7] मानव ऊपजे, कीयो न त्रीय[8] विलास ।
सो पाछै पछतावसी, मरतौ लेहि[9] ऊपास ॥१॥
''सार देवी''[10] जगत सहु, सुर नर दैत तिर्यंच[11] ।
तिण कारण समरो सवइ, जो चाहुउ महि मच[12] ॥२॥
पुव्वै[13] जाणी जालीया, अर नहि जाणी जाह ।
वइ विलसइ धन कामनी, वाया[14] वैरागी माहि ॥३॥

वार्त्ता

तीन दूहा कहि जल माहि अलोप हुई । इसो तमासो अधारी चवदिस हूती तिण दिन मन्त्री दीठो ।

कितराएक दिन मुहतो तीर्थ करि घरि आयो । राजा सू[15] मिलीयो । राजा पूछीयो । कठइ ही तमासो दीठउ ।

मन्त्री कह्यौ एक अजरिज[16] दीठो । अधारी चवदिस एक कल्पवृक्ष री साषा दरीयाव सू बाहरि आवइ छइ तठे देवगना दीठी । सर्व सरूप दीठउ । निसडउ राजा नू कह्यउ[17] ।

पाठातर—

१ ख ग स्वेतबध रामेस्वर । २ ख ग गयो । ३ ख वेठो, ग वठो । ४ ख कलपदृप सोन पिलग । ५ ख प्रति मे यह पाठ नही है । ६ २ राग रग करती । ७ ख मे, ग मैं । ८ ख त्रीया, ग त्रिया । ९ ख लहै, ग लहउ । १० ख सारे दीवी, ग सोहै देवो । ११ ख निजच, ग तिरजच । १२ ग सच । १३ ख पूछे, ग पूजो । १४ ख वीया । १५ सो, ग सु । १६ ख अचरिज, ग तामासो । १७ ख कहि सुणायो ।

---

* पत्र स ११ का ख भाग पूण ।

तरइ राजा साभलि आपरो राज 'मुहता परधान'[1] नु भलाइ सेतवध रामेसर फरसण नु हालीयो[2]। तठइ जाइ तीर्थयात्रा करि द्रव्य परच वइठा छइ।

तिसडै[3] नाइका सहित कल्पवृक्ष [4]वाहिर आयो समुद्र थी[4]। तीयै ऊपरा देवगना सी वइठी देपि। राजा जाइ कन्हइ [5]उभउ रह्यउ।

तरइ देवगना पूछीयो। केथ आईस। राजा कह्यो। [6]तो पासि आईस[6]। नाइका वोली। हू तो कवारी छु। अधारी चवदिस मोनू वकसो[7] तो परणीजू।

राजा ऊवइ रउ कह्यउ करि परणी। पछइ अधारी चवदिस आई। तरइ स्त्री वोली मोसू दूर[8] रहिज्यो[9]।

तिसडइ एक राप्यस आयो। स्त्री रो हाथ झालि[10] कामचेष्टा करण लागउ। तरइ राजा वोलीयउ। रे पापिष्ट राप्यस मो जीवता तू भोगवि सकइ नही। मोसू सग्राम करि।

इसो वचन साभलि[11] राक्षस राजा [12]नइ मारण धायो[12]। राजा खड्ग काढि राप्यस [13]नइ मारीयो[13]। राक्षस मूअउ। राणी देपि कह्यो। धन्य धन्य हो सुभट। मोसू वडो उपगार कीयो[14]। म्हारै वडो कलक हुतो सु तइ दूरि कीयो।

दूहा

गिर गिर हीरा होइ[15]नही, गज गज मोती नाहि।
वन वन चदन होइ नहीं, सुभट न हूइ सब ठाहि॥१॥

पाठा तर—

१ ख ग मत्रीश्वर। २ ग चाल्या। परणीजण रो मनोरथ करनै चाल्या। ३ ख उण समै, ग तिण समै। ४ ख ग समुद्र थी बाहिर आयो। ५ ख पास, ग पासै। ६ ग दूर देशातर थी थां पासै आया छा। ७ ख ग बगसो। ८ ख दूरि, ग अलगो। ६ ख प्रति मे आगे यह पाठ है—'तब राजा पडग लै प्रदिप्ट थको समीप रह्यो।' १० ख झाल, ग पकड। ११ ग सुण। १२ ख साहमो हूवो, ग साहमो आयो। ११ ख रो मस्तक छेद्यो, ग रो मस्तक काट्यो। १४ ख कीयो, ग कीधो। १५ ख छै।

वार्ता

राजा कह्यो। किसइ[1] कारण काली चवदिस तोनइ राक्षस लागइ। राणी कहइ छइ। हु सुरसुदरी नाम विद्याधरी। सो म्हारो पिता मो विना [2]भोजन करइ[2] नही।

एक दिन अधारी चवदिस हूती। हु भोजनवेला हाजरि न हुई। ताहरा मोनू सराप दीयउ। काली चवदिस तोनू राक्षसि[3] लागसी। तरइ मइ कह्यो। म्हारो सराप [4]मोक्ष कदि होसी[4]। तब पिता कह्यो तोनु मनुक्ष[5] परण राक्षस नु मारसी तद सराप पूरो होसी। [6]ति[6]को तिम हीज हूवो[*]। राष्यस मारीयो। हमइ[7] म्हारा पिता कन्है जावा[8]।

तरै राजा कह्यो। म्हारो कहीयो करो तउ म्हारो नगर राज-धानी देष नइ [9]पछइ पीहर जास्या[9]।

तरइ राजा आपणी राजधानी आइ षबरि दीधी। तरै मुहतै हाट बाजार सिणगारीयो। [10]वत्रीस बद्ध नाटक रच्या[10]। गाजा बाजा करि सूहव स्त्री गीत गावता वर वेहडो कुभ कलस वदाइ राजा नु माहे लीयो।

राजा आइ सुप भोगविवा लागउ। [11]ति वारइ[11] कितराएक दिन वितीत हूवा। तरै राणी राजा नू कह्यो। [12]पिता रइ[12] जाईस। राजा कह्यो थाहरइ दाइ त्यु करो।

राणी आपणो परिग्रह [13]ले विद्या सभाली। विद्या फुरी नही। तरइ राजा पूछीयो। वयु विद्या फुरी नही।

पाठातर—

१ ख किस, ग किण। २ ग जीमतो। ३ ख राष्यस, ग राक्षस। ४ ख कदि मोष्य हुसी, ग कद उतरसी। ५ ख ग मनुष्य। ६ ख ग तिका (ग ते) बात साची हुई। ७ ग हिवं। ८ ख ग चालो। ९ ख पछै थारे पिहर जासां, ग पछ थापे साथे जावसा। १० ग प्रन घर २ रग वधामणा हुम्रा। ११ ग इम सुख विलसता। १२ ख ग पीहर। १२ ग परिवार।

---

* पत्र स० १२ का क भाग पूर्ण।

तरइ राणी कह्यो हु विद्याधरी हुती अरु मनुष्य सु [१]आसक्त हुई[१] तीयइ कारण विद्या फुरी नही। (तरइ राजा पूछीयो क्यु विद्या फुरी नही।)

तरै राजा मन मै हर्षित[२] हुवो जो म्हारइ विद्याधरी स्त्री। बीजइ घरि मनुष्य रइ विद्याधरी नही। इसो जाणि सँदाना[३] वजाया। नौवत नगारा वजाइ महोच्छव कीयो। तीयइ महोच्छव करतां मुहतउ[४] हीयो फूट मूअउ।

दूहा

क्षमावत आचारसुध, जाणइ सास्त्रविचार।
ततवेता अरु उद्यमी, दाता श्रीमत सार॥१

सत्यवादो इद्रीदमन, उपगारी मतिवत।
इसो मत्र[५] कहा पाईयइ, मन वच क्रम करि सत॥२

वैताल वात कहि पूछीयो। महाराजा विक्रमादीत प्रधान किसै कारण मूअउ[६]।

तरइ राजा कह्यो। मत्री "असहमान थकउ" मूअउ। जउ राजा रइ घरि विद्याधरी आई। राजा ईयइ सु स[सु]पभोगवस्यै। मुहतइ देवगना रो रूप दीठउ हूतो। तिणइ सह्यो[८] न गयो। अनइ अर्द्ध राजीयो हुंतो। तियइ कारण मूयउ।

इसी वात साभलि वइताल[९] पाछो जाइ सीसम री डाल जाइ लागउ[१०]। तरइ राजा फिर जाइ ऊतारि ले आवतउ हूअउ।

इति श्री वइताल पचीसी री कथा इग्यारमी[११]।

पाठान्तर—

१ ग भोग कीयो। २ ग पुस्याल। ३ ख साद्यना, ग नगारा। ४. ख मत्री, ग मत्रीशर। ५ ख मत्रि। ६ ख मूवउ, ग मूवो। ७ ग अकिस्मात। ८ ग सेहणो। ९ ग मडो। १० ख विलगो, ग टंगो। ११ ग सपूरणम्।

वैताल पचीसी री बारमी कथा

'राजा मार्ग्र[गं] रइ विषइ ले आवतउ हूतउ'[1]। वैताल बोलीयो। साभलि हो राजा।

चोडापुर[2] नगर। तेथ छत्रमणि राजा। तीयरइ देवस्वामि[3] नाम पुरोहित। पिण किसडो छै।

दूहा

रूप जिसो मनमथ हुवइ[4], वाणी वृस्पतिवार[5]।
द्रव्य कुबेर जिसो करी[6], ज्ञानी जोवन सार॥१

तीयइ किणही ब्राह्मण री बेटी तारालोचनी परणी। तीया[7] बिहू माहि प्रीत अधिक हूई। एकद उस्नकाल[8] मालीयै रइ चउक चादणी रा विछावणा करि सूता। वसत्र दूरि कीया छइ गरमी रइ वासतै। तिण समै एक विद्याधर आकासगामी तारालोचनी नागी[9] देषि ऊठाइ ले गयो। पछै देवस्वामि[10] जागि नइ देपइ तौ* स्त्री नही। अर्द्ध रात्रि समय घर सोधि दीठो नही।

प्रात हूवो तब ढढेरो दिवरायो[11]। नगर सारो ही सोभीयो[12] पिण लाधी नही। तरै स्त्री रो वियोग सह्यो न जाइ। तरै घर थी नीकलि विलाप करण लागउ। हे प्रिये केथि गई। मोनु दर्शन दै। हे प्रिये जो पवन थारी देही लाग नइ म्हारे शरीर लागै छइ तीयइ सो सजीवइ छइ।

पाठांतर—

१ ख मोरग चालतां। २ ख चडपुर ग चद्रपुर। ३ ग देवसर्मा। ४ ख हुवै, ग हूवै। ५ ख ग गुरुवार। ६ ख ग कहै। ७, ख ग तिण। ८ ख ग ग्रीष्म रित। ९ ख वस्त्रहीन, ग नग्न। १० ग दवशर्मा। ११ ख दिवाइ, ग फेरायो। १२ ख दीठो ग, जोयो।

---

*पत्र सं० १२ का ख भाग पूर्ण।

दूहो

वर्षाकाले हल्लणा[1], योवन[2] समय[3] वियोग ।
वृद्धावस्था वेखरच, तीन दुप महा सोग[4] ॥१
एहु इवडो अवछडी[5] , कै मालीयइ कि वृक्ष ।
कइ करिनो[6] तन चीवणी, कइ करि माला अक्ष ॥२

अइसो[7] विचार तापस[8] [9]रो वेस करि देवस्वामि[9] देसातर गयौ । तेथ मध्यान समइ मार्ग्र(र्ग) चालता पलास रा पाना रो पुडीयौ करि ब्राह्मण रइ घरि जाइ भिक्षा मागी । देवस्वामि[10] विचार करइ छै ।

दूहो

पूर्व जन्म नाना कीयो, मागित[11] आयो गेहि ।
इयइ जन्म तो सुपीयो, घोपि लीयो देहि ॥१
सो मइ विरलौ सूरिमो, सहसे[12] पडित होइ ।
कहणो साल सईकडा, पिण दाता व्है[13] कि न होइ ॥२

वार्त्ता

ब्राह्मण री स्त्री गुणवत जाणि तीयै रो पुडीयो क्षीर पाड घृत सेती भरि दीयो । सो भिक्षा ले[14] तलाव गयौ । तेथ[15] वड री छाडी पुडीयो मेल्हि आप स्नान करण री ताई गयो ।

वासइ कालइ सर्प नीसरि[16] मुष पसारीयो । नीचइ पुडीयो हुतौ तीयइ माहि गरल सपडीयौ हुतो । ब्राह्मण आइ अग्यान थी षीर पाई । घडी एक पछइ ब्राह्मण नू लहरि वाजी ।

तरइ घूमतो घूमतउ ब्राह्मणी[17] रइ घरि जाइ पडीयो अरु कहीयो । तइ मोनु विष क्यु दीनौ ।

पाठान्तर—

१ ख चालणो, ग हालणो । २ ख जोवन, ग जोबन । ३ ख समे । ४ ख ग रोग । ५ ख अवयडी । ६ ख करणो, ग करनौ । ७ ख इसौ, ग इसो । ८ ख ग तपसी । ९ ग हाय । १० ग देवसर्मा । ११ ख मगत, ग मागवत । १२ ग सहजे । १३ ख होय, ग होवे । १४ ख लें ग ले ने । १५ ख ग तठें । १६ ख प्रति में आगे "दोनें उपर" पाठ है । १७ ख ब्राह्मण, ग बामण ।

इसो कह्यां थका लोक भेला हूवा। लोकै दाठउ ब्राह्मण मूग्रउ। तरइ ब्राह्मण अस्त्री नु हत्यारी कहि घर हुतो 'परही काढी'[1]।

तरै वइताल[2] कहीयो राजा नु ब्राह्मण री पाप कुणंन्[3]। राजा कहीयो सर्प्प[4] रई[5] मुपि[6] तो विष सदा रहई। तीयई नू काहिण रो पाप। ब्राह्मणी भिष्या भक्ति कर दीनी। तिए नू पाप को नही। ब्राह्मण अज्ञान थी पायउ। तीयै नू पाप नही। जिको अण विचारीयो कहइ तीयई[7] नु पाप।

इसा वचन राजा रा सुणि वैताल[8] जाई सीसम री डाल जाई लागउ। फिर राजा जाई ऊतारि [9]ले आवतऊ हूयउ[9]।

इति श्रीवैताल पचीसी री कथा बारमी कही[10] १२॥

पाठांतर—

१ ख काढ दीवी, ग बाहिर काढि। २ ख वेताल, ग वैताल। ३ ग किण नुं। ४ ख ग सप। ५ ख ग रै। ६ ख ग मुख। ७ ख ग तिण। ८ ग मढो। ९ कांधे कर हालीयो। १० ग सम्पूर्णम्।

वैताल पचीसी री तेरमी कथा

मारग[1] चालतां वैताल कहइ छइ । राजा साभलि । चदेला नाम नगर । रिणधीर राजा । तीयै नगर माहि चोरी बहुत होवण लागी । [1] दिन २[2] पुकार आवै ।

राजा चिता करि एक पोजी रापीयो जिको अधारइ पोज[3] काढइ । पाणी मइ पोज काढइ । वरस दिन सू पोज पिछाणइ[4] ।

एकं दि*न आधी रात धर्म्म ध्वज[5] साह रै घरे चोर पइठो[6] । ताहरा साह री वेटी सुक्षोभिता[7] नाम राड हुई हुती । घर वाहिर नीकलती न हुती । अर घर माहि मरद को आवतो नही । अर चोर आयो । तीयइ मरद जांण[8] कामचेष्टा हुई[9] । चोर हाथ छोडाइ गहणा ले नाठउ ।

(प्रभातइ[10] पवरि हूई ।) रातै चोर नीकलण लागो तरइ सुक्षोभिता चोर रउ हाथ गहरीयउ । चोर जाणीयो मोनू पकडइ छइ । चोर हाथ छोडाइ गहणा ले नाठो । अस्त्री रो मनोरथ मन मइ रहीयउ । जाणीयउ इणसु काम सेवा करु । पिण नीकलि गयउ ।

तरइ चोर री पवर हूई । पछइ प्रभातइ साह रावलइ पुकारीयउ[11] । तरइ राजा कोटवाल नू कह्यौ । पोजी ले जावो । चोर

पाठा तर—

१ ख मारग । २ ख ग नित्य । ३ ग पग । ४ ख पिछाणं । ५ ख ग धमध्वज । ६ ख घुसीयो, ग चोरी कीधी । ७ ख सुपोभता । ८ ख ग मु देपि । ९ ख प्रति मे आगे यह पाठ है—"चोर जाणियो मोनु पकडै छै" । १० ख प्रभात, ग प्रभाते । ११ ख पुकारीयो, ग पुकारयो । १२ ख ना तेडाय, ग ने तेड ने ।

---

*पत्र स० १३ का क भाग पूर्ण ।

नु [1]जीवतउ ले आवो पकड नइ[1]। घणी चोरी कीधी छइ। इयइनु कुमीच मारणो छइ[2]।

ताहरा राजा री हुकम पाइ कोटवाल षोजी नु ले खोज काढतउ थकउ पग ले नइ चोर रइ घरि आयो। तरइ चोर नु बेटा बेटी अस्त्री माल सहित पकडीयो। पिण चोर जिसडो देसोत[3] हुवइ तिसडो दीसइ। महा रूपवत। आणि राजा रइ हजूर कीयो।

राजा कहीयो। ईयइ नु नगर माहि[4] फेरि सूली द्यउ[5]। तरइ चौहटइ फेरता २ धर्म्मध्वज साह [6]रइ बारणई[6] आया। तरई[7] साह री बेटी रूप देष नई सकाम हूई। छुटई तउ भलउ।

तरइ बाप[8] नु कहीयउ। इयइ[9] चोर आपणउ घर मुसीयउ। तीयइ वेई सूली दीजइ छइ सु अपराध तोनु[10] छइ। कइ थे इण नू छोडावो। म्हारै सासरै रउ ग्रहणो छइ। सु हु दया करि देईस। [11]धर्म नइ[11] जस थानु होसी।

इम पिता नु कहि चोर सू [12]निजर बाजी लगाई[12]। चौर साह री बेटी रउ विचार साभल नइ कहइ।

दूहा

मूरष घरि लिषमी हुवइ[13], अरु बिद्या अकुलीन।
महिला मानइ नीच कु, बरसइ मेह गरीन[14] ॥१

जूवारी साच[15] न कहइ, काग पवित्र न होइ।
काम न त्रोध रो उपसमइ[16], राजा मित्र न होइ ॥२

पाठान्तर—

१ ख जीवतो पकडजो। २ ख छै। ३ ख देसोत। ४ ख माहि, ग दोलो। ५ ख घो, ग घो। ६ ख रे बारणे, ग रा गर मनें। ७ ख जो, ग तिसै। ८ ख साह, ग पिता। ९ ख ग इण। १० थानु। ११ ग. इण काम थो। १२ ख नेत्र जोडीया। १३ ख हुवें, ग हुवें। १४ ख गिरीन, ग गिरिण। १५ ख सति, ग सत। १६ ख क्रमसै।

ए दोइ दूहा कहि हसीयो अनै तुरत[1] रूनउ[2]।

इतरी कथा कहि वैताल विक्रम नू पूछीयउ। चोर हसीयो अनइ रूनउ क्यु[3]।

विक्रमादीत बोलीयउ। हसीयो सो चोर जाणीयउ साहरी बेटी रंभा सरिषी म्हारइ आवसी। मोसु [4]निजर लगाइ छइ[4]। आगइ पिण अस्त्री सपरी छइ। तरइ[5] दुइ स्त्री होसी। इसो मनोरथ करि हसीयो।

नइ रूनउ क्यु। (राजा) चोर नु संकल्प विकल्प आयो। जो राजा न छोडसो तउ म्हारी वैऊ राड हूसी।

[6]इतरी कथा सुणि मडउ[6] सीसम री डाल जाइ लागउ[7]। राजा फिर जाइ मडो उतार ले आवतउ हूयउ।

इति श्री वैताल प*चीसी री कथा तेरवीं कही[8] ।१३

पाठान्तर—

१ ख ततकाल, ग फेर। २ ख रूनो, ग रोयो। ३ ख किसै वासतै, ग किण कारणे। आगे ख ग, प्रतियों मे यह पाठ है—'न कहिसो तो चोर री चोरी कीधी रो पाप लागसो।' ४ ख नेत्र जोडे छे। ५ ख ताहरा। ६ ख इतरो वचन राजा रा मुष थी सांभल। ७ ख विलगो, ग टग्यो। ८ सम्पूर्णम्।

*पत्र स० १३ का ख भाग पूर्ण।

वैताल पचीसी री चवदमी कथा

मार्ग चालता राजा नू वैताल कह्यो[1] साभलि। कुसमावती नगरी। सुविचार नाम राजा। तीयरई[2] चद्रप्रभा नाम पुत्री वर प्राप्ति हुई।

[3]एक समइ पेलणी तीज आई[3]। अनै सषीया साथि तीज षेलण गई। तेथ[4] एक ब्राह्मण युवान सरूप दीठो। अर उवै राजकन्या दीठी। माहो माहि [5]प्रीत लागी[5]।

पछै रमि षेलि नै विरह कर पीडित आपणै आवासि गई अरु ब्राह्मण काम वसि होई तेथ ही पडीयौ। विसुद्ध[6] हुवो। आपो न सभालई।

इतरइ शशिदेव मूलदेव आया। ब्राह्मण वेसुद्ध पडीयो देषि मूलदेव शशिदेव नू कह्यो। देषो ब्राह्मण री अवस्था। तरै शशिदेव दूहो कह्यो।

[दूहा]

तव लग वस[7] विवेक हिय, सास्त्र थकी सुख चइन[8]।
नैण बाण मृगलोचनी, लगइ न जब लग मइन[9] ॥१
[10]तांम सयानप ताम कूण, तप जप सजाम तास।
वक तिरछै लोइनां, नइन निरषै जाम [स][10] ॥२

वार्ता

मूलदेव पडीयइ[11] नु पूछीयो। रे ब्राह्मण थारी कउण अवस्था। ब्राह्मण [12]कहइ छइ[12]।

पाठान्तर—

१ ख बोलीयो, ग बोल्यो। २ ख ग तिणरे। ३ ख श्रावण री तीज, ग एक श्रावण रो महीनो तीज रो दिहाडो छै। ४ ख ग तठे। ५ ग राग हुवो। ६ ख विसुध, ग अचेत। ७ ख ग, वसे। ८ ख ग चेन। ९ ख नैन, ग नेन। १० ग प्रति में नहीं है। ११ ख पडीये, ग पडीया थका। १२ ख कहे छै।

[दूहा]

दुरक[1] [ष] तिहा परकासीइ जो दुख[ष]भजाख समच्छ ।[2]
यह रोवइ वह रोइ घइ, फौण प्रकासइ तच्छ[3] ॥१

[वार्ता]

थारो दुप दूर करिस्यु[4] । मूलदेव इसो वचन ब्राह्मण नइ कह्यो । ब्राह्मण कहइ छइ । मोनु कोई जीवाडइ[5] तो सुविचार राजा री वेटी चद्रप्रभा मिलावइ[6] । कुवरइ वियोग हु मरू छु ।

ताहरा मूलदेव कहीयो । तोनू बहुत द्रव्य नइ ब्राह्मण री वेटी सुदरी परणाऊ । तू चद्रप्रभा नु [7]कासु करीस[7] ।

ब्राह्मण कहइ छइ ।

[दूहा]

दडो[8] राजा जन हसउ[9], पिप्यउ[10] चोलो फोउ ।
हू चितू[11] मन कीजई, ज भावइत[12] होउ ॥१
स्त्री कारण धनत्र जोयइ, साजो त्रीया न होइ ।
तउ किह कारण धन सपदा, उह वइरागी होइ[13] ॥२

वार्ता

ताहरा मूलदेव कहीयउ । उठ ब्राह्मण तोनु मइ राजकन्या दीनी[14] । इतरउ कहि एक सिद्ध गुटिका ब्राह्मण नु दीनी । कह्यो तू मुप माहि राषि ।[15] तैये सु बारह वरस री रूपवत कन्या हुई ।

पाठा तर—

१ ख ग दुप । २ ग ग समरथ । ३ ख ग तथ । ४ ख करिसो, ग कसु । ५. ख जीवाडे, ग जीवावे । ६ ख मिलावे, ग मेलवे । ७ ग काई करसी । ८ ख ग डडो । ९ ख ग हसी । १० ख बकोन, ग पखोन । ११ ख चितो, ग, चित्यो । १२ ख ग भावे । १३ ख ग प्रति मे आगे यह दूहे है—

सामल चोया प्रसाद ते, राजा अरु पतिसाह ।
रूप अधर कुच रग मोह, कीया बराबर ताह ॥३
भरीयो अमृतकुड सो, अरु सब सूख रुठी रास ।
मिनधान सभोग को, त्रिया विराजे पास ॥४

१४ ख दीवी, ग दीन्ही । १५ ख राप, ग राखन ।

तीयइ नु हाथि पकडि राजद्वारि ले गयौ । राजा री हजूर जाइ आसीर्वाद दै बइठौ[१] । राजा पूछीयो । कठा आयो[२] ।

तरै मूलदेव कह्यौ । गगा परव सू । अर ईयइ देस बेटौ परणायो हूतौ । तीयरइ मुकलावइ नू स्त्री पुत्र सहित आया हूता । सगइ दिन दस राषि भली भात मुकलावउ कीयौ[३] । ताहरा[४] मुकलावउ ले आवता राति री धाडि पडी । असबाब चोर ले गया । बेटो किथे[५] गयो । 'वैर किथै[६] गई । बेटा री वहू नु ले नगर मइ[७] आयौ । एथ इसडी ठौड बीजी काई नही जठै १२ वरस* री वहू नु मेलि स्त्री-पुत्र रो षबर करू । तरइ [८]राज कन्हइ[८] आयौ । सु महाराज ईयइ वहू नु दिन २[९] राषइ । ज्यु म्हारी वहु बेटा री षबर[१०] करु ।

तरइ[११] राजा बेटी नु कह्यौ । मूलदेव री बेटा री वहू छै । इण नू दिहाडा २ तो कन्है सुवाणै । भोजन मागै सु देई । सोहरी राषै[१२] । पछै आय लैसी ।

तहरा राजा री आग्या सेती राजकन्या ब्राह्मण-वधू रो हाथ झालि[१३] भीतर ले गई । तेथ मेवा मिष्टान षायइ पी नै सुषै दिन वितीत करि रात्रि समय नू एकइ सिय्या[१४] सूती ।

माहो माहि वार्त्ता करतां ब्राह्मण-वधू पूछीयो । तू राजकन्या । तोनु किसो सोच छइ । तू उदास रहै सु किसै वास्तै ।

ताहरा[१५] राजकन्या कह्यौ । म्हारा मन री वात [१६]कहण योग्य[१६]

पाठान्तर—

१ ख वेठी, ग वेठो। २ ख ग सु आयो। ३ ग दीयो। ४ ख तब, ग तरै। ५ ख कठे। ६ ऽस्त्री कठे। ७ ख माहि, ग मांहै। ८ ख ग इण ठोड। ९ ख दोइ, ग बे। १० ग बीगै। ११ ख ताहरां, ग तिवारै। १२ ख रापे, ग राखजे। १३ ख पकड, ग पकड नै। १४ ख सेइया, ग ढोलीयै। १५ ख ताहरां, ग तिवारै। १६ ग कहीण जोगी।

---

*पत्र सं० १४ का क भाग पूर्ण।

न छै। पिण तौनु कहीस। जीयै नु आप पूछीजै तीयइ नु आपणी वात पण कहीजइ[1]।

राजकन्या कहै छइ। हू सपीया साथ तीज पेलण गई हूती[2]। तैथ[3] एक ब्राह्मण रो पुत्र[4] महा रूपवत युवान दीठउ। माहे माहि द्रिष्ट लागी। अरु ब्राह्मण उथ[5] ही रह्यो। हू तीज पेलनै आपणै आवास आई तीयै[6] दिन थी मन ऊदास रहइ। किसू कीजइ। राजा घरि जन्म अनइ "उवै रो" नाम स्थान गोत्र किऊ[8] ही न जाणू। उवइ[9] दिन सू म्हारी इसडी अवस्था हूई।

ताहरा ब्राह्मण-वधू बोली। उवै ब्राह्मण नु मेलु[10] तउ कासु वधाई द्यइ। तरइ राजकन्या बोली। तउ थारी दासी सदा होऊ[11]।

ताहरा मूलदेव सिद्ध री गुटिका मुप [12]सु परही[12] काढी। तीस[13] वरस रो ब्राह्मण रूप प्रगट कीधउ। तिवारै रूप देष नै [14]लज्या कीधी[14]। मन संतोपाणउ। कामभोग-विलास किया[15]।

दिन ऊगै गुटिका मुष माहे रापइ। कन्या-रूप दीसै। राते पुरुप हुवइ। सिद्ध-गुटिका रै प्रभावइ मन-वछित सुप भोगवै। इम करता राजकन्या नु गर्भ[16] रहीयउ[17]।

एक दिन राजा मुहत[18] रै सपरवार निहतरीयो[19]। तैथ जीमण नु गया हुता। तठै मुहतै रइ वैटै ब्राह्मण-वधू दीठी। तरै पूछीयो। आ कुण[20]।

पाठान्तर—

१ ख ग कहीजे। २ ख ग. पो। ३ ख तठै, ग तठै। ४ ग वेटो। ५ ख उरे। ६ ख तिण। ७ ख ग उणरो। ८ ख पयो। ९ ख ग उण। १० ख देखालू, ग देखाउ। ११ ख रहूं, ग रहसु। १२ ख महा। १३ ख २०, ग बीस। १४ ख लाज सी आवी, ग लाज आवी। १५ ख प्रति मे आगे यह पाठ है—'जठे भावतो मिलै तिण सुप रो कासू कहीज।' १६ ग आधान। १७ ख ग रह्यो। १८ ख मन्त्री, ग प्रधान। १९ ख नहितरीयो, ग नैहतरीया। २० ख कोण, ग कुण।

तरइ कहीयो । ब्राह्मण-वधू छइ । इणरो सुसरो मेल गयौ हुतो[1] । राजा रै हुकम सेती राजकन्या रापै छइ ।

तरै मत्री रइ बेटइ विचारीयो । हू नही लेउ तो कोई बीजउ लेसी । [2]इसडो रूपवत माणस[2] कुण छोडे । अनै इणरै वासइ कोई नही । जो कोई हुवै तउ बि दिहाडा[3] कहि गया हुता । बि मास हूवा । अनै इणरो सुसरो मुवो[4] तो बीजो उणनु कोइ जाणै नही[5] ।

इसो विचार करि मित्र गोठा[6] बाप[7] नू कहायो । अनै इसडो हठ झालीयो[8] । का तो ब्राह्मण-वधू परणावै का तो मरू[9] ।

तरै प्रधान राजा सू वीनती कीधी । महाराज म्हारो बेटो[10] मरै छइ । दिन ३ हूवा धान पाधा । ब्राह्मण वधू दीजे ।

तरै राजा कह्यौ । इसो अधर्म कठे हुवै[11]जु पराइ अमान कोइ परचै । ब्राह्मण आवै तो हू किसो जवाब करू* ।

राजा न मानै । तरै परधान अमराव षवासवाण[12] नू कहि राजा नू कहायो। उवा कहीयो । महाराज मुहतै रे एक बैटो छै । सु ब्राह्मण रो बेटी नु[13] मरै छै । अनै बेटै मूवा परधान[14] मरसी । तरै राज्य माहे पलहलो[15] पडसी । अनै ब्राह्मण-वहू रौ किसी सोच । ब्राह्मण गयो मूवो । थे ब्राह्मणी मुहतै रै बैटइ नु द्यउ[16] ।

तरइ उवारइ कह्यं राजा ब्राह्मणी बीलाइ[17] कह्यो । तरै ब्राह्मणी बोली । इसडो अधर्म क्यु[18] होइ । एक वार परणी सु बीजी वार क्यु परणीजइ[19] ।

पाठांतर—

१ ख छै, ग छो। २ ख इसो रूपवत नु। ३ ख दिन। ४ ख मुउ। ५ ख न छै। ६ ख साथ, ग सघातै। ७ ख मत्री, ग पिता। ८ ख कीयो, ग कीयो। ९ ख मन पाणो छोडि मरिसो। १० ख ग पुत्र। ११ ख हो सूणीयो नही। १२ ख ग, पवास पासवान। १३ ख विना, ग बीगर। १४ ख मंत्री, ग बाप। १५ ग घणो खोट। १६ ख दीज ग द्यो। १७ ख बोलाय, ग बुलाय ने। १८ ख क्यो, ग किम। १९ ख परणीज, ग परणीजैं।

---

* पत्र सं० १४ का ख भाग पूर्ण।

राजा कह्यो। म्हारइ[1] राज्य री रक्षा करी तो [2]मुहतै रै वेटइ घरि जाह[2]। तरइ ब्राह्मणी वोली। म्हारो कहीयो करइ तो एक वार गगा जाइ आवै। तो पछै म्हारै हाथ लगावै।

तरै[3] राजा मुहतइ रै वेटै नु कह्यो। ब्राह्मणी तोनु द्या छा पण तू गगा जाइ आव। तितरइ तू घरे ले जा पिण हाथ मत लगावइ।

तरइ तसलीम[4] करि ब्राह्मणी नु ले आयो। आपरी स्त्री नु कह्यो। इयै नु सोहरी रापै। भेली लै नइ सुइजै[5]। कठइ जाण मती द्यउ[6]। हु गगा जाइ आवु छु।

इसो कहि[7] नइ गगाजी नु हालीयो। वासइ वेऊ एकइ सय्या सूती। वात करण लागी। जो म्हारइ धणी रो इसडो स्वभाव छइ। मोनु वाहिर नी[क]लण द्यै[8] नही। अरु अठे पुरुष रो प्रसग नही। इसडो म्हारो योवन अहिलो जाइ छइ। अनइ तू ही म्हारै कनारै दुप देवण[9] नु आई।

तरै ब्राह्मणी वोली। तू कथै[10] न कहइ। तउ[11] तोसु भेद भाजू। थे कहो हु किण ही नु नही कहु। मोसु मन मेल री वात करी[रो]।

तरइ ब्राह्मणी कहौ। हू [12]रात री पुरुष हुवु[12] छु। दीहा स्त्री दीसु छु। तरइ पुरुष रो रूप प्रगट कीयउ[13]। उलसीयो हीयो। वेउ पुस्याल हुवा। माहो माहै रग मिलिया। पुस्याल थका रहिवा लागा।

[14]इम करता[14]कितरैकै दिनै मुहतै रो वेटो गोरिवद[15] आइ ऊतरीयउ। माणस आइ वधाइ दीधी[16]। तव विहू जणी नइ सोच हुवउ[17]। अभागीयो पापी आयो। आपणो लाज नही रहै।

पाठातर—

१ ख माहरी, ग महारा। २ ख ग प्रधान रे घर (ग घरे) जावो। ३ ख ताहरा। ४ ख ग सलाम। ५ ख सूवै, ग सूए। ६ ख देई, ग दीजे। ७ ग भोलावण स्त्री नु दे। ८ ख ग दै। ९ ख ग दैण। १० ख ग कठे। ११ ख ग तो। १२ ग पुरुष। १३ ग देखाल्यो। १४ ग हिवे। १५ ख गाम रे वाग, ग नगर बाहिर बाग मै। १६ ग दीनो। १७ ख हूयो, ग थयो।

इम जाण नइ ब्राह्मणी 'मुह अधारो[1] हूवउ तरइ पुरुष रो वेस कर[2] नीकल नइ मूलदेव सिद्ध री गुफा आयो। [3]अरु गर्भ रहीयै रो सर्व[3] वृत्तात मूलदेव नु कह्यो।

ताहरा मूलदेव सांभलि कह्यौ। नाथ भला करसी। पछै[4] बीजइ[5] दिन ससिदेव शिष्य बुलाइ वृद्ध ब्राह्मण होइ शिष्य नू बेटो करि लै नइ राजा पासि जाइ आसीस दै नइ कहीयो। महाराज ! हू वणारसी जाइ बेटो ले आयो। हमइ बेटो बहू मागइ। बहू मगाइ द्यौ। [6]दुष पावइ छइ। आतुर छइ[6]।

तरै राजा नमस्कार करि पाए लागी[7] कह्यौ। स्वामी म्हासू[8] वडी चूक पडी। थाहरो वहू [9]मुहत(ते)रइ[9] बेटे नु दीन्ही। मास दो हूवा छै। अरु थे मवडी[10] षबर लीनी। लो*कै कह्यौ मूवा गया। अरु थे कहो स करा।

एती वात कहता मूलदेव सिद्ध कोप करि बोल्यो। का म्हारी बहु नु ल्याव। का थारी दीकरी[11] म्हारै दीकरई नु परणाइ। का तौ म्हारो वेउ[12] हाथै सराप झेलि[13]।

तरइ[14] राजा राणी परधान भेले हुइ विचार कीयो। जउ सामी[15] सराप द्यइ[16] तउ भस्म करइ। तीयइ कारण चद्रप्रभा ब्राह्मण [17]रइ पुत्र[17] नु द्यउ। आगइ पिण राजवीए बेटी दीधी छई।

ईसो विचार करि चद्रप्रभा ब्राह्मणपुत्र नु परणाई। तरई राज-

पाठान्तर—

१ ख गोधुलिक वेरा, ग गोधूलीक री वेला। २ ख घरि। ३ ख पाछलो, ग सव। ४ ख पछै, ग हिवै। ५ ख ग बीजै। ६ ख यो वहू विना बहुत व्याकुल छै। ७ ख लाग, ग लागो। ८ मोसू, ग मोमै। ९ ख परधान रे। १० ख ग मोडो। ११ ख बेटी, ग पुत्री। १२ ख दानु। १३ ख झाल, ग ले। १४ ख ताहरा, ग तरै। १५ ख स्वामी। १६ ख द, ग दे। १७ ख रे बेटे, ग मै।

---

*पत्र सं १५ का क भाग पूर्ण।

कन्या लै नइ मूलदेव 'आपणइ तकीयइ आयउ'[1]। तेथि वाह्मण रइ पुत्र राजकन्या नु देपि कहीयउ। इयइनू म्हारउ गर्भ छइ[2]। शशिदेव शिष्य कह्यौ। मइ परणी म्हारी स्त्री।

वइताल[3] वोल्यौ। अहो विक्रमादीत[4]। चद्रप्रभा कुणइ री स्त्री। चद्रप्रभा[5] रइ गर्भ तउ व्राह्मण रउ। प्रीत घणी तउ व्राह्मण सु अनै परणी शशिदेव।

तरै राजा कहीयौ। स्त्री जीयै नू पिता परणाई तिण री अस्त्री। इतरो[6] वचन साभलि राजा रौ वइताल[7] सीसम री डाल जाइ लागउ[8]।

राजा फिर तेथ जाइ मडइ[9] नु उतार लै आवतउ हूवउ।

इति श्री वइताल पचीसी री कथा १४मी कही[10]।

पाठांतर—

१ ख आपरे मट पायो, ग आपरै ठिकाणै पायो। २ ख छै, ग छै। ३ ख ग वेताल। ४ ख महाराजा, ग महाराज। ५ ख राजकन्या। ६ ख इसो, ग इसो। ७ ख वैताल। ८ ख ग विलगो। ९ ख वैताल। १० ग सपूर्णम्।

वैताल पचीसी री पन्दरमी कथा

फिर मार्ग[1] ले आवता वैताल बोलियो। अहो राजा[2] साभलि। कथा कहु छु।

हिमाचल पर्वत [3]रइ विषइ[3] हेमावती[4] नाम नगरी। तेथ विद्याधर जीमूतकेतु राजा। तीयँ रइ पुत्र नही। तिण कारण श्रीभगवतीजी रो आराध[5] कीयउ।

आराध करता श्रीभगवती प्रसन्न हूई। कहीयो थारी पटराणी [6]रइ पुत्र[6] हूसी। [7]महा धर्मात्मा हूसी अनै चिरजीव हूसी[7]। श्रीभवानीजी रइ प्रसाद थी दसमे मासि पटराणी रइ पुत्र हुवौ।

राजा पुत्र रौ महोच्छव[8] कीयौ। नगर लोकै उछाह[9] कीयौ। [10]घर २ धवल मगल गाजा वाजा हुइवा लागा[10]। लोक षुसी हुवा-दातार हुवा। दुर्जन था सु सजन हूवा। चोरे चोरी छोडी। चुगले चुगली छोडी[11]।

इसौ हर्ष करि दसोठण कीयौ। छत्रीस पवन जीमाया। सतर भक्ष भोजन कीया। मस्तक तिलक कीया। पान बीडा मुछण दीया। सर्व मनुक्ष भेलै हुइ नै पुत्र रौ नाम जीमूतवाहन कुमर दीधउ। तीयरै प्रभावइ प्रजा सुषी हुई। घणा मेह हुवा। वृक्ष सर्व फल्या।

हमैं कुमर मोटो हुवौ। अनै कुमर रो साईनो[12] रिष पुत्र मधुकर नाम मित्र। तीयँरइ साथि षेलता रमता घोडै चढीया। मलया-

---

पाठान्तर—

१ ख मारग। २ ख महाराजा। ३ ख ग रे विषे। ४ ख ग, हिमावती। ५ ग भाराधन। ६ रे पुत्र। ७ ख ग प्रतियों मे यह पाठ नहीं है। ८ ख उच्छव। ९ ख उछव, ग उछाह। १० ख ग प्रतियो मे यह पाठ नहीं है। ११ ख प्रति मे भागे यह पाठ है—धरती माँहि मनवछित मेह वरसण लागा। सब धान नीपजा[ना]वा लागो। रूप सवदा फलवा लागा। १२ ख मित्र, ग साथी।

चल[1] पर्वत गया। तठे देपै तउ ईस्वरी रउ देहरउ। तरइ घोडा सु ऊतरि दर्शन ताइ भीतरि गया। तठे सपिया साथि वीण वजावती गीत-गान करती दीठी। राजकन्या महा रूपवंत।

तीयै[2] कन्या यै जीमूतवाहन दीठउ[3]। देप नइ सपी साथइ पूछाडीयउ[4]। थै कुण छउ।

तरइ रिपपुत्र* कहीयो। राजा जीमूतकेतु रो वेटउ[5] जीमूतवाहन छइ। पछइ सपी नु रिपपुत्र पूछीयो[6]। आ कुमारी कन्या कुण छइ। तरइ सपी कह्यौ। मलयकैतु[7] राजा री वेटी मलयावती नाम छे।

एती[8] वात सुणि जीमूतवाहन घरै आयौ।[9] अनै मलयावती घरि[9] मा नू कहायौ। राजा जीमूतकेत रो वेटो छइ। महा चतुर छइ।

राणी समझि[10] राजा नू कहीयो। मलयावती परणाई जोइजइ। तरइ राजा (वीवाह करनै) जीमूत नु घणा लाड कोड कर नइ परणाई। "पछै दाइजो घणो दीयो। हलाणो करि घरै गयो।"

पछै कितरैकै दिनै सासरै आयो। तरइ एक दिन सासरै रहता धनुप-वाण ले सिकार गयो। वन माहे सिकार पेले छइ।[11] तिण समइ देपै तो एक स्त्री रोवै छे।[12]

तीयइ नू रोवती देपि जीमूतवाहन पूछीयो। तु कुण छइ। ऊवइ कहीयौ। हू ब्राह्मणी भूपी पुत्र सहित बोरा नू वन माहि आई[13] हुती अनइ जक्ष[14] म्हारा वेटा नु पकडि पावण नु ले गयो। तरै मइ कहो-

---

पाठान्तर—

१ ग मिलीयागर। २ ख ग तिण। ३ ख दोठो ग दीठो। ४ ख पूछीयो, ग पूछायो। ५ ख ग वेटो। ६ ग पूछ्यो। ७ ग मालकेत। ८ ख ग इतरी। ९ ख ग मे यह पाठ है — "अरु मलयावती घरे जाइ विरह पीडत हुई। सपीया साथ" १० ख सांमलि, ग समझी। ११ ख जीमूतवाहन घरे रहै। सासरे रहै, ग बडो जस लीधो। १२ ख ग तठे १ (ग एक) अस्त्री वुढी रोवती दीठी। १३ ख आवी। १४ ख जष्य।

---

*पत्र स १५ का ख भाग पूण।

यउ मोनु लेजा[1]। तरइ कहइ तू वूढी। थारो मास वेसवादो[2]। तरै वैटइ नु ले गऊ। तिण वास्तइ रोऊ छु।

तरइ जीमतवाहन विचारीयौ।[3] जो चोर नाहर जष राषस गहरीयौ[4] साभल नइ ऊवइ नू छोडावइ तउ पत्री नु गालि छइ।

इसडो विचार नै वूढी नु कहीयो। तू दुष [5]म करि[5]। थारा वेटा नु हू छोडाईसि[6]। इतरो कहि नइ जक्ष लारा गयो। आगइ देषइ तौ जप्य री गुफा छइ। तैथ सपचूड नु [7]बाघ नै नाषीयो छई[7] अनइ यक्ष छुरी लगावइ छइ।

तरै जक्ष नु कहीयउ। [8]अउ तउ[8] म्हारो लहुडो भाई छइ। ईयइ नु छोडि दै। मोनु भक्ष। इणरै[9] थोडउ मास छइ। म्हारइ घणो छै।

तरइ यक्ष कहइ छइ।

दूहा

चदन[10] थोडउ ही भलउ[10], न गाडउ भर्‌यो पलास।
ताणी[11] ही तरुणी भली, ना वूढी रो इकलास॥१
पाठे रो मास ही भलो, ना वड बाकर कालेज।
मिश्री थोडी ही भली, ना गोल्हा[12] रो नेव[वे]ज॥२

वार्त्ता

दोइ दूहा कहि पूछीयो। कहि तू कुण छै। तरै कुवर कहीयौ। जीमूतकेतु राजा रो वेटो। जीमूतवाहन म्हारो नांम।

तरइ शाभलि नइ शपचूड[13] वोलीयउ[14] राजकुमार थै सोनै

पाठान्तर—

१ ख जाइ, ग जावो। २ ख वैस्वावो, ग निसवादो। ३ ग वोल्यो। ४ ख ग पकडीयो। ५ ख ग मत करे। ६ ख छुडाईस ग छोडावस्यु। ७ ख बांधि नाषियो छे। ८ ख यै। ९ ख भ्रो। १० ख ग थोडो ही भलो। ११ ग कांणी। १२ ख गोल्हा, ग गुल। १३ ख ग ससचूड। १४. भागे ग प्रति में यह दूहा है—

"माप निमत मृत भ्रौर की जो मह जीवै भ्राप।
उण री गती होवै किसी, कहि समभावै बाप॥३

जीमूतकुमार वाक्य—
हुं जाणू कहि वापडा, गत उण री छ काम।
जाणीजै गत बाप नै, सो मन हरावे राम॥४

सरीषो सरीर परायै निमित्त क्यु द्यउ । अर म्हा सरीषो नान्हउ लोक घणउ ऊपजइ[1] अर [2]विलय जाइ छइ ।[2] अनइ था सरीषो परोपगारी केथ[3] पइदा होइ । अर थे रहिस्यौ तो म्हारी मा की प्रतिपालना[4] करस्यो । अर [5]थाहरइ आश्रइ[5] घणा लोक [6]सुषी हूसी ।[6] अनइ हू जीवीयो तो पिण तिसौ । मूयो तो ही तिसौ ।

तरै[7] जीमूतवाहन कह्यौ । म्हारो पण जाइ। पत्री[*] पणो लाजइ। तिण वास्तइ तू थारी मा कन्हइ जाइ ।

इतरइ कहता जक्ष वोलीयो ।[8] रे पत्री पुरष । तू काइ मरइ पारकै अर्थइ । तरइ कुमर कह्यउ । क्षत्री री वट छइ । आप मरइ । वीजइ नु रापइ ।

इम यक्ष नू कहि सपचूड[9] री जाइगा आप आइ वइठो[9] । यक्ष नु कह्यो। मोनु मारि पिण इणनुं मारण न द्यु[10] । म्हारी मउत नू लेइस। वीजइ नु लैण न द्यू ।

दूहा[11]

गउ व्राह्मण साधु नर, मित्र प्रजा त्रीय नाथ ।
इण कारण झूझै मरइ, सो पावइ सुर साथ ॥१[12]

[वार्ता]

इसउ धीर्य देष नइ विहू रो वाद साभलि कहीयउ । थे

पाठान्तर—

१ ख उपजे छं। २ ख विलेजीये छे। ३ ख कठे। ४ ख प्रतिपाल। ५ ख थारे आश्रे। ६ ख जीवसी। ७ ख ताहरा। ८ ख आइ जीमूतवाहनु पकडीयो। ६ ख ना बीच आइ पडीयो। १० ख द्या। ११ ग प्रति मे दूहा नहीं है। ख प्रति मे आगे यह दूहा अधिक है—

"आप न भषे अब फल, औरा देत पसाउ।
आप पडो रहे छांह करि, लोक स वेठा उमाउ" ॥१

१२ ख प्रति मे आगे यह दूहा है—

"आप निमित मृत और की, हुई अरु जीवै आप।
उणरी गति हुवं कोणसी, कहि समलावो बाप ॥२

---

*पत्र सं० १६ का ख भाग पूर्ण।

दूनु घरि जावउ । वाद मति करो । हू किण ही नै न मारू । थाहरउ सत धीर्य देप नइ तुष्टमान हूवउ ।

तरइ[1] वैताल बोलीयो । महाराज ईया बिहूवा माहि सच्चाधिक कुण । तरै राजा कहे । सपचूड सच्चाधिक । अरु क्षत्री निमित्त प्राण त्यागै ही त्यागै । ऊवै रो कार्य । अरु धन्य सपचूड वैश्य जीयइ रइ सत करि विन्हे छूटा ।

इतरो[2] राजा रो वचन साभलि वैताल[3] छिटक गयो । सीसम रो डाल जाइ वइठो । तरइ राजा इ मडै नु ले आवतो हूवो ।

इति श्री वैताल पचीसी री पनरमी कथा [4]पूरी हुई[4] ॥१५

पाठांतर—

१ स ग इतरी बात सुणाई (ग कही) । २ स इसो । ३ ग मडो । ४ ग सपूरणम् ।

वैताल पचीसी री सोळमी कथा

फेर[1] माग ले आवता वैताल[2] वोलीयो। राजा साभलि। विजयपुर नगर। तैथ धर्मसील राजा रत्नदत्त सेठ रहै। तीयैरइ उन्मादनी वेटी। [2]तिण रो रूप अधिक। रभा सरिषी।[2] जिकौ देषइ सु गहिलो[3] हुवै। सुद्ध काई रहै नही।

राजा साभलि अटकाई। किणही नु परणाव[वा] रो हुकम नही। इम करता योवन [4]अवस्था आई[4]। एक रूप हुतो। वले योवन आयो। ताहरा जाणं करि रूप सिणगारीयो। सेठ[5] नजर भरि देषै तउ सेठ रो ही जीव चूकइ।

तरै सेठ विचारीयो [6]इयइ वेटी घर माहै रापीया धर्म नही[6]। जाइ राजा सू[7] वीनती कीधी। महाराजा कन्यारत्न[8] छै। महाराज री इच्छा[9] हुवै तो महाराज परणै[10]। अर मोनु हुक्म करै तौ बीजै सगै नु द्यु। पिण हमै रापी रौ धर्म न छै।

तरइ राजा एक पासेवाण साथि दे सयाणी वैर[11] जोवण नू मेली[12]। तू ऊठिइरा[13] वस्त्र दूरि करि देष नै [14]जिसडो रूप हुवै तिसडो[14] आइ नइ कहो।

आ वात राजलोक साभली। जाणियो उन्मादनी आई[15] तउ

पाठान्तर—

१ ख वले। २ ग मडो। २ ख, तिका इसी रूपवत जिसी विद्याधरी काइ अपछरा। ग सो अत्य त रूपवत अपछरा सारिखी। ३ ख मूर्छाई वेश्रुद्ध, ग मुर्छागत। ४ ख ज्वान अवस्था हुई, ग वय पामी। ५ ख ग पिता धम। ६ ख वेटी परणाया धरम रहे ग इणनै परणाया धरम रहे। ७ ख सो, ग सु। ८ ख कन्यारतन, ग रत्नपदाथ कन्या। ९ ख आग्या, ग इछा। १० ख रापें। ११ ख मस्त्री, ग वडारण। १२ ख मोकली। १३ ख उणरा, ग उणरा सव। १४ ख हकीकत सगलें अग री, ग सर्व अगोपाग दख भाव नै भानु। १५ ख आवी।

राजा बीजो किण ही नु मानसो नही। इसडो जाणि उवा दूतां नू कहाडीयो। थें राजा आगे उन्मादनी री प्रससा मत करो। थानू ५०० रुपईया भेला कर देस्या[1]।

पछे उवा जाइ उन्मादनी दीठी। वर्णक[2] कहै छै।

दूहा

नैन विसाल सु काति मुष, चद विराजै भालि।
[2]दसन कि [3]मुष हीरा भर्‌यो, अधर प्रवाली पालि। १[4]

रक्त कमल* से पाणि पद, आगुलि कोमल पान।
कुच मु दात कूपला, दीर्यं भृगट कांन ॥२

क्षीणी मध्यप्रदेश कटि, पीन प्रचड नितब।
कनक वरण चढती कला, नाभि हुड प्रतिबिंब ॥३

त्रिविलि विराजइ वइठतइ, चलति हस गति चालि।
पडी विराजइ वीजली, वादल वस्त्र विसाल ॥४

चतुराई अगे अगि अधिक, बोलैं वइण रसाल।
अजन भजन जउ करइ, तउ को वर्णै उहि बाल ॥५

वार्त्ता

अइसउ[5] रूप देष्यउ पिण लोभ रा लीया जाइ कह्यउ। महाराज लाइक नही। अरु इसडो सौण दीठो छइ जो उन्मादनी दोइ पुरुष दिन २ मराडसी[6]। विघ्नकारणी छइ। तीयइ[7] कारण महाराज जोग नही।

पाठान्तर—

१ ख देसां। २ ख ग रूपवर्णन। ३ ख वसन ग दश नख। ४ ख ग प्रति मे आगे यह दूहा है—

"काम धनुष सी भोह (ग भूंप) दोइ, नासा दीप सिपाइ।
चिमक्यो सैन कचन विहा, मोरसी हे मसताइ ॥२

५ ख ग इसो। ६ ख मरावसी। ७ ख ग तिए।

---

*पत्र सं १६ का ख भाग पूर्ण।

तरइ[1] राजा कहीयो रत्नसेठ नु । थारी दीकरी[2] तू जाणे तठइ परणाय । तरइ सेठ तुरत तसलीम[3] करि घर आयो ।

पछै कुटंब नु पूछ नै नगर माहै धवलधर साह कोड री माया तिण रइ वेटो बलधर तिण नु परणाई । घणा महोच्छव कीया । रली-रग हूवा ।

बलधर राति-दिन हींडोला पाट वैठो सुप भोगवइ[4] । उन्मादनी रो विरहो न पमाइ । इम सुप भोगवै छै ।[5]

हमै एक दिन घणा दिन वितीत हूवा छइ । तरइ नगर रो राजा सिकार नीसरीयो हुतो अनै उन्मादनी सहजइ आपणै [6]घरि ऊपर मालीयइ चढती[6] हुती । तरै राजा दीठी । इसडी स्त्री न होइ । विद्याधरी[7] छइ । कै [8]देवगना छै । कै अपछरा[8] छे ।

राजा साम्हो जोइ रह्यो । उन्मादनी राजा नू[9] देपती रही । राजा ऊपर प्रेम हुवो ।

राजा कहीयो । आ ऊपर चढी सु कुण छे । तरै चाकरे कह्यो । महाराज बलधर साह री स्त्री छै ।

तीयै नु देप राजा नु विरह-वियोग दुप हुइवा लागउ । राजा रै मन माहै वसै । भूलै नही । अन्न न पाइ । पाणी ही पीवइ नही ।

दूहा

''कान्ह पर स्त्री रच्चरा, की मिट्ठा पण दिट्ठ ।
दिवस दिवाना ज्यु गमइ, निस रोगी ज्यु निट्ठ ॥१''

पाठान्तर—

१. ख ताहरा, ग तिवारै। २ ख ग पुत्री । ३. ग सलाम । ४ ख भोगवें, ग भोगवै । ५ आगे ख ग प्रतियो मे यह दूहा है—

''भाग्य घडो ससार मे, पढे (ग पढयो) गुनै (ग गुण्या) कछु नाहि ।
दारा (ग द्वारा) सूजा मुराद पिण, पायो उरगसाह (ग अइसो ओरगसाह) ॥

६ ख घर ऊपरि चढी, ग मालिया में बैठी । ७ ग देवांगना । ८ ख अपछरा कै नागकन्या । ९ ग सांहमो । १० ख ग प्रतियो मे नहीं है ।

वार्त्ता

राजा रो विरह सुणि[1] उन्मादनी पिण अन्न छोडीयो। विरह करवा लागी। अस्त्री अन्न न पाइ तरै सुष-भोग रइ स्वारथ करि बलधर ही अन्न न पाइ। दुष पावइ। पिण राजा नु परचावण लागा। महाराज ! अन्न अरोगै। बलधर कुर्णरो। उन्मादणी कुर्ण री। बेऊ रावला छै। जाणै तिम करो। उन्मादनी हाजर छै। राजि तेड नै महल माहै रषावै पिण अन्न अरोगै। तरै राजा पडिता नू पूछ्यो[2]।

दूहा

परदारा जननी गिणइ[3], पर धन पत्थर मन्य।
आप बराबरि[4] जीव सब, जाणै सो नर धन्य ॥१

वार्त्ता

प्रधान पुरुप बोलीया। महाराज ! पुरुष आपणी स्त्री [5]आप ही[5] द्यइ[6] तव दोष को नही। सो बलधर ए* आप ही अणमागी स्त्री आणि द्यइ तो महाराज क्यु ऊ[अ]गीकार न करो। अनै[7] उन्मादनी पिण अन्न न पाइ छइ। तरइ उवा पिण मरसी। बलधर पिण मरसी। [8]तीयइ कारण[8] महाराज आरोगइ। उन्मादनी हाजर[9] छै।

राजा बोलीयो। उन्मादनी मे परणी होइ तउ अगीकार करू। अथवा कवारी होइ तउ परणीजू।

ताहरा पडित प्रधाने कह्यो। तउ माहाराजा विरह रो दुष क्यु करो। विरह कीया उसडो[10] हीज पाप छइ।

तरइ राजा कह्यो। म्हारो सरीर मो सारइ[11] छइ सु हू

पाठातर—

१ ख सुण। २ ख ग कह्यो। ३ ख गिनै, ग गिणै। ४ ख ग बराबर। ५ ख मण मांगी, ग भापरा हाथ सु। ६ ख दे, ग देवै। ७ ख अरु। ८ ख तिण वास्तै। ९ ख हाजुर। १० ख वसो, ग छोई। ११ ख साख, ग पासै।

*पत्र सं १७ का ख भाग पूर्ण।

राखिसि[१]। हाथ न लगाइसि। पिण मन विरह करइ छइ। तीयै साथि मरीजसी[२]। इसडो ही लिपत जाणीजइ छइ।

राजा विरह[३] कर क्षीण[३] होइ मूवो। तिण रे प्रेम सु उन्मादनी मूई। भोग-वियोग थी वलधर मूवो[४]।

वइताल पूछीयो[५]। राजा! तीया माहि 'सराहण जोग[६]' कुण अथवा दोप कुणइ नु।

तरइ राजा विक्रमादित कह्यौ। सराहीजै राजा जीयइ सील-धर्म रापीयो अर प्राण-त्याग कीयौ। दोप पासैवान अरु सयाणौ वैर नु जीया सुक रा पाचसइ रुपईया ले नइ झूठ बोलीयो।

इतरी वात राजा रा मुप थी साभलि वैताल[७] जाइ सीसम री डाल लागौ[८]। राजा फिर जाइ मडउ ऊतारि मारगि ले चालतौ हूवौ।

इति श्री वैताल-पचीसी री सोलमी कथा कही[९] ॥१६॥

पाठातर—

१ ख ग. राखीस। २ ग मरणो आयो दीसै छै। ३ ख. ग पडित। ४ ख मूव, ग मुवो। ५ ग बोल्यो। ६, ख सत्वाधिक। ७ ख वेताल, ग मडो। ८ ख विलगो, ग चढयो। ९ ग सपूर्ण।

वैताल पचीसी री सत्तरमी कथा

वैताल कहै छइ। राजा साभलिज्यो[1]। उजेणी नगरी महीसेन[2] नामा राजा हूतो। तीयँ रइ देव सर्मा नाम ब्राह्मण। तीयँ रो पुत्र गुणाकर नाम महा जूवारी। घर रउ वित सर्व हारीयउ। घर हो वेच्यो।

किउ ही न रहीयउ तरै (तरै) लहणइता[3] रै डर नासि[4] गयो। देसातरि भमता-भमता जोगी दीठौ। देप नै पगे लागो। तरै जोगी [कह्यो]। एथि भिष्या भोज्य[5] छै।

गुणाकर कह्यो। हू भिक्षा रो अन्न न पाऊ। तरै जोगी अतिथ री दया करि वट जक्षणी रो आराध[6] कीयो।

जक्षणी[7] आइ प्राप्ति[8] हूई अर कहीयो। स्वामी! किसी आग्या द्यो[8] छउ[9]। जोगी कहीयो। ईयइ[10] विदेसी अतिथ नू आहार-पाणी दीयो चाहीजै।

तरै सामी री आज्ञा पाइ दिव्य[11] महल रचीया। [12]सतरइ भक्ष[12] भोजन कराया। कस्तूरी कपूर सहित पान पवाइ नै आगै आइ उभी रही। तव ब्राह्मण उवइ नु एकली देपि कामार्त्त[13] हूवउ अर यक्षणी सू यथेच्छा[14] करि सुप मइ रात्रि वितीत कोवी। प्रात होता यक्षणी माया लै अलोप हुई।

ब्राह्मणी[ण] जोगी पासि आयो। जोगी ऊवइ नू विलपो देपि पूछीयो। तू विलपो नयु।

पाठान्तर—

१ ख सामलो, ग सांभल। २ ख महूसेन, ग महासेन। ३ ख लेहणाइता, ग लेणायता। ४ ख नीसर, ग निक्स। ५ ख ग भोजन। ६ ख आराधन। ७ ग भोग प्रत्यक्ष। ८ ग करो। ९ ख ग छो। १० ख ग इण। ११ ख दिव, ग मोटा। १२ ख छतर जात रा, ग पटरस। १३, ख ग सकाम। १४ ख मनवछित क्रीडा।

उवई कहीयो। जक्षणी नीसरि गई। जक्षणी विना जीवणो नही।

जोगी बोलीउ[1]। उवा तो विद्या रइ वल आवइ[2]। तरइ ब्राह्मण कहीयो। हु थारो दास हो[3]इसि[3]। मोनू आ विद्या सीपाई जीयौ करि जप्यणी आवइ अरु जीमाइ।

ताहरा जोगी आपणो चेलो करि मंत्र सीपायउ अर कहीयो पाणी माहि पैसि एक चित्त होइ मत्र साधि। तव ब्राह्मण पाणी माहि माया-जाल मय दीठो। तिसडइ पाणी सू नीसर जोगी नु कहीयो। जोगी कहीयो। पुत्र हिवइ अग्नि माहि पैसि अरु मत्र साधि[4]।

तव ब्राह्मण कहीयो। एक वार[5] कुटव-यात्रा करि पाछै अग्नि-प्रवेश करु। तरै[6] गुर री आग्या मागि घरि आयो।

कुटव मिलीया। पूछण लागा। तूं कठइ हुतो। करे पवर न लीधो।[7]

दूहा [दूहो]

माता पिता भाई प्रीया, अप[8] मुप जो न हिति[9]।
उर्द्धगमन तिनकु नही, अधोगमन बदति[10] ॥१

पाठान्तर—

१ ख बोल्यो, ग बोलीयो। २ ख आवै, ग आवसी। ३ ख हूईस, ग, हूय नं रहिस। ४ ख साध, ग साधो। ५ ख वैला। ६, ख तव ग तिवारै। ७ ख ग प्रति में आगे यह पाठ है – ते (ग थे) घर विसार (ग वीसार) दीधा (ग दीना)। ८ ख. अप, ग आप। ९ ख नदत, ग निदत। १० ख ग मे आगे यह पाठ है—

मूड थो फिर हू जीमो, फिर मर जाइस तेथ।
मरन जीवन हसन रुदन कठे किसू किसू केथ ॥२॥

घडो वडो मुप साकडो, विष्टा भरीयो जाण।
हाथ न मावै मधि कटि, केसे सुद्धि वपाण ॥२॥

---

* पत्र स० १७ का ख भाग पूर्ण।

वार्त्ता

गुणाकर कहइ छइ । अब हू घणो कीसू कहू । जोगी रो चेलो हूवो ।। मोसु कोई मोह मत करो । मै जोग-शास्त्र साधोया ।। मोसू उसडो हो भाव राखीया ।।

इतरो कहि जोगी पासि गयो । नमस्कार करि अग्नि-प्रवेश-विद्या साधी अरु यक्षणी रो आह्वान कीयो । जक्षणी नाई[1] ।

ताहरा जोगी नै कह्यो । जोगी बोलीयो । तोनू विद्या नाई ।

वैताल राजा [2]नू कह्यो[2] । ब्राह्मण साधतो कियेई[3] चूको नही अरु ब्राह्मण नु विद्या नाई । किसै कारण ?

राजा कह्यो । उवइ रो चित्त ठोड न रह्यो । कुटब सु[4] मिलण गयो । तीयइ कारण[5] यक्षणी नाई[5] ।

इतरी वात राजा रै मुप थी साभलि वैताल सीसम री डाल जाइ लागो[6] । ताहरा राजा फिर तेथ मडो[7] ऊतारि ले आवतो हूवउ ।।

इति श्रीवैताल पचीसी री कथा सत्तरमी कहो[8] १७।।

पाठान्तर—

१ ख आवी, ग नहीं आई । २ ख नो पूछोयो । ३ ख कठै नहो, ग कठै ही न । ४ ख मु । ५ ख विद्या न आवी । ६ ख विसगो, ग टग्यो । ७ ख वैताल । ८ ग सम्पूर्णम् ।

वैताल पच्चीसी री अठारमी कथा

फिर 'मार्ग जाता'[1] वैताल बोलीयउ। राजा साभलउ छउ। वकोल नाम नगर। तेथ[2] सुदरसेन राजा। धनपाल साह। तीये री बेटी धनी साचालक वासी गोरदत्त नु परणाई।

तीयइ रे कितरा एक दिना मोहनी नाम वेटी[3] ऊपनी। वेटी वरस सात री हुई। तरइ पिता मर गयो। तीयै रा गोत्री चुगलै राजा नु कह्यो। गोरदत्त अपुत्रीयो मुअउ। इण री धन[4] पालसइ करो। तरै पोस ने राजा लीयो।

तरै धनी दीठो कडु[टु]व इ रह्या सुप को नही। धन पोसीयो।

दूहो

देषा देषी पाईयइ, करीयइ देषा देष।
देषा देषी उठीयइ, तौ लजा रहे विशेष ॥१

तरइ धनी मन मइ दुष आणि नइ आधी रात री बेटी नु ले नइ नीसरी[5]। रातै[6] मारग सूझै नही। राति अंधारी। तठइ जाती जैथ चोर सूली दीधउ हूतउ।

तठै जाई नीसरी। तरै धनी री चोर नु धको लागउ। चोर पीड करि दूहो कहै पुकारचो[7] है। (है कर्म कहि[8] दूहो कह्यो)।

[दूहो]

जहां मृत्यु क अरु सपदा, पीडा बधन थाइ।
स्त्री सुष भोजन पान तहां, कर्म प्रेरि ले जाइ ॥१

पाठांतर—

१ ख मारग माहि चालता। २ ख ग तठै। ३ ख ग पुत्री। ४ ख माल। ५ ख ग नीसर गई। ६ ख ग अधारी रात। ७ ग हाय-हाय करै।

जिण महूरत जिण समइ[1], जैसो लिषीयो होइ।
सुष सज्या दुष पीड पणि, सौ* अनथा[2] न होइ ॥ २
हूणहार[3] सोई होइ है, नाहि न मिटइ निबध।
दोस अउर कु दीजीयइ, यह बडउ कुबुद्धि प्रबध ॥ ३

वार्ता

एतउ[4] साभलि अधारी मै धनी बोली। [5]कुण छइ तू[5]। उवै कही। चोर सूली दीयो छु दो पहरा रौ पिण जीव नीसरइ न छइ।

धनी कह्यौ। थारो जीव किउ न नीसरइ। तरइ चोर कह्यो। म्हारै धन घणो छइ। हू परणीयो नही। तिण वास्तै जीव न नीसरै।

ताहरा धनी कह्यौ। थारई धन केथि छइ। चोर कह्यो। थारी दीकरी मोनू परणावइ तो धन वताउ।

धनवती लोभ री लागी बेटी चोर नै दीनी[6]। तरै चोर महुरा रो भरीयो चरु वतायउ।

दूहा

पापज होवइ लोभ तइ[7], रस तै व्याधि विशेष।
अति दुष उपजे स्नेह तइ[8], तिहु[9] छोडइ सुष देषि ॥ १

[वार्ता]

तरै धनी कह्यौ। ईयइ तू किसो सीष द्यो छउ। तरइ चोर कह्यो। म्हारो नाम रहै त्यू करजे[10]। म्हारी छै। मै परणी छै। पिण तोनै म्हारी आग्या छै। रितवती होइ तब वीर्य रो मोल दे नै सभोग

पाठातर—

१ ख ग समे। २ ख ग अन्यथा। ३ ख होणहार, ग होणहार। ४ ख इसो, ग इतरो। ५ ख ग तू कोण (ग कुण) छै। ६ ख दीधी, ग परणाई। ७ ख ते, ग तैं। ८ ख ग तै। ९ ख त्रिहु। १० ख कीजो, ग करज्यो।

*पत्र सं० १८ का क भाग पूर्ण।

करै। अर कदाचि वेटी होइ तो वीजी वार पिण मोल दे वीर्यसभोग करै। धन घणो ही छै पावण नु और थारी मर्यादा माहै प्रच्छन कार्य करे। म्हारो नाम रापेज्यो। इतरी सीप दे नै चोर मुवो।

हमै धनी वेटी नु ले नै आप रै पीहर आइ। एक जुदो ही घर मोल ले नै मा वेटी दूनु[1] रही।

मोहनी माया[2] रै प्रभावै थोढा दिना माहि योवनमइ हुई। प्रच्छन्न वात रापै[3]। आगै रितवती हुइ हुती अर स्नान करण मालीयै ऊपरि चडी। तिसडै व्राह्मण युवान दीठो।

तरै मानु वुलाइ[4] दिपायो अनै मानू कहीयो। [5]ईयइ सु[5] म्हारो मन छइ। तू इयै अठै तेंड नै रापउ।

तरै मा व्राह्मण नु तेंड नै हाथ दिपायो। पूछीयो इण रइ कोई [6]पुत्र हुसी[6]। तरै व्राह्मण कह्यो। पाच वेटा हुसी। तरै धनी कह्यो। एक पुत्र चाहीजइ[7] नै जउ तू छानो[8] रहइ तउ एक सौ महूर द्या।

इसडो [9]वोल कवल[9] दे नइ परदेसी व्राह्मण नू रापीयो।[10] स्नान-मजन कराया। सतर भक्ष भोजन कीया[10]। पान लवग डोडा मिठाई ले मालीयइ जाइ क्रीडा विनोद किया। मन-ईच्छा पूर्ण कीधी।

प्रात समइ उठि मोहनी मा कन्हइ[11] आई। माता पूछीयो। किसडो एक छइ। मोहनी कह्यो। मन चाहतउ मिलीयउ। मोनू पिण गर्भ रहीयउ

इम करता मास सात रापि नइ १०० महूर दे नइ व्राह्मण नु सीप दीनी। व्राह्मण घरे गयो। पछै दूहा कह्या।

पाठान्तर—

१ ख दोनु। २. ख ग द्रव्य। ३ ख ग रहै। ४ ख बोलाइ, ग बुलाय। ५ ख इणसो, ग इण पुरुष सु। ६ ख बेटो लिख्यो छै, ग बेटो छै क नहीं। ७ ख चाहीजे छै। ८ ख ग प्रच्छन। ९ ख कोल बोल। १० ख ग. प्रति मे यह पाठ है—"पोपीयो दूध दही घृत (आगे ग मे मोकलो) मिठाइ सों।" ११ ख पास, ग कनै।

[दूहा]

निर्भय व्है स्त्री[1] -गुण कहइ, वय करि वरस पचीस ।
जो जो मागै सो दीयइ, पूरइ मना जगीस ॥ १
वात न कहु परगट करै, सभोग[2] स्वनुकूल ।*
जन्मनि अैसं पुरुष कौ, प्रिया न वीसरइ मूल ॥ २

वार्त्ता

पछै दसमै मास पुत्र[3] जायो । तरइ मोहनी री मा विचार कीयो[4] । बेटा नु जतन सु मजूस माहे घालि पासै[5] एक सो महुर दे रात्रि पाछली जाइ राजद्वारि राषि आई ।

तीयै[6] वेला राजा सुपनो दीठउ[7] । जो उज्वल सरीर माथइ[8] चद्र-रेषा तीन नैत्र गलै सर्प्प हाथि त्रिसूल इस्वडो[9] स्वरूप । जोगेद्र कहीयो राजा नु । थारे द्वारि मजूस माहि बालक छइ । सु थारो राज्य रो रक्षपाल[10] हुसी ।

इसा वचन सुणि राजा जोगी रा जागि नइ राणी नू कह्यउ[11] । तरइ राणी कह्यौ हमारु[12] षवर कराडो ।

इतरइ[13] प्रभात[14] होता राजा आप आय मजूस दीठउ । तरै राजा मजूस ले राणी आगै आणि पोलीयो । देषइ तो बालक अति सुदर कातिसयुक्त पेलइ छै अरु पासै एक सौ महुर धरी छै ।

राजा वालक नू[15] पटराणी री गोद मै दीयो । राजा नै हर्ष

पाठान्तर—

१ स भोय, ग थी । २ स सभोगे, ग संभोगैं । ३ स ग बेटो । ४ स करि, ग कर । ५ ख पापती । ६ स ग तिण । ७ स ग दीठो । ८ स मापे । ९ स ग इसो । १० स रप्यपाल, ग रखवालो । ११ स ग कह्यो । १२ स षवाड़, ग हमार हीज । १३ स ग इतरे । १४ स प्रात । १५ स. उठाइ, ग उठाय न ।

---

*पद्य सं० १८ का स भाग गुण ।

ऊपनो। जीयै करि द्रव्य परचीयो। पुत्र-महोछव करायो। जोतषी व्राह्मण तेडि राज-चिन्ह पूछीया।

दूहा

उर विसाल दीर्घ[1] भुजा, दीसै वदन सतेज।
अश्व[2] ललाट विशाल कटि, मात पिता अति हेज॥ १

नेत्रा अतर[3] कर चरण, अधर जीभ नष लाल।
स्वर अरु नाभि गभीर व्है, नासा नैत्र विसाल॥ २

ए [4]लक्षण प्रतेक्ष है[4], विद्यमान दीसत।
जे लक्षण अद्य होहिगे, सदन अप्य होसति॥ ३

पालै वचन मनुष्य कउ, मारइ नाहि न दूरि[5]।
विनय करै घोपउ न व्है, राजा चिन्ह ए पूरि॥ ४

वार्त्ता

राजा साभलि षुसी हूवो। राजा उवइ कुमर ऊपर मन[7] कीयो अर आपणी[8] मोतीया री माला बालक नु पहिराई। लोके पिण महोच्छव कीयो। मिली नै नाम दीयो हरिदत्त कुमार। प्रजा हर्ष पायो। माथै धणी हुवउ।

हिवै मोटउ हुवउ[9] तरइ भणायो। ७२[10] कला सीषी। योवन वय आउ। सोलै वरस रउ हूवौ तरइ पाणग्रहण कीयो। राज-पाट भुक्तवा लागउ। कितरेके दिवसे राजा काल प्राप्त हूवउ। हरदत्त राज्य वइठो।

राज[11] करता पुराण साभलीयो। तरे पुराण माहे कहीयो छइ। जउ पुत्र गया रइ काठइ पिंड भरावइ तो पुत्र जायो प्रमाण।

पाठांतर—

१ ख ग दीरघ। २ ख ग उच। ३ ख ह्वै। ४ ख अंगे लषण हुवै। ५ ख ग सूर। ६ ख पुर, ग पूर। ७ ख मोह। ८ ख ग आपरी। ९ ख सब राजनीत सास्त्र व्याकरण पढाव्यो। १० ख सारी। ११ ख राज्य।

दूहा

चित्त दया सब जीव की, अरु कृपा सबन परि होइ ।
ज्ञान[1] मुक्त तिणि सपजइ, भस्म नसीभ्भइ कोइ ॥ १
श्रद्धा[2]हीन क्रिया विना, डिभ मच्छर कृत जोइ ।
विफल होइ कीयो सवइ, श्राध न पितरे होइ ॥ २

इसडा[3] पुराण रा वाक्य साभली सघ करि गया काठै पहुता । तेथ जाइ श्राद्ध करि [4]पिंडदान करण लागो ।[4] तरइ[5] तीन हाथ पसारीया । तरै पूछियो । तीन हाथ कुणै रा छै । तरै कह्यौ ।

एक हाथ राजा रौ छै । २ [जो][6] हाथ ब्राह्मण रौ । ३ तीजो[7] हाथ* चोर[8] रो । तब श्राद्ध करावण हारो बाभण बोलीयउ । चोर रो हाथ किउ । तरै चोर बोलीयो । अस्त्री मै परणी हुती । अरु ब्राह्मण रउ हाथ किऊ । ब्राह्मण कह्यौ वीर्य तउ म्हारउ । राजा रो हाथ क्यु । राजा कह्यौ । म्हे पोले ले पालीयो ।

अब[9] वैताल बोलीयो । राजा वीर विक्रमादीत कहो नइ । हरिदत्त पिंड [10]कुणै नु भरै[10] । कुणे रे हाथ द्यै ।

राजा कहै छै वीक्रमादित्य । ब्राह्मण रो वीर्य एक सो महुर दे मोल लीयौ । अरु राजा तउ एक सो महूर दे पालीयौ । पिंड चोर नु आवै जीयै री परणी स्त्री रो पुत्र ।

इसा वचन राजा रा मुप थी साभलि नै नीसरि[12] गयौ । वैताल[13] सीसम री डाल जाइ विलगो । राजा फिर जाइ मडा[14] नु ल आवनउ हूवउ ।

इति श्री वताल पचीसी री १८ मी कथा कही[15]

पाठान्तर—

१ ख ग ध्यान । २ ख श्राद्ध, ग सरधा । ३ ख ग इसा । ४ ख पिंड भरा वण मांड्यो । ५ ख तब, ग तिवार । ६ ख बीजो, ग दूजो । ७ ख चोर । ८ ख ग त्रीजो । ९ ब्राह्मण । १० इतरी बात नहि । ११ ख कुण रे हाथ दे, ग किण रा पिंड सरावै । १२ ख उठो । १३ ग मडो । १४ ख वताल । १५ ग संपूर्णम् ।

*पत्र सं० १९ का व भाग पूर्ण ।

वैताल पचीसी री उगणीसमी कथा

वैताल वोलीयो । राजा सांभलि । कथा कहु ।

चीत्रोडगढ[1] रूपसेन राजा । तिको एक दिन दूरि आहेडइ[2] गयो । एकाएकी घोडै चढीयो । आगै जाता एक वडो[3] तलाव आयो अर रूपा की मोटी छाया छै ।

तठै राजा घोडा थी[4] उतरि घोडो कायजै[5] कीयो । आप वृक्ष री छाया वैठो । तिसडे एक रिषि-कन्या[6] रूपवंत महादेव्यगना वृक्षा रा फल-फूल चुणती देषी । राजा सकाम हुवो । तिसड्इ कन्या फूल-फल लै नै हालो ।

तरै राजा वोलीयो । थे कुण छो । किसो थाहरो आचार छै । हू तो थाहरइ प्राहूणो आयो । आज तू[7] मोनु मेल्ह नइ हाली । दुइ वात न कीवी ।[8]

वाता करता नैण मिलीया । मन पुसीयाली हूई । इतरइ रिषीसर आयो । तीयै नू राजा देष नमस्कार कीयो ।

तरइ[9] रिषेश्वर वोलीयो । अहो राजा ! थे सिकार पेलो छउ । जीव मारो । थाहरइ रामति हुवइ । मास लोक पाइ । पाप सर्व थारै सिर चढइ ।[10]

तरै राजा कह्यो । रिषीसर जी मोसु मया करनै धर्म सभलावउ ।[11] रिषो वोलीयो । साभलउ ।

पाठातर—

१ ग चित्तोडगढ । २ ख ग आहेडे । ३ ख ग वन माहि (ग माहे) वडो । ४ ख सु । ५ ख काइजे । ६ ख नाइका, ग कन्या । ७ ख तो, ग तु । ८ ख ग कीधी । आगे ख ग प्रतियों मे यह पाठ है—

'ब्राह्मण घरि के सूद्र कै, दूरि हु ते चलि जाहि ।
जथा सक्ति पूजा करे, घर आपो गुरु आर्य ॥१॥'

९ ख तब, ग, तरै । १० ख चडै, ग चढै । ११ ख ग सुणावो ।

दूहा

जगल वसइ रु घांहि तृण, जल पीवइ धन हीन ।
तो पिण मारै हिरण कू, कौण कहै किसू[1] कीन ॥ १

विनपराध[2] मारीयै, पसु पषी नर नारि ।
जो कोई मारै गुनह विनु, तो नरकै पडै निहारि[3] ॥ २

हाथ जोडि उभो रहै, मागै जीव सरण्य ।
जो अपराधी होइ तो, [4]पणि नहि[4] मारै राजन्य ॥ ३

कोक इसइ मारीजतउ, पीडीजतो निहालि ।
प्रांण द्रव्य दे राखीयइ, सरणागति प्रतिपाल ॥ ४

रहै सील कै धर्म मइ, अरु जितातमा होइ ।
विनय होइ विद्या निपुण, मूरख कहै न कोइ ॥ ५

सतोषइ[5] स्त्री[6] आपणी, परदारा प्रतिकूल ।
लइ न किहो करि अण दीयो, सो नित निर्भय मूल ॥ ६

वैरी देषि बोलइ नही, मन मइ रीस ज मारि ।
सूतै* नु मारै पछै, नरक जाइ निरधार ।।* ७

वरजै दैतां दांन नु, अरु रिण करि करि षाय ।
कूवा वाव तलाव नु, बूरइ नित प्रति जाइ ॥ ८

विप्र स्त्री हत्या करइ, गर्भ भरी पइ[8] जाइ ।
गिणै ण सगी सगोवरी[9], घोर नरक सो जाइ ।। ९

पाठांतर—

१ ख था । २ ख ग. प्रतियों मे आगे 'न' पाठ है । ३ ख निरधार । ४ ख नह । ५ ख ग सतोषो । ६ ख ग जीय । ७ ख ग प्रतियों मे आगे यह दूहा अधिक है—

'पोर प्रजा ना दुष दीयें, प्रज उपरि घले राज ।
पालण प्रज सै इह करि पोर विनासिण काज ॥'

८ ख ग पे । ९ ग सहोदरी ।

---

*पद्य सं १६ का ख भाग पूरा ।

वार्ता

इसा वचन रिपीसरा[1] रा साभलि राजा बोलीयो । अहो रिपजी ! आज पछइ हुं आहेडो पाप-कर्म नही करु । तरइ ऋपीश्वर बहुत सतोप पायो । पुसी होइ बोलीयो । राजा ! तू मागि । हु तोनु तूठो छु । मागै[2] सु देइसि ।

तरै राजा कहीयो । जो राजि मोसु कृपावत हूवा । मोनु तूठा । तउ थाहरी[3] बेटी परणावो ।

तरै रिपीश्वरे बेटी परणाई । तठा पछी तीजइ दिन रिपा सु विदा होइ घोडइ चाढि नै बीदणी नु ले हालीयो ।

विचइ[4] आवता रात पडी । अधारो हूवो तरै मारग सु टलि नै वड नीचै जाइ घोडो बाधीयो अरु आप बिछावणा करि सूतउ[5] ।

'तीयइ वेला[6]' राक्षस एक आयो । तीयइ दीठउ पुरुप तो पोरडउ दीसइ छइ अरु घोडा नु पाऊ नही । कन्या कोमल दीसै छइ[7] । इणनू पाईस ।

तरै[8] राजा नू कह्यो । थारी स्त्री नु पाईस । राजा कह्यो इसडी[9] मत करो । थानु चोजउ मुह मागो स देईस ।

तरइ राक्षस बोलीयउ । ब्राह्मण रो सात वरस रो पुत्र तिणरो माथो आपणै हाथि काटि मो आगइ[10] आणी द्यइ तउ थारी अस्त्री छोडू ।

तरै राजा कहीयो । आज थी चोथइ दिन म्हारै घरे आए । हु देइस । इसडो वचन रापस साभली आपणो ठोड[11] गयो ।

राजा घरै आयो । वधाई हूई । लोक पुसी हूवा । परण नई आयो । पछइ राजा मुहूर्त परधान नु कह्यो । एक ब्राह्मण रो पुत्र ७

पाठातर—

२ ख रिप, ग ऋषी । २ ख मागीस ग मागसी । ३ ख थारी, ग आपरी । ४ ख तरे । ५ ख सूतो, ग सूतो । ६ ख तिण समय, ग तिण समै । ७ ख छै । ८ ख तब । ९ ख ग इसी । १० ख भागल ग आगै । ११ ख गुफा ।

वरस रो जीयै[1] प्रकार उवइ[2] रा माता-पिता न रोवइ[3], दुष न करइ तीयै भात आण द्यो ।

पछइ मुहतइ परधान[4] लाक[ख][5] एक रो सोना रो पुरुष कराइ गाडी माहे मेलि नगर मे फेरीयौ । कहीयो किण ही ब्राह्मण रइ सात वरस रो पुत्र हुवै तो राजा नू द्यउ । राजा माथो काटि राक्षस नु देसी । अरु लाप रूपईया रो सोना रो पुरुष ल्यो नै बेटो द्यउ ।

तरइ एक ब्राह्मण रइ[6] तीन पुत्र छइ[7] । तीयइ ब्राह्मणी नु कह्यौ । आपणइ तीन बेटा छइ । एक बेटो द्या तउ लाष रूपईया रउ[8] सोनौ आवसी ।

तरइ[10] ब्राह्मणी बोली । नान्हीयै[11] नु तो हू न द्यू । तरइ ब्राह्मण कह्यौ । वडै नु हु न द्यू । तौ विचेट[12] नु देस्या अनै लाष रूपईया रो सोनो लेस्या ।

तरइ लोभी ब्राह्मण राजा पासि जाइ पुत्र दीन्हौ अरु लाप रो सोनो लीयो[13] । तीयै[14] दिन राक्षस आयौ ।

तीयै री महिमानी करि गध धूप दीप नेवेद्य फल तावूल पूजा करि राक्षस रइ मुह आगइ राजा हाथि खड्ग ले शिरच्छेद करतौ बालक हसीयौ ।[15]

पछै* राजा मारीयो अरु राक्षस पायौ ।

वैताल बोलियो राजा मरण समय सर्वथा रुदन चाहीजइ[16] । अनै बालक हसीयो किसै कारण ।

पाठांतर—

१ स जिण । २ स उण । ३ स रोवें, ग, रोवे । ४ स ग प्रधान । ५ स ग लाख । ६ स ग रे । ७ स ग रे । ८ स ग हुता । ९ स ग रो । १० स तब, ग तरे । ११. स मोहटे, ग नान्हो । १२ स विचले ग विचला । १३ स लीधो, ग लीधो । १४ स ग मे आगे 'मनमवार रे' पाठ है । १५ आगे स 'पछे रा', ग 'नै पछ रोया । पाठ है । १६ स चाहीजें, ग चाहीजे ।

*पत्र सं० २० का क भाग पूर्ण ।

तब[1] राजा कहै छै। वैताल सुणि। बालक नु बालक मारै तरै माता ऊपर करइ। [2]मोटे हूवै[2] मारै तो पिता ऊपर करै अनै मा-बाप रो वस न हुवै तो राजा ऊपर करै। राजा रौ वस न होइ तौ देव समरीयै। तरै बालक मन मै कह्यौ रोईजइ तो इण वास्तै कोई रोवतो देषि दया कर नइ छोडावै[3]। सु तौ म्हारै राषणहार हुता तिकै ईज सर्व मारणहार हूवा। तिणै करि किसु रोवु। जीव तो कोई छुडावइ नही। मा-बाप-राजा तीने ई लागू हूवा। तिण कर रोयो नही नइ हसीयो [4]अर दूहो कह्यौ—

[दूहो]

राषणहार मारणा हूवा, हसण नु लोक।
देव आप लागू हूवो, तो केहो तहां सोक॥[4]

वार्ता

[5]एतो वचन[5] राजा मुष सेती साभलि नीसर गयो। वैताल सीस्यो[6] री डाल जाइ विलगीयौ। राजा फिर जाइ मडो ऊतारि काधइ ले आवतउ हूवो।

इति वताल पचीसी री १६ मी[7] [8]कथा कही॥ १६[8]

पाठा तर

१ ग तरै। २ ख वडे हूया। ३ ख छडावें, ग छुडावे। ४ यह अश ख ग प्रतियों मे नहीं है। ५ ख इतरी वात। ६ ख ग सीसम। ७ ख ग उग-णीसमी। ८ ख १६॥, ग कथा सपूर्णम्।

वैताल-पचीसी री वीसमी कथा

[1]वैताल कहइ छइ[1]। राजा साभलि। विसालपुर नगर। विमलसिंघ राजा। तीयइ रइ आर्यदत्त वाणीयउ। विणरइ अनगमजरी वेटी साचालक[2] नगर रइ वासी नु मणिनाभ नु परणाई हुती। सु पीहर रहती। नवयोवना हूई। [3]तिसडी एक दिन[3] मेह वरस रह्यो हूतो अरु तलाव भरीया साभलिया पाणी रइ तमासइ देषण नु आई। साथै सपी लीधी छइ। तलाव जोवइ छइ।

तठै तलाव [4]जोवण नु[4] गुणाकर नामा ब्राह्मण पिण आयौ। [5]ऊवइ रो[5] रूप-योवन देपि अनगमजरी कामातुर हुई। सषी नु पूछीयो। अउ[6] पुरुप कुण छइ। इणसु म्हारो मन [7]लागो छइ[7]। तू ईयइ रो नाम ठाम पूछ षवर ल्यै[8]।

गुणाकर अनगमजरी रो रूप-योवन देपि मोहित हुइ मित्र नू कह्यौ। ईयइ रो नाम-ठाम पूछि मोनु आइ कहि। वीच गुणाकर रो मित्र अरु अनगमजरी री सपी आइ मिलीया। इयै ऊवइ नू पूछीयो। ऊवै ईयइ नु पूछीयो।

ईयइ कह्यौ। आर्यदत्त री वेटी। अनगमजरी नाम[9]। चौबारै रहै छइ। अरु गुणाकर नु वहुत चाहै छइ। उवै[10] कहीयो। गुणाकर ब्राह्मण परदेसी छइ। माली रइ घर डेरो छै। अनगमजरी नु घणु चाहइ छई।

ताहरा गुणाकर रै मित्र गुणाकर नु आइ कह्यौ। अनगमजरी री सपी अनगमजरी नु आइ कह्यौ। तव जाणीयै सेती दूणो विरह हूवौ। विण[11] मिलीया [12]जीव सुप न[12] पावै।[12] सपी धीरज दे रापै।

पाठातर—

१ ख ग मारग (ग मारग मैं) चालतां वैताल बोलीयो। २ ख छिका, ग छो। ३. ख एकै समै, ग एकदा समाजोग रै विषै। ४ ख रो तमासो देषण। ५ ख उण रो ग इण रो। ६ ख यो। ७ ख छै। ८ ख लि जै, ग कहु प्यै। ९. ख. नाम छै। १० ख उण, ग तरै इण। ११ ख विना। १२ ख प्रति मे नही।

---

*पत्र सं २० का ख भाग पूर्ण।

अनगमजरी गोपि बैठी रहे। गुणाकर ऊत्रै गलो सात वार आवै। 'देपीया विण जीव रहै नही'।

[1]दूहा

नयणे नीद न जीव सुप, जवह न देपु तुझ।
न जाणु ते क्या कीया, प्रेम पीयारा मुझ[2] ॥ १

वार्ता

वेउ विरह कर पीण हुइवा लागा। सपी घणो ही यइ[3] पिण मिलणउ हूवइ नही। अरु मोटा रउ मेलणउ कठिन।

दूहा [दूहो]

नैन मिलै वचनइ[4] मिलै, [5]भेट दीयइ लीयइ[5] नित्य।
अग स्पर्श विना मरइ[6], [7]क्षीण होइ यह सत्य[7] ॥ १

[वार्त्ता]

अनगमजरी विण मिल्यै मरण लागी। सु गुणाकर अरु सपी विना कोन जाणइ। अनगमजरी दुर्बल क्षीण हुई। तरइ वैद्य नइ तेड नइ [8]ऊपद कराया[8]। पिण रोग री व्यथा न जाणै। गुण कोई नही।

तरइ मणिनाभ नइ माणस मेल्हि नइ तेडायउ[9]। कह्यो थांहरा माणस दुपी छै। तरइ मणिनाभ तुरत आयो। अनगमजरी जीवती आयो।

पाठान्तर—

१ ख विना दीठा जक्क नावै, ग पिए बिगर दीठै जक न पडै। २ ख ग में यहा दूहा नही है। ३ ख प्रति मे आगे यह पाठ है—'तिण दुप करि साहजादा कुतुबदीन री अवस्था हुई। कुतबदीन रै तो ढाढीणी री साहस करि सावधान हुई। ईयां रे इसो कोई नही जिण करी बचाव होवै।'

४ ख वचना, ग वचन। ५ ख मीटे न दीयै नित्य। ६ ख मिलें, ग मरै। ७ ख ख पिण होय इह सित, ग चित्त सु लागो चित्त। ८ ख उपाव घणा ही कीया। ९ ख तेडायो, ग बुलायो।

मुप दीठो तरइ निश्चइ कीयउ । जो स्त्री 'जीवइ तो जीवु' । नही तो ईयइ रो साथ न छोडु । अर पाछइ पिण मरणो छइ । इसडो साथ न छोडु । (अर पाछइ पिण मरणो छइ । इसडो साथ किउ छोडीजइ) इमडै[1] विचार करता अनगमजरी मुई[3] ।

पछइ अग्निदाघ कीयो । तरइ ऊवइरो रूप यादि करि बलती चिह माहि पडि मणिनाभ मूवउ । पछइ गुणाकर अनगमजरी मुइ सुणि प्राणत्याग कीयउ ।

वइताल[4] बोलीयो । राजा ! तीना माहि कामार्त्त[5] कुण कहीजइ । राजा कह्यो । स्त्री कामार्त्त[6] जिका कामपीडित मुई । बीजा कामी उवै रइ दुप करि मूवा । अनगमजरी जीवती तउ[7] [8]बेऊ जीवत[8] । कोई मरतउ नही ।

एता[9] वचन राजा रा साभलि गयो वैताल सीसम री डाल जाइ लागउ[10] । मडै[11] नु ऊनारि काधइ ले आवतउ हूवो ।

इती श्री वैताल पचीसी री बीसमी कथा[12]कही ॥२०॥[12]

पाठातर—

१ ख जीव्या जीवू । २ ख इसो, ग इम । ३ ख रो जीव मोसरघो । ४ ख ग वेताल । ५ ख ग कामातुर । ६ ख ग कामातुर । ७ ख तो । ८ ख दोनु मरत नही । ९ स इसा । १० ख विलगो । ११ ख राजा फिर जाई वेताल । १२ ग सम्पूर्णम् ।

वैताल पचीसी री अकवीसमी कथा

'फिर मडै नु ले आवता'[1] वैताल कहै छै। राजा साभलि[2]।

पवनस्थान नगर। तीयै[3] रो धणी वीरवल राजा। तीयै रइ विष्णुस्वामि ब्राह्मण। तीयै रइ च्यारि पुत्र। एक द्यूतकारी। बीजो वेश्यारत। तीजो सुरापान। चोथो परस्त्रीरत। तीया[4] नु विष्णुस्वामि सीप द्यै छै।

जुवारी नु कहै छै[5]।

दूहा

अति अनर्थ जुवौ करइ शील धर्म न रहाइ।
जइसइ मानवलोक को, विप पीयै जीव जाइ॥ १
जुवारो लिपमी तजै, ज्यु वैश्या धन हीन।
कूड कपट कर्कस चवै हास्यो दीसै दीन॥ २
जूवै दोष घणा कह्या, वेचै अोय घर वार।
उत्तम होइ न पेल ही, अधम एह आचार॥ ३

अथ वेश्यारत नु सीप दीयै छइ[6]—

[दूहा]

साच सोल सयम नियम, सुचि सोभाग गरव्व।
नर पैसै वेस्या सद*न, वाहिर रहइ सरव्व॥ १
मात पिता वधव सुतन, वैर वहिन अन्न धन्न।
तिण नु ए वल्लभ नही, जिहि वाल्हो वेस्या तन्न॥ २
न सुहावइ तीयनू वडा, सुणै न हित के बोल।
जो वेस्या सु प्यालो पीयै, तिणरो केहो तोल॥ ३

पाठातर—

१ ख मारग चालता, ग राजा मडो ले चालीयो तरै। २ ख साभलो, ग सुण ३ ख तिण ग तठै। ४ ख तिका। ५ ख प्रति मे आगे के "वेस्यारत नुं" सीप सम्बन्धी दोहे यहा है। ६ ख प्रति मे आगे के 'सुरापानी'-सम्बधी दोहे यहाँ हैं। तदुपरात 'जुवारी' सम्बधी दोहे हैं।

*पत्र सख्या २१ का क भाग पूर्ण।

सुरापानो नू सीप थइ छै—

दूहा

सुरापांन जो जो करै, सो सब भक्ष करेइ ।
दुष पावइ गहिलो हुवइ, पिण फिर पात्र भरेइ ॥ १
काम काज हूती रहइ, करइ अगमिय गोण ।
ज्ञान नष्ट हुइ जाइ सो, नरक पातियो होण ॥ २
जूवइ षेलि दारू पीयै, फिर वेस्या घरि जाइ ।
भी परदारा सू रमइ च्यारे विनासइ आइ ॥ ३

पर स्त्रीरत[1] नू सीप थइ छइ—

जीवा मारै पर स्त्रीया, पाडे नरकि अघोर ।
गमइ वडाई जन हसइ, दुष पावइ घरि अउर ॥ १
[2]बिलीषाइ सुत आपणउ, सा किम छोडे मास ।
मारै अपणइ षसम कु, तो नारी कौंण वेसास ॥ २[2]
परत्रीत इ गहि बधीयइ, अरु धन जातो जोइ ।
ठोड-ठोड सकत रहइ, कलह मृत्यु पिण होइ ॥ ३
अप्रिय मैथुन सोचियै, अरु बिड केरो साथ ।
वुरइ कहत मन सोचियै, सोचिय रहत अनाथ ॥ ४
बालापण पढीया नही, योवन व्यर्थ गमाइ ।
वृद्ध भयइ कछु होइ नहि, मन पछतावो थाइ ॥ ५

वार्त्ता

ताहरा विष्णुसामि रा च्यार बेटा छा । एरा[3] वचन अवधारि विद्या पढण नु वणारसी गया ।

तेथ[4] [5]केतै एक[5] कालि[6] विद्या पढि आवता विचारीयउ[7] जो वा विद्या फुरइ कि नही । इसो जाणि जगल माहे एक करक[8] पडीयो

पाठान्तर—

१ ख स्त्रीम राते । २ ख प्रति में यह दोहा नहीं है । ३ ख ग पिता रा । ४ ख तठै । ५ ख कितरैक, ग कीतरा एक । ६ ख बरसे, ग बरस । ७ ख ग बीचारयो । ८ ख हाड, ग लकड ।

दीठउ सीह रो। तिण नु प्रथम विद्या कर हाड जोडिया। बीजै विद्या रइ वलि मास-पड कियो। तीजै रोम सहित तुचा कीधी। ताहरा वोलोयो। ईयई नु जीवाडीयइ मारसी कुण।

तरै चोथऊ वोलीयो। न जीवाडू तो म्हारी विद्या री पवरि क्यु पडइ। तरै विद्या करि सघ जीवाडीयो।

ताहरा[1] सिंघ भूपो ऊठियो। मुह आगै ऊभो तो तिण नु मारियो। बीजा नाठा। तरै[2] सिंघ सगला मिरग भेला करि पाण लागो।

वेताल पूछीयो। महाराज इया पढीया माहि महा मूरख कुण।

राजा कहीयउ। पहिली पूछै तिको मुरख जो इतरो ही न जाणइ। पाछइ पढीया तो च्यारै मूरप। पीण जीयै सिंघ नु जीवाडीयो सो महा मूरप।

दूहा [दूहो]

[3]बुद्धि वडी विद्या हुतइ, घूतावे विण वुद्धि।
बुद्धि विहोना पडितां, पाधा सिहइ क्रुद्धि॥ १[3]

वार्त्ता

एती[4] राजा रा मुप थी साभलि मडो डाल जाइ विलगउ। राजा जाइ मडै नु ले आवतउ हूवउ।

इति श्री वैताल* पचीसी री ईकवीसमी[5] क्था। २१[6]

पाठान्तर—

१ ख तब ग तरै। २ ख ग तब। ३ यह दूहा ग प्रति मे नहीं है। ४ इसा। ५ ख २१ मी। ६ ग सम्पूरणम्।

*अत्र स २१ का ख भाग पूर्ण।

बैताल-पच्चीसी री बाईसमी कथा

मारग चालता वइताल[1] बोलीयो। विश्वपुर नगर। विदग्धमणि राजा। नारायण[2] नामा ब्राह्मण रहइ सो वृद्ध हुवो। सरीर जीर्ण हुवो अरु मन ऊसडो होज छइ। तो जीयइ[3] प्रकार शरीर नव तन होइ सो ऊपाव कीजइ[4]।

अथ[5] नवी काया मइ प्रवेस करण री विद्या सीषीजइ तो मनोरथ पूरण होइ। [6]*जीवीजइ ता लग*[6] *भोग भोगवीजइ। (अथ नवी* काया मइ प्रवेस करण री विद्या सीपीजइ तो मनोरथ पूरण होइ। जीवीजइ ता लग भोग भोगवीजइ।

[7]इसउ विचार एकमदा पुरष जोगी पासि गयो। जोगी री सेवा कर पुछीयो। विद्या छइ[8] पिण ?

विद्या पढि[9] वुराई करइ तीयइ नु सीपाईजइ नही।

उवै[10] कहीयो मौनू विद्या सीपावउ[11]। हू भलाई करीस। तब विद्या सीपावण लागउ अरु दूहा पिण कहण लागउ—

दूहा

अगि वली मस्ति कियलो, दसनहीन मुष फार।
तउ पिण आसा पापणी, लागी ही रहइ लार ॥१
उठै गोडा हाथ दे, मुप न पिछाण्यो जाइ।
काने पिण उचो सुणे, दड विना न चलाइ ॥२
आसा तोई न छांडिहइ, जीव न कोध न कोह।
मन मइ नांणइ मरण की, आंणइ गरब सहोह ॥३

पाठान्तर—

१ ख ग वेताल। २ ख नाराइण। ३ ख जिण ग जिण ही। ४ ख ग कीजैं। ५ ख अथवा। ६ ख जीव रहैंसा लग। ७ ख एहो, ग इम। ८ ख छै। ९ खीप, ग पढ मैं। १० ख ग उण। ११ ख सिपावो, ग षीखावो।

दिवस जाइ रजनी पडै, राती जाइ दिन होइ।
मासि मासि फिर चद्रमा, नवो पुराणो जोइ ॥४
बालक तइ तरुणो हुवै, तरुणो वूढो होइ।
वूढो फिर बालक हुवो, यहइ रीति मृत लोइ ॥५
कुण हू कुण तू लोक कुण, काहे को करइ सोक।
जो दीसइ सो विणसही, भोले भोलो लोक ॥६
सन्यासी तपीयो जती, विप्रा सिद्ध महत।
नास्तीक पण्डि पडिता, काल प्रमांणे जात ॥७[1]
[2]आयो इक जाइ एकलो, साथ पुय अरु पाप।
कीयो कृत साथे चले, भुगते आपो आप ॥८[2]

वार्त्ता

इनरी सीष दे अर पछै विद्या परकाया प्रवेस री सीषाई। नारायण विद्या सीषी। एक तरुण पुरुष री काया माही प्रवेस कीयो। आपरी काया छोडी तरै रोवण[3] लागो। पछै वले हसीयो।

तरै वेताल कहै किसो कारण। राजा कहै। ब्राह्मण री शरीर सु मोह घणो[4] हुतो। बालकपणै साथि रह्यो। योवन समइ[5] साथि। अनै देहीरै रा लाड घणा किया। चोवा चदन लगाया हुता। [6]तिणै कारण[6] छोडता वियोग सेती रोयउ[7] अरू नव तन काया पाई। परकीया[8] प्रवेस री विद्या हाथ आई। [9]तिणै हर्ष[9] हसीयो।

एतो[10] राजा रै मुष से ती वचन सुणि वैताल ऊडि सीसम री डाल जाइ लागउ[11]। तरै राजा फिर जाइ मडै नु ले आवतउ हूवो।

ईति श्री वेताल पचीसी री बावीसमी कथा। २२[12]

पाठान्तर—

१ ख ग में आगे यह पाठ है—
ग्यान एक पाषड बहु, पाषडां माहि ग्यान।
निश्चै करि कुण पाइयै, रूप रग अहिनाण ॥६
सुपनो सो ससार है, मन हि विचारो आप।
याद करो तुम प्रात उठि, पूछो विवरो बाप ॥६

२ ग प्रति मे यह दूहा नही है। ३ ख रोवा। ४ ख अत्यत। ५ ख समे। ६ ख तिण वास्तै। ७ ख आसू पडीया ग रूनो। ८ ख परकाया। ९ तीण वास्तै, ग तिण सु। १० ख इतरी वात, ग इतरो। ११ ख विलगो, ग विलग्यो। १२ ग सम्पूणम्।

वैताल पचीसी री तेवीसमी कथा

फिर[1] मडै नु ले आवता वैताल [2]कहइ छइ[3]। राजा साभलो।[*]

धर्मपुर[*] नगर। तेथ धर्मज्ञ[4] राजा। तिण रै गोविन्द नामा ब्राह्मण। च्यार बेटा हरिदत्त [5]सोमेश्वर ब्रह्मदेव जगिदेव। सगला सास्त्र वेद रा पाठी। तीया माहे वडो बेटो हरिदत्त[6] (सोमश्वर ब्रह्मदेव जगिदेव सगला सास्त्र वेद रा पाठी) काल करि मुवो। तीयै रो गोविन्द दुष करिवा लागो। तरइ राजा रो प्रोहित विष्णु सर्मा आइ गोविन्द नु प्रबोधई छइ—

दू०[हा]॥

दुषी जननि के गभ मइ, विकल बालपणि होइ।
तरुणी त्रीय वियोग दुष, वृद्ध हुवो सब षोइ॥१
गर्भ अक सज्या धर्या, मारग वृक्ष पहार।
घरि बाहिर आकास जलि, काल न छोडइ लार॥२
पडित मूरष अर धनो, निबल सबल धनहीन।
राजा प्रजा सुषी दुषी, जती गृहस्थ कुलीन॥३
सूता बइठा चालता, ऊभा ही मर जाइ।
काल सबनी कु सधरइ, धोपा करइ बलाइ॥४[7]

पाठांतर—

१ ग फेर। २ स कहै, ग कह्यो। ३ ग सुए। ४ ख धर्मज्ञान, ग धरम-धूज। ५ ग मनोहरदत्त। ६ ग मनोहरदत्त। ७ ख प्रति मे आगे यह दूहा है—

"अवुणो सो बरस को, अधि निस ले जाई।
आधा हू आधो वन्ने, बालक वृद्ध विलाई॥'

आगे ख और ग प्रतियो मे यह दूहा है—

"र [ग स] हिवो व्याधि वियोग दुष, सो कछु धाकरी प्रीति।
तामै जीव उतावलो, जसतरग की रीत॥"

---

*पत्र ख २२ का क भाग पूण

तो प्राणी कु सुष किसो, दुष भाडइ ससार ।
करो भलाइ हरि भजो, छाडो सोच ससार ॥५
विभो सक्ल घर ही रहइ, वधूजन समसानि ।
काठ अग्नि शरीर लग, पाप पुन्य जीव थानि ॥६
माता पिता न बधवा, युवती सगा न मित्त ।
जम आगलि कोई नावई, गहरचो जोवइ चित्त ॥७
अब ही हसतो गावतो, क्रीडा करतऊ आहि ।
सो अब ही मुयो काल फरि, मन तन लपोयो ताहि ॥८
ना उपध ना दान कछु, नां ग्रह-पूजा काइ ।
काल लीयइ छूटवे न को, सुत जीप बधव धाइ ॥९

वार्ता

इसा ग्यान रा वाक्य साभलि[1] गोविन्द बहुडि यज्ञ[2] करण री ताई सावधान हूवौ। सोग भागउ। विष्णु सर्मा विदा होई घरि गयो।

गोविन्द वेटा नु कह्यउ। एक मच्छ जुग्म कु लै आव। तरै सोमेसर कह्यौ। हू भोजन-चतुर छू। म्हारइ हाथ दुर्गंध आवसी। ब्रह्मदेव नु कह्यौ। तू मछरी विदार ने भाजी कर।

तरै ब्रह्मदेव वोलीयउ। हु नारीचतुर छु। नारी ने दुर्गंध आवसी। मन वेपातर हुसी। जगदेव तू लइ।

जगदेव वोलीयउ। हू सज्या[3] चतुर छू। [4]इयइ री[4] दुर्गंध सेती नीद पडइ नही। हाथ गधावसी।

ईया तीना रो वाद सांभलि[5] राजा तेडिया[6] अरु पूछियौ। कोसूं[7] वाद थाहरइ छइ। उवइ[8] तीने वोलीया। एकण कह्यो हू भोजनचतुर छु। बीजइ[9] कह्यौ हू नारी-चतुर छु। तीजइ कह्यउ हू सज्याचतुर छु।

पाठान्तर–

१ ख साभल। २ ख जगन, ग जग्य। ३ ख सिझ्या, ग सिज्या। ४ ख ग इणरी। ५ ख देषि, ग सांभल। ६ ख ग वेडाया। ७ ख कासू, ग कासु। ८ ख उवै। ९ ख ग बीजे।

राजा कहियो। देषा थांहरी चतुराई। प्रभातइ[1] तीनें ही निहतरीया। भगति करि भली-भात जीमाडीया। अनेक भात रा जीमण किया। घणी चतुराई सु रसोई कीधी। पछै भोजन जीम नइ ऊठीया। [2]तबोल सोपारी मुछण दीया।[2] पछै* सज्या बिछाइ सूता। नीद कर जाग नइ आषि छाटि राजा कन्हइ आया।

राजा पूछ्यउ। भोजन किसडा हूवा हूता। मन सुहावती मति कहो। साच कहिज्यौ।

तरइ बीजैं कह्यौ। भोजन बहूत [3]सषरा हूवा[3]। तरइ[4] भोजन-चतुर बोलीयो। बीजु तो भोजन भला हुआ पिण चावल माहि मसाण री गध[5] हूती।

तरइ राजा मोदी नु बुलाइ पूछीयउ। थारइ चावल कठा आया हुता।

तरइ कहियौ। सिवपुरी हूती आया। तरै शिवपुरी रा हाली बुलाया। चावल कठइ नीपजइ छइ।

तरै हाली एक कह्यौ। मसाण भूमि मांहि साल सषरी[6] [7]नीपजई छइ।[7] तीयै षेत री सुथरी साली हुँती। तरइ राजा कह्यौ। सही भोजन चतुर।

पछैं तीना नू मालीयइ सुवाणीया। पलिंग बिछाइ उपर सेर १० रुईं रा पथरणा बिछाइ तीयै ऊपरि सुथरी बिछाइ ऊपरा षासै रा पछैवडा ढालि सुवाणीया।

[8]प्रभातै राजा[8] पूछीयो। बीजा तो नीद ले जागीया। सोहरा

पाठान्तर—

१ ख ग प्रात समे। २ ख ग में यह पाठ नहीं है। ३ ख सुघरीया। ४ ख तव, ग तरै। ५ ख सोरम। ६ ख मसो। ७ ख नीपजे छै, ग नीपजी छे। ८ ख पछे।

---

*प्रत ख २२ वां ख भाग पूण।

सूता। गाढी सुप-निद्रा कीधी। सिज्या रा वपाण किया। ति वारै सज्याचतुर बोलीयो। सेज घणु[1] सपरी हुती। मालियै सपरो हुतो। पिण पथरणा माहे [2]एक वाल छइ[2] तिको पसवाडै चुभीयो। तिण नींद नाई।

तरै राजा कहीयो। हालो। जोवा। तरै पथरणै माहै जोवै तो [3]माथै रो[3] केस निकलीयो।

राजा पुसी होइ कह्यो। आही[4] सज्या चतुर।

पछै उवइ ही मालीयइ पाछा सुवाणीया। [5]अर नवयोवना विभचारणी[5] बुलाइ राजा कह्यो। थे इया नु वहुत सुप देज्यो। प्रभात [6]हू ईयानइ पूछीस।[6]

ऊवे तीनै मालीयइ जाइ सुप करि सूता। प्रभाते तेड नइ पूछियो। बीजा तो सुप री वात कही। नारीचतुर बोलियो। महाराज बीजौ तो बहुत सुप पायो। पिण नायका रइ[7] मुपि[8] छाली री वास आवइ तीयइ दुर्गंध साम्हो हूवउ न गयो। [9]एक ईस पकडि सुइ रह्यउ।[9]

ताहरा राजा कुटणी तेड पूछी। आ नायका कुण छै। तरइ[10] कुटणी कह्यौ। प्रभावती री दोहीतरी[11] छइ। [12]ईयइ री[12] माई यइ नू जिण नइ तुरत मर गई। तरै घरे छाली हुती तीयइ रो दूध पाइ नइ मोटी कीधी।

राजा कह्यौ। सावासि ईयइ नू। सही अउ नारी चतुर।

वइताल[13] बोलियो। महाराजा वीर विक्रमादीत उवइ[14] राजा तो

पाठा तर—

१ ख घणो ही। २ ख माथै रो केस हूतौं, ग सूसा रो केस छै। ३ ग माही सु। ४, ख सही, ग ओ पिण सहि। ५ ग एक नायका वरस १५ री। ६ तेड पूछिया, ग हूआं इण नु पूछ लेस्या। ७ ख रा, ग रै। ८ ख मुप सेती, ग मुहडै। ९ ग प्रति मे यह पाठ नही है। १० ख तब, ग तिवारै। ११ ख दोईत्री। १२ ख ग इणारी। १३ ख ग बेताल। १४ ख ग उण।

तीने सराह्या। पिण महाराजा ! कहइ तीना ही माही महाचतुर कुण[1] ।

राजा कह्यौ। सिय्याचतुर अधिक। एथि[2] धूर्त्ताई चालइ नही। बीजा [3]धूर्त होइ तउ[3] पूछ साभलि कहइ[4]। पिण केस री वात कुणै नू पूछै।

इसा वचन राजा रा मुण थी साभलि मडो[5] सीसम री डाल जाइ* लागो[6]। राजा ऊतारि काधइ ले आवतउ हूवउ।

इति श्रीवइताल पचीसी री तेवीसमी कथा [7]कही। २३[7]

पाठातर-

१ ख कौण ग कुण। २ ख अठै। ३ ख ग, कपट करे तो। ४ ख कहै। ५ ख बेताल। ६ ख विलगो, ग विलगो। ७ ग सम्पूरणम।

---

*पत्र स २१ का क भाग पूण।

वैताल-पचीसी री चोवीसमी कथा

वइताल[1] कहइ छई। राजा साभलि[2]। यज्ञस्थान नगर छइ। तेथ[3] यज्ञसर्मा ब्राह्मण रहइ। तीयै रइ सोमदत्त ब्राह्मण। तीयइ रइ गुणवत पुत्र हूवउ। रूपवत विद्यावत भाग्यवान अति चतुर पिण आयु नही[4]।

ऊवइ[5] नू ब्राह्मण री बेटी अज्ञातयोवना परणाइ। तीयइ[6] नू परणि प्रथम मिलाप रो समउ हूतउ। तेथ[7] [8]काल रइ प्रेरीयइ[8] सर्प्प आइ डसीयउ। गुणवत मूअउ।

गारडू तेडि घणाई जत्तन कीया पिण जीवियो नही। ताहरा ऊवइ रा मा-बाप [9]सोकातुर हूवो [वा][9]। कुटब रोइवा लागो। उवइ री स्त्री भोली सी हूती। तीयै[10] कह्यो। भर्त्तार साथि सती हूइसि। रहू नही।

तरै[11] राजा नू पूछि सती नू[12] भर्त्तार[13] सहित मसाण भूम ले गया। तेथ[14] एक योगी परकीया[15] प्रवेश री विद्या जाण थकउ मसाण माहि रहतो। सु सती रो रूप देषि नवयोवना जाणि विद्या चलावी।

जेते[16] मृतक रा बधन पोलि उघाडो कीयउ अर पासै सती आई। इतरइ जोगी [रो] पिंड पडीयउ[17] अर गुणवत रा मा-बाप-भाई-बध पुसी हूवा। पिण जोगी रउ पिंड पडीयउ देषि मन माहि

पाठान्तर–

१ ख. ग वेताल। २ ख सामली, ग सुण। ३ ख ग तठै। ४ ख ग. हीन। ५ ख उण। ६ ख तिण। ७ ख तठ। ८ ख काल रे प्रेरीयें, ग भाग्य जोग। ९ ख सोकाधीया होई रोवण लागा, ग शोक करण लागा। १० ख तिण, ग तण। ११ ख तब। १२ ख नइ। १३ ख भरतार। १४ ख ग तठे। १५ ख ग परकाया। १६ ख तिण समय, ग पछै। १७ पडीयो, ग पडीयो।

सगला जाणियो जोगी रउ[1] जीव गुणवत माहि आयौ। सती पिण जाणियो जोगी रउ[2] जीव छइ[3] गुणवत माहि आयौ।

वइताल[4] बोलीयउ। महाराजा! सती होइ कि[5] न होइ। राजा बोलीयउ। सुणि भाई। विचार री वात छई[6]। शरीर विना सरीर नु वालइ को नही। सती रो शरीर भत्तार [र]इ पिंड लारा छइ। पिंड पडीया वलइ। जीवतइ रो जीव गइल जातौ किही[7] रो जोर नही। न्याव इसडो[8] सउ छइ।

इसी[9] वात राजा रा मुष री साभली वइताल[10] गयो। राजा बाहूडि जाइ मडो[11] ऊतारि ले आवतउ हूवउ।

इति श्रीवइताल पचीसी चोवीसमी कथा।२४[11]

पाठान्तर–

१, ख ग रो। २ ख रो, ग रो। ३ ख ग छै। ४ ख ग वेताल। ५ ग क। ६ ख ग छै। ७ ख किण ही ग किण। ८ ख इसो। ९ ख इसरी। १० ख ग वताल। ११ ख वेताल। ११ सम्पूर्णम्।

वैताल पचीसी री पचीसमी कथा

पइडइ मइ वइताल वोलीयो । महाराजा म्हारी वात साभलो[1] ।

दक्षण देस देवगाम एक ठाकुर रहइ ।[2] [3]तीयै रइ[3] [4]दिसा दिसी[4] वइर[5] रजपूतां सु । एक समइ [6]छान सइ[6] रजपूता भेला हुइ गाम मारीयो । अग्नि लगाई ।

ताहरा ठाकुर रइ अउसाण[7] क्यु न आयौ । रजपूत पिण गाम रा नीसर गया । ठाकुर रइ वैटो कोई न हुतो । ठाकुर रइ वइर[8] वेटी एकणि सेरी नीसरी गया । अरु दुसमणा कहीयो । कठइ[10] रे ठाकुर ? ठाकुर न लाधउ[11] ।

ताहरा गाम वालि लूट ले परहा गया । ठाकुर जाइ भीला मा[12] पडीयो । भील मागई[13] । ठाकु*र पासि क्यु ही नही । भील छोडइ[14] नही ।

ताहरइ[15] ठाकुर वैर वेटी नू कह्यो । थे तो गाव पहूचो । हू ईया नै जबाव दे आऊ । उवै दून् गाव नु पहूतो[16] । वासइ ठाकुर भीले मारीयो ।

ठकुराणी अरु ठाकुर री वेटी [17]देही रइ[17] भार हाल न सकइ ।

पाठान्तर–

१ ग सुण । २ ख ग रहै । ३ ख ग तिण रे । ४ ख देसा देस, ग दसो दस । ५ ख ग वैर । ६ ख ग छानै से । ७ ख अवसाण । ८ ख ग रे । ९ ख ग वेर । १० ख ग कठे । ११ ख ग पायो । १२ ख माहि ग माहैं । १३ मागण लागा, ग मागै । १४- ख ग छोडै । १५ ख तब, ग तरै । १६ ख पोहती, ग चालो । १७ ख नितबा रे ।

---

*पत्र सख्या २३ का ख भाग पूण ।

इतरइ[1] चडसघ रजपुत बेटइ[2] नु साथ ले सिकार करण नू [3]जाइ हंतउ[3] श्रर दोइ पोज ताता दुइ[4] बाइरा रा दीठा। देष बेटइ नू कह्यौ। दोनू माहे तू किसी लेईस।

बेटइ कह्यौ। नान्हइ[5] पग वाली हू लेईस[6]। इसडो[7] बोल कीयउ। पछइ[8] दोउ पहुता। जाइ घेरी दीठी।

देषइ[9] तो जीयरा पग वडा सु बेटी। महा कोमल रूप नान्हा पग वाली ऊवै रो माता। ताहरा बोल प्रमाण करि कुमारी चडसिंह राषी। ठकुराणी चडसघ रइ बेटइ नु श्राई।

दूहा

देव चुकावै देव द्यै,[10] देव सिलावै सषि।
दैवहि सारे रेहोया, घोषा न[11] करि निबघ॥१

वार्त्ता

तठा पछइ किते एक कालि दुहु रइ बेटा-बेटी हुवा। वैताल कह्यौ[12]। महाराजा दुहु[13] रा बेटा-बेटी माहोमाहि कासू हुइ। श्रण विचारीयो मत[14] कहो।

राजा कासू कहे। सगाई घणा प्रकार री। राजा सोच माहि पडीयो। क्षातिसील[15] जोगी नइडो[16] श्रायो। राजा जाब द्यइ नही। मडो जाइ[17] सके नही।

पाठान्तर—

१ ख इण समय, ग इतरे। २ ख ग बेटा। ३ ख गयो हुतो। ४ ख दोइ। ५ ख नान्हे, ग नाना। ६ ग लेस्यु। ७ ख इसो, ग इम। ८ ख ग पाछे। ९ ख ग देपे। १० ख दे, ग दे। ११ ग म। १२ ख पूछीयो, ग बोल्यो। १३ ख ग दोनु। १४ ख मति। १५ ख पतधोल, ग क्षांतसील। १६ ख मडो, ग मडो। १७ ख नीसर।

ताहरा[1] वइताल[2] कह्यउ । राजा थारइ[3] मत साहस करि पुस्याल हुवो कहु छु । क्षातिसील[4] जोगी बत्तीस लक्षणो छइ । जउ[5] तोनू कहइ[6] मडइ नू डडोत कासू कहावइ । किसी भात कीजइ[7] मइ कदे कीयउ[8] छइ नही । मोनू थे करि दिपाडउ[9] । पछइ हू करिसि । जाहरा जोगी डडोत करै ताहरा षड्ग करि जोगी रउ[10] सिर[11] काटि तेल माहि घालै । पहिली जोगो न मारीयो तउ[12] जोगी तोनु मारसी । था दूनु माहे मरसी जिको सोनो हुसी, मारणहारो [13]विद्याधरा रो राजा[13] हूसी ।

इसी[14] भात राजा नू समभाइ वैताल जुहारि करि मडा महाथो[15] नीसरि गयो । कह्यो राजा रो सर्वथा कल्याण हुवो ।

राजा मडै नू ले जोगी पासि आयो । राती घडी च्यार[16] रही । जोगी पुसी हूवो ।

दूहो

राजा देषि जोगी कहइ,[17] मडो उतारि धरेह ।
तो सम[18] हो या वली न को, अब डडोत करेह ॥

[वार्त्ता]

जेथ[19] ऊज्जल[20] चावला रो मडल छइ । मनुष्य रइ रक्त भरीयो कलस ववलित[21] तेल भरयउ कढाहउ[22] तेथ[23] मडउ आणि डडोत करउ[24] ।

पाठांतर

१ ख तब ग इण समै । २ ख ग वैताल । ३ ख थारै, ग थारा । ४ ख सतसील, ग सातसील । ५ ख जे, ग सो । ६ ख कह ग कहसी । ७ ख, ग, कीज । ८ ख कीया, ग कीधो । ९ ख दिषाला, ग देषालो । १० ख ग रो । ११ ख मस्तक, ग माथो । १२ ख ग तो । १३ ख विद्याधर की पदवी, ग विद्या धर पिए । १४ ग इण । १५ ग सु । १६ ख ४ पाहर । १७ ख ग कहै । १८ ख सौ, ग सु । १९ ख जठै, ग जठै । २० ख उजल, ग ऊजला । २१ ग. वकलतो । २२ ख कडाहो ग कडायो । २३ ख ग तठ । २४ ख ग. करो ।

ताहरा[1] राजा कह्यउ । मोनू डडोत करि जोवाड़उ[2] ज्यू हु करु । तरइ जोगी डडवत[3] करण लागउ[4] । राजा षड्ग ले जोगी रो मस्तक[5] काटीयो । कडाहइ माहै नाषीयो । स्वर्णपुरुष हुवउ* ।

वैताल आइ दर्शन दीयो । फूल वरसीया । अर यो स्वर्ण धरती माँहि गाडीयो । 'आदारी परि[6]' वधसी । जोगी रो विषाद मत करउ[7] ।

दूहा

करतां उपरि[8] जो करइ[9], '[10]तैरो व्हैसो'[10] भाग ।
निरापराध न वाहियै, काहू नर सिर षाग ॥१
कथा हुई मनभावथी, ऊपनी बीकानेर ।
चाहुंगा जन साभल्या[11] मिलि २ रुचि सु फेर ॥२
कौतुक '[12]कवर अनूपसिंघ,'[12] कथरइ[13] लिषी वणाइ ।
वात पचीस वैताल री, भाषा कहि बहु भाइ ॥२ [३]

[14]श्रीवेताल पचीसी री कथा सपूण । श्रीरस्तु । शुभ भवतु ॥ सवत १७७३ वर्षे काती ६ तियो शुक्रवासरे । श्री आगोलाई मध्ये प० पुण्यसोम लिपीकता चतुर्मासी स्थिता । श्री[14]

पाठान्तर

१ ख तब, ग तरै । २ ग देखालो । ३ ख दडौत, डडोत । ४ ख ग लागो । ५ ख ग माथो । ६ ख आदा सूटण समान । ७ ख ग करो । ८ ख उपर, ग ऊपर । ६ ख ग करै । १० ख ग तिणरो हुवैसो । ११ ख सांमलो । १२ ख कुवर अनोपधि, ग धर मति सिद्ध । १३ ख केरै, ग केरे । १४ ख "इति श्रीवताल पचीसी री पचीसमी कथा सपूण । शुभ भवतु कल्याण । स १८२२ वरषे जेठ सुदि १० दने श्री अमरकोट मध्ये परतर वेगड गच्छे वा० श्री ५ विनेचदजी पं० गागजी लिषोत ।"

ग "इसा पमाडा जीत राजा पोरसो नु ले घरे आयतो सारा ही रा मनोरथ पूरीया । मन्कामना सिद्ध हुइ । राजा विक्रमादित्य तीन लोक मे बदीतो हुवो सो सारा ही जाणै छै । सुमेर पवत राजा विक्रमादित्य गयो । बीजो कोई जाण पावे नही । घणां राजा घणा जद घणा दैत्य घणा राक्षस घणा देवता घणा मोटा मानवी नु विक्रमादित्य जितो । पर दुख काट्या घणे मन प्रसाद कीयो परनारी सहोदर । पर धन देस पाछो न आज । सो बरस रो राज पद भोग देव पदवी पाई ॥ इति श्रीवताल पचीसी री पचीसमो कथा सम्पूणम् ॥२५॥
शुभम् भवतु । कल्याणमस्तु ॥

---

*पत्र सं २४ का क भाग पूर्ण हुआ ।